को ललचाताहै परंतु अपनें रुपे के वास्ते मीठा तक़ाज़ा भी करताहै. मुन
शिभूदयाल के कारण उसको मदनमोहनके लेन देन में बहुत कुछ फायदा
उसके पचास हज़ार रुपे इससमय मदनमोहन की तरफ़ बाक़ी हैं और शहर
मोहन को बाबत तरह, तरह की चर्चा फ़ैलरही हैं बहुत लोग मदनमोहन
खर्च, दिवालिया बताते हैं और एकीकत में मदनमोहन का खर्च दिन पर दि
जाताहै इससे मिस्टर ब्राइट को अपनी रकम का खटका है इसी लिये उसे इन
का सौदा इससमय अटकायाहै और तीसरे पहर मास्टर शिभूदयाल को अपने
बुलाया है.

" रुपया! ऐसी जल्दी! " लाला ब्रजकिशोरनें मिस्टर ब्राइट को वहम में
के लिये आश्चर्य से इतनी बात कह कर मनमें कहा " हाय! इन कारीगरोंकी ...
चीज़ों के बदले हिंदुस्थानी अपनी दौलत वृथा खोये देतेहैं "

" सच है पहले आप अपना हिसाब तैयार करायं, उसको देख कर अंदाज से
भेजे जांयगे " मुन्शीचुन्नीलालनें बात बनाकर कहा.

" और बहुत जल्दी हो तो बिल कर के काम चला लीजिये. जब तक ...
घोड़े दौड़ते हैं रुपे की क्या कमी है? " ब्रजकिशोर बीच में बोल उठे.

" अच्छा! मैं हिसाब अभी उतरवाकर भेजताहूं मुझको इससमय रुपे की ज़
रूरतहै " मिस्टर ब्राइटनें कहा.

" आपनें साढ़े नो बजे मिस्टर रसल को मुलाक़ातके लिये बुलायाहै इस वास्ते
चलना चाहिये " मास्टर शिभूदयाल नें याद दिवाई.

" अच्छा मिस्टर ब्राइट! इन काचों की याद रखना और नया अस्बाब खुले
को ज़रूर बुला लेना " यह कह कर लाला मदनमोहन नें मिस्टर ब्राइट से
...ा और अपनें साथियों समेत जोड़ी को एक निहायत उम्दा वलायती
...होकर रवाने हुए.

... बग्गी कंपनी बाग़ में पहुंची तो सवेरे का सुहावना समय देखकर सब क
...ा. उससमयकी शीतल, मंद, सुगंधित हवा बहुत प्यारी लगतीथी वृक्षों प
...सी मीठे मीठे सुरोंसें चहचहा रहेथे! नहरके पानी की धीरी, धीरी ...
...हुत अच्छी मालूम होतीथी! पन्नेसी हरीघासकी भूमिपर मोती ...
...ी! और तरह, तरहकी फुलवाड़ी ...
दिखारही थी इस ...
थोली ...

प्रकरण २

अकालमैं अधिकमास

अमापति के दिनन मैं ख़र्च होत अविचार
घर आवतहे पाहुनो वणिज न लाभ लगार
वृन्द.

"हे अभी तो यहां के घन्टे मैं पोनें नो ही बजे है तो क्या मेरी घड़
आगे थी ?" मुन्शी चुन्नीलालनें मकान पर पहुंचते ही बड़े घन्टे की त
कहा. परन्तु ये उस्की चालाकी थी उसनें ब्रजकिशोर सै पीछा छुड़ानें के
घडी चाबी देनें के बहानें से आध घन्टे आगे कर दी थी !

"कदाचित् ये घन्टा आध घन्टे पीछे हो" मास्टर शिभूदयाल नें बात साध

"नहीं, नहीं ये घन्टा तोप सै मिला हुआ है" लाला मदनमोहन बोले.

"तो लाला ब्रजकिशोर साहब की लच्छेदार बातैं नाहक अधूरी रह गईं ?"
चुन्नीलाल नें कहा.

"लाला ब्रजकिशोर की बातैं क्या हैं चकाबू का जाल है वह चाहते हैं कि
उन्के चक्कर सै बाहर न निकलनें पाय" मास्टर शिभूदयाल नें कहा.

"मैं यों तो ये काच लेता या न लेता पर अब उन्की ज़िद सै अदबद कर लूंगा

"निस्सन्देह जब वे अपनी जिद नहीं छोड़ते तो अपको अपनी बात ...
क्या जरुर है ?" मूनशी चुन्नीलाल नें छीटा दिया.
हितोपदेश मैं कहा है "आज्ञालोपी सुतहु कों क्षमैं न नृपति विनीत ॥ को...
शेष नृप, चित्रमैं जो न गहे यहरीति"॥* पंडित पुरुषोत्तमदासनें मिल्तीमैं ...

"बहुत पढ़नें लिखनें सै भी आदमी की बुद्धि कुछ ऐसी निर्बल होजाती है ...
बड़े, बड़े फ़िलासफ़र छोटी, छोटी बातों मैं चक्कर खानें लगते हैं" मास्टर ...
कहनें लगे. "सर आईजिक न्यूटन कितनी ही बार खाना खाकर भूल जाते
...न का प्रसिद्ध विद्वान लेसिंग एक बार बहुत रात गए अपनें घर आया औ...
...डकाने लगा, नोकर नें गैर अदमी समझ कर भीतर सै कहाकि "मालिक
...हीं है कल आना" इस्पर लेसिंग सच मुच लौट चला !!! इटली का मारीनी
...ने एक दिन कविता बनानें मैं ऐसा मग्न हुआ कि अंगीठी से उस्का पैर जल
...भी उसै कुछ ख़बर न हुई !"

"लाला ब्रजकिशोर साहब का भी कुछ, कुछ ऐसा ही हाल है यह सीधी, ...
...को विचार ही विचार मैं खैंच तान कर ऐसी पेचीदा बनालेते हैं कि ...
...ना मुश्किल पडजाता है" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

---

*...आज्ञा भङ्गकरान् राजा नक्षमेतसुना नपि । विरोधः कोनु राज्ञश्राज्ञ भिन्न...

"मैंनें तो मिस्टर ब्राइट के रोबरू ही कह दिया था कि कोरी फ़िलासफ़ी की बातों से दुनियादारी का काम नहीं चलता" लाला मदनमोहन नें अपनी अक़्लमंदी ज़ाहर की.

इतनें मै मिस्टर रसल की गाडी कमरे के नीचे आ पहुंची और मिस्टर रसल खट, खट करते हुए कमरे मे दाखिल हुए लाला मदनमोहन नें मिस्टर रसल से शेकहेंड करके उन्हें कुर्सी पर बिठाया और मिज़ाज की ख़ैरोआफ़ियत पूछी.

मिस्टर रसल नील का एक हौसले मंद सौदागर है परंतु इस्के पास रुपया नहीं है यह नील के सिवाय रुई और सन वगैरे का भी कुछ, कुछ व्यापार कर लिया करता है इस्का लेन देन डेढ़, पौने दो बरस से एक दोस्तकी सिफ़ारश पर लाला मदनमोहन के यहां हुआ है पहले बरस मे इस्के माल पर लाला मदनमोहन का जितना रुपया लगा था माल की बिक्री से ब्याज समेत वसूल होगया. परन्तु दूसरे साल रुई की भरती की जिस्में सात आठ हज़ार रुपे टूटते रहे इस्का घाटा भरनें के लिये पहले से दुगनी नील बनवाई जिस्में एक तो परता कम बैठा दूसरे माल कलकत्ते पहुंचा उससमय भाव मंदा रह गया जिस्से नफ़े के बदले दस, बारह हजार इस्में टूटते रहे लाला मदनमोहन के लेन देन से पहले मिस्टर रसल का लेन देन रामप्रसाद बनारसीदास से था उन्के आठ हज़ार रुपे अबतक इस्की तरफ़ बाक़ी थे जब उन्की मयाद जाने लगी तो उन्होंनें नालिश करके साढेग्यारह हजार की डिक्री इसपर कराली अब उन्की इजराय डिक्री मे इस्का सब कारखाना नीलाम पर चढ़ रहा है और नीलाम की तारीख़ मैं केवल चार दिन बाक़ी हैं इस लिये यह बड़े घबराट में रुपे का बंदोबस्त करनें के लिये लाला मदनमोहन के पास आया है.

"मेरे मिज़ाज का तो इससमय कोसों पता नहीं लगता परन्तु उस्को ठिकाने लाना आपके हाथ है" मिस्टर रसल नें मदनमोहन के कुशलप्रश्न (मिज़ाजपुर्सी) पर कहा "जो आफ़त एकाएक इससमय मेरे सिर पर आपड़ी है उस्को आप अच्छी तरह जान्ते हैं. इस कठिन समय मे आपके सिवाय मेरा सहायक कोई नहीं है आप चाहें तो दम भर मे मेरा बेड़ा पार लगा सक्ते हैं नहीं तो मैं तो इस तूफ़ान मैं ग़ारत हो चुका."

"आप इतनें क्यों घबराते हैं ? ज़रा धीरज रखिये" मुनशी चुन्नीलाल नें पहले की मिलावट के अनुसार सहारा लगाकर कहा "लाला साहब के स्वभाव को आप अच्छी तरह जान्ते है जहां तक होसकेगा यह आप की सहायता में कभी कसर न करेंगे."

"पहले आप मुझे यह तो बताइये कि आप मुझसे किस तरह की सहायता चाहते हैं ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"मैं इससमय सिर्फ़ इतनी सहायता चाहता हूं कि आप रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुकादें मुझसे होसकेगा जहां तक मैं आपका सब क़र्ज़ा एक बरस.

के भीतर चुकादूंगा" मिस्टर रसल नें कहा "मुझको अपनी बरबादी का .. खयाल नहीं है जितनी आपके कर्ज की चिन्ता है. रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री मेरी जायदाद बिक गई तो और लेनदार कोरे रह जायंगे और मैंनें इन्साल्वन्ट .. की दरखास्त की तो आप लोगों के पल्ले रुपे में चार आनें भी न पड़ेंगे"

"अफ़सोस! आपकी यह हक़ीक़त सुन कर मेरा दिल आप से आप उमडा .. है" लाला मदनमोहन बोले.

"सच है महा कवि शेक्स पीअर नें कहा है" मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे:—

"कोमल मन होत न किये होत प्रकृति अनुसार।
ज्यों पृथवी हित गगन ते वारिद द्रवति फुहार॥
वारिद द्रवति फुहार द्रवहि मन कोमलताई।
लेत, देत शुभ हेत दोउनको मन हरषाई॥
सब गुनते उतकृष्ट सकल वैभव को भूषन।
राजहु ते कछु अधिक देत शोभा कोमलमन॥१" §

"हज़रत सादी कहते हैं कि "दुर्बल तपस्वी से कठिन समय में उस्के दुःख .. हाल न पूछ और पूछे तो उस्के दुःख की दवा कर"* मुनशी चुन्नीलाल नें ..

"अच्छा इस रुपे के लिये ये हमारी दिल जमई क्या कर देंगे?" लाला .. नें बड़ी गंभीरता से पूछा.

"हां हां लाला साहब सच कहते हैं आप इस रुपे के लिये हमारी दिल .. क्या कर देंगे?" मुनशी चुन्नीलाल नें दिलजमई की चर्चा हुए पीछे अपनी .. जतानें के लिये मिस्टर रसल से पूछा.

"मैं थोड़े दिन मैं शीशे बरतन का एक कारखाना यहां बनाया चाहता .. अबतक शीशे बरतन की सब चीजें वलायत से आती हैं इस लिये ख़र्च और .. के कारण उन्की लागत बहुत बढ जाती है जो वह सब चीजें यहां तैयार की .. तो उन्में ज़रूर फ़ायदा रहेगा और ख़ुदा नें चाहा तो एक बरस के भीतर ..

§ The quality of mercy is not strained,
It droppeth, as the gentle rain from heaven
Upon the place beneath; it is twice blessed;
It blesseth him that gives, and him that takes;
'Tis mightiest in the mightiest; it becomes
The throned monarch better than his crown.
William Shakespeare.

* दरवेशजईफ़े हालरा दरख़ुशकी तंगेसाल मपुर्सके चुनी इच्छा बशर्ते आंकि मरहमे .. ..

रक़म जमा हो जायगी परंतु आपको इससमय इसबात पर पूरा भरोसा नहो तो मेरा ३ का कारखाना आपकी दिलजमईके वास्तै हाज़िरहे" मिस्टर रसल नें जवाब दिया.

"हिंदुस्थान में अब तक कलों के कारख़ानें नहीं हैं इस्से हिंदुस्थानियो को बड़ा सान उठाना पड़ता है मैं जान्ता हूं कि इससमय हिम्मत करके जो कलों के कारख़ानें ले जारी करेगा उस्को ज़रूर फ़ायदा रहैगा" मास्टर शिभूदयाल नें कहा.

"आपको रामप्रसाद बनारसीदास के सिवाय किसी और का रुपया तो नहीं ा!" मुनशी चुन्नीलाल नें पूछा.

"रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुके पीछे मुझको लाला साहब के वाय किसी की फूटी कौड़ी नहीं देनी रहैगी" मिस्टर रसल नें जवाब दिया.

परन्तु काच का कारखाना बनानें के लिये रुपे कहां सें आयंगे? और लाला मदन-हन के कर्ज़ लायक़ नील के कारख़ानें की हैसियत कहां है? इन्साल्वन्ट होनें से नदारों के पल्ले चार आने भी न पड़ेंगे यह बात मिस्टर रसल अपनें मुंह से अभी ह चुका है पर यहां इन बातोंको याद कौन दिलावै?

"इस सूरत में रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया न दिया जायगा तो उन्की क्री में इसका कारख़ाना बिकजायगा और अपनी रक़म वसूल होनें की कोई सूरत रहैगी" मुन्शी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के कान में झुक कर कहा.

"परंतु इससमय इसको देनें के लिये अपनें पास नकद रुपया कहां है?" लालामदन मोहन नें धीरे से जवाब दिया.

"अब मेरी शर्म आप को है 'वक्त निकल जाता है बात रहजाती है' जो आप ससमय मुझको सहारा देकर उभार लेगे तो मैं आपका अहसान जन्म भर नहीं भूलूं-गा" मिस्टर रसल नें गिड़ गिड़ा कर कहा.

"मैं मनसें तुम्हारी सहायता किया चाहता हूं परन्तु मेरा रुपया इससमय और कामो में लग रहा है इस्सें मैं कुछ नहीं कर सक्ता" लाला मदनमोहन नें शर्मातें, शर्मातें कहा.

"अजीहुज़ूर! आप यह क्या कहते हैं? आपके वास्तै रुपे की क्या कमी है? आप कहैं जितना रुपया इसी समय हाज़िर हो" मास्टर शिभूदयाल बोले.

"अच्छा! मुझसे होसकेगा जिस तरह दस हजार रुपे का बंदोबस्त करके मैं कल तक आपके पास भेजदूंगा आप किसी तरह की चिन्ता न करें" लाला मदनमोहन नें कहा.

"आपनें बड़ी महरबानी की मैं आपकी इनायत सें जी गया अब मैं आपके भरोसे बिल्कुल निश्चिन्त रहूंगा" मिस्टर रसल नें जाते, जाते बड़ी खुशी से हाथ मिला कर कहा. और मिस्टर रसल के जाते ही लाला मदनमोहन भी भोजन करनें चले गए.

प्रकरण ३

संगति का फल.

सहवासी बस होत नृप गुन कुल रीति विहाय
नृप सुवनी अरु तरुनता मिलन माय संग पाय
हितोपदेश

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस समय सब मुसाहब बराबर
मदनमोहन कुर्सी पर बैठ कर पान खाने लगे और इन लोगों ने अपनी अ
छेड़ी.

हरगोविंद (पन्सारी के लड़के) ने अपनी बगल से लखनऊ की बनी
निकाल कर कहा "हुज़ूर ये टोपियें अभी लखनऊसे एक बज़ाज के यहां
सोगात में भेजने के लिये अच्छी हैं पसंद हों तो दो, चार ले आऊं!"

"कीमत क्या है?"

"वह तो पचीस, पचीस रुपे कहता है परंतु मैं वाजबी ठैरा लूंगा"

"बीस, बीस रुपे में आवें तो ये चार टोपियें ले आना.

"अच्छा! मैं जाता हूं अपने बस पड़ते तोड़ जोड़ में कसर नहीं रखूंगा"
कह कर हरगोविंद वहां से चल दिया.

"हुज़ूर! यह हिना का अतर अजमेर से एक गंधी लाया है वह कहता है
हुज़ूर की तारीफ़ सुनकर तरह, तरह का निहायत उम्दा अतर अजमेर से
परंतु रस्ते में चोरी होगई सब माल असबाब जाता रहा सिर्फ यह शीशी
आप की नजर करता हूं" यह कह कर अहमद हुसेन हकीमने वह शीशी
के आगे रखदी.

"जो आप साहब को मंजूर करने में कुछ चारा बिचार हो तो हमारी
बात बताओ [illegible] इच्छा पूरी करेंगे" पंडित पुरुषोत्तमदास ने
[illegible]

"ये घड़ियां मुलाहजे के वास्ते हाजिर हैं और बहुतसी रकमों का बयाना कर आये
; बिना आपकाहा है जो अवकाश हो तो इसवक्त कुछ अर्ज करूं।" कम-
रा में आतेही बस्ता आगे रख कर [illegible], [illegible] कहा.

"लाला जवाहरलाल इतने बरस से काम करते हैं परन्तु लाला साहब को दस्तख
कागज़ दिखाने का मौका अबतक नहीं पड़ा" इसबातें लाला मदनमोहन की हुआ क
लाल और शिभूदयाल आपस में कानाफूसी करने लगे.

"भला इससमय इनबातों का कौन काम है। और मुझको बार. बार कि का
क्या फायदा है। मैं पहले कहचुका हूं कि तुम्हारी समझ में आवे जैसे करो मेरा का
मन ऐसे कामों में नहीं लगता" लाला मदनमोहन ने झिड़क कर कहा और जव
लाल वहांसे उठकर चुप चाप अपने रस्ते लगे

"चलो अच्छा हुआ। थोड़े ही में टल गई मैं तो घड़ियों का कारोबार देख के
डर गया था कि आज दस्तन्दाजी किये बिना न रहेंगे" जवाहरलाल के जाते ही मद-
नमोहन खुश हो, हो कर कहने लगे.

"इनका तो इतना हौसला नहीं है परन्तु ब्रजकिशोर होते तो वे थोड़े बहुत वच
ना कभी न रहते" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा.

"जब तक लाला साहब लिहाज करते हैं तब ही तक इनका दखल दबदबा ब
है नहीं तो घड़ी भर में अकल ठिकाने आजायगी" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"हुजूर। मैं लाला हरदयाल साहब के पास हो आया उन्हों ने बहुत, बहुत करा
पकी खैरआफियत पूछी है और आज शाम को आप से बाग में मिलने का कह
या है" हरकिसन दलाल नें आकर कहा.

"तुम गए जब वो क्या कर रहे थे।" लाला मदनमोहननें खुश होकर पूछ

"भोजन करके पलंग पर लेट रहे थे आपका नाम सुन कर तुर्त उठ आए औ
जोश से आपकी खैरआफियत पूछनें लगे"

"मैं अच्छी तरह जान्ताहूं वे मुझको प्राण सैभी अधिक समझते हैं" मद
नमोहननें पुलकित होकर कहा.

"आपकी चालही ऐसी है जो एक बार मिल्ता है हमेशे के लिये चेला बन जाता है
चुन्नीलालनें बढ़ावा देकर कहा.

परंतु कानूनीबंदे इस्से अलग हैं" मास्टर शिंभूदयाल ब्रजकिशोर की तर
फ़ इशारा कर के बोले.

"लीजिये ये टोपियां अठारह, अठारह रुपेमें ठैरालाया हूं" हरगोविंदनें लाला मद
नमोहन के आगे चारों टोपिये रख कर कहा.

"तुमनें तो उनकी आंखोंमें धूल डालदी! अठारह, अठारह रुप में कैसे ठैरालाये!

बहुमूल्य झाड़ लटक रहे थे. गोल, चैजूई और चौखूंटी मेजों पर फूलों के गुलदस्ते हाथीदांत, चंदन, आबनूस, चीनी, सीप और काच वगैरे के उम्दा, उम्दा खिलौने मिसल से रक्खे थे. चांदी की रकेबियों में इलायची, सुपारी चुनी हुई थी. समय, तारीख वार, महीना, बतानें की घड़ी, हारमोनियम बाजा, अटा खेलनें की मेज, अलबम, बीन, सितार, और शतरंज वगैरे मन बहलानें का सब सामान अपनें, अपनें ठिकाने पर रक्खा हुआ था. दिवारों पर गच के फूल पत्तों का सारा काम अबरख की चमक से चांदी के डले की तरह चमक रहा था और इसी मकान के लिये हजारों रुपे का सामान हर महीनें नया खरीदा जाता था.

इस्समय लाला मदनमोहन को कमरे में पांव रखते ही विचार आया कि इन दरवाजो पर बढ़िया साटन के पर्दे अवश्य होनें चाहियें उसी समय हरकिशोर के नाम हुक्म गया कि तरह, तरह की बढिया साटन लेकर अभी चले आओ. हरकिशोर समझा कि "अब पिछली बातों के याद आनें से अपनें जी में कुछ लज्जित हुए हैं चलो सबेरे का भूला सांझ को घर आजाय तो भूला नहीं बाजता" यह विचार कर हरकिशोर साटन इकठी करनें लगा पर यहां इन्बातों की चर्चा भी न थी. यहां तो लाला मदनमोहन को लाला हरदयाल की लौ लगरही थी. निदान रौशनी हुए पीछे बड़ी देर बाट दिखाकर लाला हरदयाल आये उन्को देखकर मदनमोहन की खुशी की कुछ हद नहीं रही बग्गीके आनेंकी आवाज सुन्ते ही लाला मदनमोहन बाहर जाकर उन्को लिवालाए और दोनों कौच पर बैठ कर बड़ी प्रीति सैं बातें करनें लगे.

"मित्र! तुमबड़े निठुर हो मैं इतनें दिनसैं तुह्मारी मोहनी मूर्ति देखनें के लिये तरस रहाहूं पर तुम याद भी नहीं करते" लाला मदनमोहन नें सच्चे मन से कहा.

"मुझको एक पल आपके बिना कल नहीं पड़ती पर क्या करूं? चुगलखोरों के हाथ से तंग हूं जब कोई बहाना निकाल कर आने का उपाय करताहूं वे लोग तत्काल जाकर लालाजी (अर्थात पिता) सैं कह देते है और लालाजी खुलकर तो कुछ नहीं कहते पर बातोंही बातों में ऐसा झंझोड़ते हैं कि जी जलकर राख हो जाता है - परंतु मैनें उन्सै भी साफ़ कह दिया कि आप राजी हों, या नाराज हों मुझसै लाला मदनमोहन की दोस्ती नहीं छूट सक्ती" लाला हरदयालनें यह बात ऐसी गर्मा गर्मी से कही कि लाला मदनमोहन के मन पर लकीर होगई पर यह सब बनावट थी उसें ये बातें बना, बना कर लाला मदनमोहन सै "तोफ़ा तहायफ़" में बहुत कुछ फ़ायदा उठाया था इस लिये इस सोनें की चिड़िया को जाल में फसानें के लिये भीतर पंटे सब घरके शामिलथे और मदनमोहन के मनमें मिलनें की चाह बढ़ानें के लिये उसनें अब की बार आनें में जान बूझ कर देर की थी.

"लोग तो मुझे भी बहुत बहकाते हैं कोई कहता है "ये रुपे के दोस्त हैं"

नाड़ लटक रहे थे. गोल, बैज़ई और चोखूंटी मेज़ों पर फूलों के गुलदस्ते,
चंदन, आबनूस, चीनी, सीप और काच वगैरे के उम्दा, उम्दा खिलौनें
रक्खे थे. चांदी की रकेबियों मे इलायची, सुपारी चुनी हुई थी. समय, तारीख़,
ना, बतानें की घड़ी, हारमोनियम बाजा, अंटा खेलनें की मेज़, अलबम, सै-
ार, और शतरंज वगैरे मन बहलानें का सब सामान अपनें, अपनें ठिकानें
हुआ था. दिवारों पर गच के फूल पत्तों का सादा काम अबरख की चमक
क डले की तरह चमक रहा था और इसी मकान के लिये हजारों रुपे का
र महीनें नया खरीदा जाता था.

मय लाला मदनमोहन को कमरे में पांव रखते ही बिचार आया कि इस्के
पर बढ़िया साटन के पर्दे अवश्य होनें चाहियें उसी समय हरकिशोर के नाम
ा कि तरह, तरह की बढ़िया साटन लेकर अभी चले आओ. हरकिशोर
क "अब पिछली बातों के याद आनें से अपनें जी में कुछ लज्जित हुए होंगे
रे का भूला सांझ को घर आजाय तो भूला नहीं बाजता" यह बिचार कर
र साटन इकट्ठी करनें लगा पर यहां इन्बातों की चर्चा भी न थी. यहां तो ला-
मोहन को लाला हरदयाल की लौ लगरही थी. निदान रोशनी हुए पीछे बड़ी
दिखाकर लाला हरदयाल आये उन्को देखकर मदनमोहन की खुशी की कुछ हद
बग्गीके आनेंकी आवाज़ सुन्ते ही लाला मदनमोहन बाहर जाकर उन्को
ए और दोनों कौंच पर बैठ कर बड़ी प्रीति से बातें करनें लगे.

मित्र! तुमबड़े निठुर हो मैं इतनें दिनसे तुह्मारी मोहनी मूर्ति देखनें के लिये तरस
र तुम याद भी नहीं करते" लाला मदनमोहन नें सच्चे मन से कहा.

मुझको एक पल आपके बिना कल नहीं पड़ती पर क्या करूं? चुग़लखोरों के
तंग हूं जब कोई बहाना निकाल कर आने का उपाय करताहूं वे लोग तत्काल
लालाजी (अर्थात् पिता) से कह देते हैं और लालाजी खुलकर तो कुछ नहीं
र बातोंही बातों में ऐसा झंझोड़ते हैं कि जी जलकर राख हो जाता है आजतो
से भी साफ़ कह दिया कि आप राज़ी हों, या नाराज़ हों मुझसे लाला मदनमो-
दोस्ती नहीं छूट सक्ती" लाला हरदयालनें यह बात ऐसी गर्मा गर्मी से कही
ला मदनमोहन के मन पर लकीर होगई पर यह सब बनावट थी उसें ऐसी
ना, मना कर लाला मदनमोहन से "तोफ़ा तहायफ़" मे बहुत कुछ फ़ायदा
गा इस लिये इस सोनें की चिड़िया को जाल में फसानें के लिये भीतर पेटे सब
ामिलथे और मदनमोहन के मनमें मिलनें की चाह बढ़ानें के लिये उसनें आ
र आनें में जान बूझ कर देर की थी.

भाई! लोग तो मुझे भी बहुत बहकाते हैं कोई कहता है "ये रुपे के दोस्त हैं"

भोजन के लिये अन्न और पहनने के लिये वस्त्र तक नहीं मिल्ता उनको भी
दुःख सुख के साथी प्राणोपम मित्र के आगे अपना दुःख रोकर छाती का बोझ
करनें पर, अपनें दुखो को सुन, सुन कर उसके जी भर आनें पर, उसके धैर्य
पर, उसके हाथ से अपनी डबडबाई हुई आंखों के आंसू पुछजानें पर, जो संतोष
है वह किसी बडे राजा को लाखों रुपे खर्च करनें से भी नहीं होसक्ता" लाला ह
याल कहनें लगा.

"निस्सन्देह! मित्रता ऐसीही चीज़ है पर जो लोग प्रीति का सुख नहीं जानते
किसी तरह इस्का भेद नहीं समझ सक्ते" लाला मदनमोहन कहनें लगे.

"दुनियां के लोग बहुत करके रुपे के नफे नुक्सान पर प्रीतिका आधार र
हैं आज हरगोविंद नें लखनऊ की चार टोपियां मुझको अठारह रुपे में लादीं थीं
हरकिशोर जलगये और मेरी प्रीति बढानें केलिये बारह, बारह रुपे में वैसी ही टो
मुझको देनें लगे इन्के निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज़ है जो दस पांच
की कसर खानें से बातों में हाथ आसक्ती है!"

"हरकिशोर नें हरगोविंद की तरफ से आपका मन उछांटनें के लिये यह तदबी
की हो तो भी कुछ आश्चर्य नहीं." हरदयालबोले "मैं जान्ता हूं कि हरकि
एक बड़ा—"

इतनेंमें एकाएक कमरे का दरवाजा खुला और हरकिशोर भीतर दाखल हु
उसको देखतेही हरदयाल की जबान बंद होगई और दोनों नें लजाकर सिर झु
लिया.

"पहले आप अपनें शुभ चिन्तकों के लिये सजा तजवीज कर लीजिये फि
साठन मुलाहजे कराऊंगा ऐसे वाहियात कामों के वास्ते इस जरूरी काम में
करना मुनासिब नही. हां लाला हरदयाल साहब क्या फ़रमा रहेथे "हरकिशोर
बड़ा-" क्या है?" हरकिशोर नें कमरे में पांव रखते ही कहा.

"चलो दिल्लगी की बातें रहनें दो लाओ, दिखलाओ तुम कैसी साठन लाए
हम अपनी निज की सलाह के वास्ते औरों का काम हर्ज नहीं किया चाहते"
हरदयाल नें पहली बात उड़ा कर कहा.

"मै और नहींहूं पर अब आप चाहे जो बना दें मुझको अपना माल दिखानें
कुछ उज्र नहीं पर इतना बिचार है कि आज कल सच्चे माल की निस्बत नकली
झुटे माल पर ज्याद: चमक दमक मालूम होती है मोतियों को देखिये चाहे मणियों
देखिये, कपड़ों को देखिये चाहे गोटे किनारी को देखिये जो सफ़ाई झूंटे पर होगी
पर हरगिज़ न होगी इस लिये मैं डरताहूं कि शायद मेरा माल पसंद न आय" ह
...नें मुस्करा कर कहा.

"राजनीति में कहा है "राजा सुख भोगहि सदा मंत्री करहि सम्हार ॥ रा
बिगरे कछू तो मंत्री सिर भार* ॥" पंडित पुरुषोत्तमदास बोले.

"हां यहांके अमीरोंका ढंगतो यहीहै पर यह ढंग दुनियां से निराला है
सब संसार के लिये अनुचित गिनी जाती है वही उन्के लिये उचित समझी जा
उन्की एक, एक बातपर सुन्नेंवाले लोट पोट होजाते हैं! उन्की कोई बात हिक
खाली नहीं ठेरती! जिन बातों को सब लोग बुरी जान्ते हैं, जिन बातोंके क
कमीनें भी लजाते हैं, जिन बातोंके प्रगट होनें से बदचलन भी शर्माते हैं
करना यहांके धनवानों के लिये कुछ अनुचित नहीं है! इन् लोगों को न किसी
के प्रारंभ की चिन्ता होती है! न किसी काम के परिणामका बिचार होताहै
के धन पति तो अपनें को लक्ष्मी पति समझतेहैं परंतु ईश्वर के हां का यह
नहीं है उस्नें अपनी सृष्टि में सब गरीब अमीरों को एकसा बनायाहै"
ब्रजकिशोर कहनें लगे " जो मनुष्य ईश्वर का नियम तोड़ेगा उस्को अपनें पाप
अवश्य दंड मिलेगा. जो लोग सुख भोग में पड़ कर अपनें शरीर या मन को
परिश्रम नहीं देते प्रथम तो असावधान्ता के कारण उन्का वह बैभव ही नहीं
और रहा भी तो कुदरती कायदे के मूजिब उन्का शरीर और मन क्रम से
होकर किसी काम का नहीं रहता. पाचन शक्तिके घटनें से तरह, तरह के
उत्पन्न होतेहैं और मानसिक शक्तिके घटनें से चित्त की बिकलता, बुद्धि की अस्थि
और काम करनें की अरुचि उत्पन्न होजाती है जिस्सै थोड़े दिन मै संसार दुःख
मालूमहोनें लगताहै.

" परंतु अत्यंत महनत करनें से भी तो शिथिलता होजाती है "
बैजनाथनें कहा.

" इस्से यह बात नहीं निकल्ती कि बिल्कुल महनत नकरो सब काम अंदाज
करनें चाहियें " लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " लिडिया का बादशाह
साईरससे हारा उससमय साईरस उस्की प्रजा को दास बनानें लगा तब कारूननें
" हमको दास किसलिये बनाते हो? हमारे नाश करनें का सीधा उपाय यह है
हमारे शस्त्र लेलो, हमको उत्तमोत्तम बस्त्र भूषण पहननें दो, नाच रंग देखनें दो,
रसका अनुभव करनें दो, फ़िर थोड़े दिन में देखोगे कि हमारे शूरबीर अबला
जांयगे और सर्वथा तुमसे युद्ध न कर सकेंगे " निदान ऐसाही हुआ. पृथ्वीराज
संयोगता से बिवाह हुए पीछे वह इसी सुख में लिपटकर हिन्दुस्थान का राज खो
और मुसल्मानों का राजभी अंतमें इसी भोग बिलास के कारण नष्ट हुआ "

* भाग्नं राजा मन्त्री कार्यस्य भाजनम् ॥राजकार्यविरोधेनसीमन्त्री दोषण ...

लाला साहब के फायदे से कामहै और लोगों के जी दुखानेंसे कुछ काम नहीं है मनुस्मृति में कहा है "सत्य कहहु अरु प्रियकहहु अप्रिय सत्य नभाख ॥ प्रियहु न बोलिये धर्म्म सनातन राख ॥"* "इस लिये मैं इससमय इतनाही कहना उचित समझता हूं" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

और इस्पर थोडी देर सब चुप रहे.

प्रकरण ६.

भले बुरे को पहचान+

धर्म्म, अर्थ शुभ कहत कोउ काम, अर्थ कहिं आन
कहत धर्म्म कोउ अर्थ कोउ तीनहुं मिल शुभ जान§

मनुस्मृति.

"आप के कहनें मूजब किसी आदमी की बातों से उस्का स्वभाव नहीं जाना फिर उस्का स्वभाव पहचान्नें के लिये क्या उपाय करें?" लाला मदनमोहन नें तर्क

"उपाय करनें की कुछ जरुरत नहीं है, समय पाकर सब भेद अपनें आप जाता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मनुष्य के मनमें ईश्वरनें अनेक की वृत्ति उत्पन्न की हैं जिन्मैं परोपकार की इच्छा, भक्ति और न्याय परता धर्म्म त्तिमैं गिनी जाती हैं; दृष्टांत और अनुमानादिके द्वारा उचित अनुचित कामों की वि चना, पदार्थज्ञान, और विचारशक्ति का नाम बुद्धिवृत्ति है. बिना बिचारे देखनें, सुन्नें आदिसे जिस काम में मनकी प्रवृत्ति हो, उसे आनुसंगिक प्रवृत्ति क हैं काम, सन्तानस्नेह, संग्रहकरनेंकी लालसा, जिघांसा और आत्मसुख की इत्यादि निकृष्टप्रवृत्ति में शामिल हैं और इन सब के अविरोध से जो काम किया वह ईश्वर के नियमानुसार समझा जाता है परन्तु किसी काम में दो बृत्तियों का वि किसी तरह न मिट सके तो वहां जरुरत के लायक आनुसंगिक प्रवृत्ति और प्रवृत्ति को धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धि वृत्ति से दबा देना चाहिये जैसे श्रीरामचन्द्रजी नें पाट छोड कर बनमें जानें से धर्म्म प्रवृत्ति को उत्तेजित किया था."

"यह तो सवाल और जवाब और हुआ मैंने आपसे मनुष्य का स्वभाव की राह पूछी थी आप बीचमें मनकी वृत्तियों का हाल कहनें लगे" लाला मदन नें कहा.

"इसी से आगे चल कर मनुष्य के स्वभाव पहचान्नें की रीति मालूम होगी

---

* सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्य मप्रियम् ॥ प्रियं च नानृतं ब्रूया देषधर्म सना...

...ने श्रेयः धर्मार्थौ धर्म्म एव च ॥ अर्थ एवेह वा श्रेय स्त्रिवर्ग इति तु स्थिति

' पर आप तो काम, सन्तानस्नेह आदि के अविरोध से भक्ति और परोपकारादि
के लिये कहते हैं और शास्त्रों में काम, क्रोध, लोभ, मोहादिककी बारम्बार निन्दा
फिर आप का कहना ईश्वर के नियमानुसार कैसे होसक्ता है?" पंडित पुरुषोत्त-
बीच में बोल उठे.

"मैं पहले कह चुकाहूं कि धर्म्मप्रवृत्ति और निकृष्टप्रवृत्ति में विरोधहो वहां जरूर
लायक धर्म्मप्रवृत्ति को प्रबल मान्ना चाहिये परंतु धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धिप्रवृत्ति का
किये पीछे भी निकृष्टप्रवृत्ति का त्याग किया जायगा तो ईश्वर की यह रचना
निरर्थक ठैरेगी पर ईश्वर का कोई काम निरर्थक नहीं है मनुष्य निकृष्टप्रवृत्ति
स होकर धर्म्म प्रवृत्ति और बुद्धि वृत्ति की रोक नहीं मान्ता इसी से शास्त्र में बार-
उसका निषेध किया है परंतु धर्म्म प्रवृत्ति और बुद्धि को मुख्य माने पीछे उचित
से निकृष्ट प्रवृत्ति का आचरण किया जाय तो गृहस्थ के लिये दूषन नहीं होसक्ता
उसका नियम उल्लंघन कर किसी एक वृत्ति की प्रबलता से और, और वृत्तियों के
रीत आचरण कर कोई दु:ख पावे तो इसमें किसी का बस नहीं सब से मुख्य
प्रवृत्ति है परंतु उसमें भी जबतक और वृत्तियों के हक की रक्षा न कीजायगी
क तरह के बिगाड़ होनें की संभावना बनी रहैगी."

"मुझको आपकी यहबात बिल्कुल अनोखी मालूम होती है भला परोपकारादि
कामोंका परिणाम कैसे बुरा हो सक्ता है?" पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा.

"जैसे अन्न प्राणाधार है परंतु अति भोजन से रोग उत्पन्न होता है" लाला मज-
ोर कहनें लगे "देखिये परोपकारकी इच्छाही अत्यंत उपकारी है परंतु हदसे आगे
पर वह भी फ़िज़ूलखर्ची समझी जायगी और अपनें कुटुंब परवारादि का सुख नष्ट
ायगा जो आलसी अथवा अधर्म्मियों की सहायता की तो उस्से संसार में आलस्य
र पापकी वृद्धि होगी इसी तरह कुपात्र में भक्ति होनें से लोक, परलोक दोनों नष्ट
ांयगे. न्यायपरता यद्यपि सब वृत्तियों को समान रखनें वाली है परंतु इसकी अ-
कता से भी मनुष्य के स्वभाव में मिलनसारी नहीं रहती, क्षमा नहीं रहती. जब बुद्धि
न के कारण किसी बस्तुके विचारमें मन अत्यंत लगजायगा तो और जान्नेंलायक
र्थों की अज्ञानता बनीरहैगी मनको अत्यंत परिश्रम होनें से वह निर्बल होजायगा.
र शरीर का परिश्रम बिल्कुल नहोनें के कारण शरीर भी बलहीन होजायगा. आनु-
गिक प्रवृत्ति के प्रबल होनेंसे जैसा संग होगा वैसा रंग तुरत लगजायाकरेगा. कामकी
लता से समय, असमय और स्वकी परकी आदिका कुछ बिचार न रहैगा. संतानस्नेह
वृत्ति बढ़गई तो उसके लिये आप अधर्म्म करनें लगेगा, उनको लाड़, प्यार में रखकर
के लिये जुदे कांटे बोवेगा. संग्रह करनें की लालसा बढ़ गई तो जोरूमें, चोरीसे,

छलसे, खुशामदसे, कमानेंकी इिछ्या पढेगी और खानें, खर्चनें के नामसे जान निक
जायगी. जिघांसा वृत्ति प्रबल हुई तो छोटी, छोटी सी बातों पर अथवा खाली सं
ही दूसरों का सत्यानास करनें की इच्छा होगी और दूसरे को दंडदती बार आ
योग्य बन जायगा. आत्म सुखकी अभिरुचि हद्दसे आगे बढगई तो मनको परिश्र
कामोंसे बचानें के लिये गानें बजानें की इच्छा होगी, अथवा तरह, तरह के खेल त
हँसी चुहलकी बातें, नशेबाजी, और खुशामदमें मन लगेगा. द्रव्यके बलसे बिना धर्म
धर्मात्मा बना चाहैंगे, दिन रात बनाव सिंगार में लगे रहैंगे. अपनी मानसिक उ
करनें के बदले उन्नति करनें वालों से द्रोह करेंगे, अपनी झूंटी जिद निबाहनें में
बड़ाई समझैंगे, अपनें फायदे की बातों में औरों के हक़ का कुछ बिचार न क
अपनें काम निकालनें के समय आप खुशामदी बन जायँगे, द्रव्य की चाहना हु
उचित उपायों से पैदा करनें के बदले जुआ, बदनी, धरोहड़, रसायन, या धरी
दौलत ढूंडते फिरेंगे.—"

"आप तो फिर वोही मनकी वृत्तियोंका झगड़ा ले बैठे. मेरे सवाल का जवा
जिये या हार मानिये" लाला मदनमोहन उखता कर कहनें लगे.

"जब आप पूरी बात ही न सुनें तो मैं क्या जवाब दूं ? मेरा मतलब इतनें कि
से यह था कि सब वृत्तियों का संबन्ध मिला कर अपना कर्तव्य कर्म निश्चय क
चाहिये किसी एक वृत्ति की प्रबलता से और वृत्तियों का बिचार न किया जाय
उस्में बहुत नुक्सान होगा" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे:—

"वाल्मीकि रामायणमें भरतसे रामचंद्रनें और महाभारतमें नारदमुनिनें राजायुधि
ष्ठिरसे प्रश्नकियाहै "धर्महि धन, अर्थहिधरम, बाधकतो कहुं नाहिं ?॥ काम नकरत कि
कछु पुन इन दोउन मांहिं? ॥ १"

"बिदुरप्रजागर में बिदुरजी राजा धृतराष्ट्र से कहते हैं "धर्म अर्थ अरु काम,
समय सेवत जु नर ॥ मिल तीनहुँ अभिराम, ताहि देत दुहुँलोक सुख ॥ २"

बिष्णुपुराण में कहाहै " धर्म बिचारै प्रथम पुनि अर्थ, धर्म अबिरोधि ॥ धर्म,
बाधा रहित सेवै काम सुसोधि ॥२"

"रघुवंशमें अतिथिकी प्रशंसा करतीबार महाकवि कालिदासनें कहाहै " निरी
कायरपनो केवल बल पशुधर्म्म ॥ तासों उभय मिलाय इन सिद्ध किये सब कर्म्म

१ कच्चिदर्थेन वा धर्मं धर्मेणार्थं मथा पिवा ॥ उभौ वा प्रीतिसारेण न कामेन प्रबाधसे ॥
२ यो धर्मं मर्थं कामं च यथा कालं निषेवते ॥ धर्मार्थ कामसंयोगं सोमुत्रेहच विन्दति ॥
श्चिन्तयेद्धर्मं मर्थं चास्या विरोधिनम् ॥ अपीडया तयोः काम मुभयोरपि चिन्तयेत
केवलनीतिः शौर्यमश्वापदचेष्टितम् ॥ अतः सिद्धिमभेताभ्या मुभाभ्यामन्वियेष सः॥

नकम्मे होत हैं बली उपद्रववान ॥ तासों कीन्हें मित्र तिन मध्यम बल अनुमान॥५"
चाणक्य नें लिखा है " बहुत दान तें बलि बंध्यो मान मरो कुरुराज ॥ लपट.
वण हत्यो अति वर्जित सब काज ॥ ६"
फ्रीजिया के मशहूर हकीम एपिक्टेट्स की सब नीति इन दो बचनों में समाई हुई
"धैर्य से सहना" और "मध्यम भाव से रहना" चाहिये.
कुरान में कहाहै कि "अय (लोगो) ! खाओ, पीओ परन्तु फ़िज़ूलखर्ची नकरो ७"
वृन्द कहता है "कारज सोई सुधर है जो करिये समभाय ॥ अति बरसे बरसे
जों खेती कुम्हलाय ॥"
"अच्छा संसार में किसी मनुष्यका इसरीति पर पूरा बरताव भी आजतक हुआ
" बाबू बैजनाथ नें पूछा.
"क्यों नहीं देखिये पाईसिस्ट्रेट्स नामी एथीनियन का नाम इसी कारण इतिहास में
क रहा है वह उदार होनें पर फ़िजूलखर्च न था और किसी के साथ उपकार कर-
त्युपकार नहीं चाहता था बल्कि अपनी नामवरी की भी चाह न रखताथा वह कि-
दरिद्री के मरनें की खबर पाता तो उस्की क्रिया कर्म के लिये तत्काल अपनें पास
र्च भेज देता. किसी दरिद्री को बिपदग्रस्त देखता तोअपनें पास से सहायता करके
के दुःख दूर करनें का उपाय करता पर कभी किसी मनुष्य को उस्की आवश्यकता
अधिक देकर आलसी और निरुद्यमी नहीं होनें देता था. हां सब मनुष्यों की प्रकृति
नहीं होसक्ती, बहुधा जिस मनुष्य के मनमें जो वृत्ति प्रबल होती है वह उस्को
थ खींच कर अपनी ही राह पर लेजाती है जैसे एक मनुष्य को जंगल में रुपों की
ी पड़ी पावै और उससमय उस्के आस पास कोई न हो तब संग्रह करने की लालसा
हती है कि " इसे उठा लो " सन्तानस्नेह और आत्म सुख की अभिरुचि सम्मति देती
कि "इसकाम से हम को भी सहायता मिलेगी" न्यायपरता कहती है कि "न अपनी
न्नता से यह किसी नें हम को दी न हमनें परिश्रम करके यह किसी से पाई फ़िर
पर हमारा क्या हक है ? और इस्का लेना चोरी से क्या कम है ? इसे पर धन समझ
र छोड़ चलो" परोपकार की इच्छा कहती है कि "केवल इस्का छोड़जाना उचित
हीं, जहां तक होसके उचित रीति से इस्को इस्के मालिक के पास पहुंचानें का उपाय
रो" अब इन वृत्तियों में से जिस वृत्ति के अनुसार मनुष्य काम करे वह उसी मेल में
ना जाता है यदि धर्म्मप्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य अच्छा समझा जायगा और

. दीनान्यनुप्रवर्तन्ति प्रद्रवन्ति विधुर्वन्ति ॥ तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितान्यतः
. अतिदानाद् बलिर्बद्धो नष्टो मानात् सुयोधनः ॥ विनष्टो रावणो लौल्या दतिसर्वत्र वर्जयेत्
: कुल् खमू व ला शुम्मिफ़ु

प्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य नीच गिना जायगा, और इस रीति से भले
ों की परीक्षा समय पाकर अपनें आप होजायगी बल्की अपनी बृत्तियों को प
कर मनुष्य अपनी परीक्षा भी आप कर सकेगा, राजपाट, धनदौलत, बिद्या, स्वह
मर्यादा से भले बुरे मनुष्य की परीक्षा नहीं होसक्ती. बिदुरजी नें कहा है "उत्त
आचार बिन करें प्रमाण न कोइ ॥ कुलहीनो आचारयुत लहे बडाई सोइ † ॥"

प्रकरण ७+

सावधानी (होशयारी)

सब भूतन को तत्व लख कर्म योग पहिचान ॥
मनुजनके यत्नहि लख हि सो पंडित गुणवान ॥ *

बिदुर प्रजागरे.

यहांतो आप अपनें कहनेंपर खुदही पक्के नरहें. आपनें केलीप्स और डिओन
त देकर यह बात साबित कीथी कि किसीकी ज़ाहिरी बातोंसे उस्कीपरीक्षा न
सक्ती परंतु अंतमें आपनें उसीके कामोंसे उस्को पहचान्ने की राह बतलाई" ब
नाथनें कहा.

"मैंनें केलीप्सके दृष्टांतमें पिछले कामोंसे पहली बातोंका भेद खोलकर उस्का
भाव बता दियाथा इसी तरह समय पाकरहर अदमी के कामोंसे मनकी बृत्तिये
गाह करके उस्की भलाई बुराई पहचान्ने की राह बतलाई तो इस्में पहली बातोंसे
रोध हुआ ?" लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे.

"अच्छा ! जब आपके निकट मनुष्यकी परीक्षा बहुत दिनोंमें उस्के कामोंसे
क्ती है तो पहले कैसा बरताव रक्खें ? क्या उस्की परीक्षा नहो जबतक उस्को अ
पास न आनें दें ?" लाला मदनमोहननें पूछा.

"नहीं, केवल संदेहसे किसीको बुरा समझना, अथवा किसीका अपमान करना
भी अनुचित है परंतु किसीकी ऊपरी बातोंमें आकर ठगा जाना भोमूर्खतासे खाली न
लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "महाभारत में कहाहै "मन नभरे पतियाहु जिन
संदेहु अति नाहि ॥ भेदो सों भय होतही जर उखरे छिनमाहि॥" § इस्कारण जब
मनुष्यकी परीक्षा नहो साधारण बातों में उस्के ज़ाहिरी बरताव परदृष्टि रखनी चा
परंतु जोंकि काममें उस्में सावधान रहना चाहिये उस्का दोष प्रगट होनेंपर उ

† न कुलं वृत्तहीनस्य प्रमाणमिति मे मतिः ॥ अन्त्येष्वपि हि जातानां वृत्तमेव विशिष्यते ।
* तत्त्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम् ॥ उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पंडित उच्यते ॥
§ न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत् ॥ विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति ॥

छोड़नेमें संकोच नहो इसलिये अपना भेदी बनाकर, उस्का अहसान उठाकर, अथवा किसी तरहकी लिखावट और ज़बानसें उस्के बसवर्ती होकर अपनी स्वतन्त्रता न खोवै यद्यपि किसी, किसी के बिचार में छल, बलको प्रतिज्ञाओंका निबाहना आवश्यक नहीं है परंतु प्रतिज्ञाभंग करनें की अपेक्षा पहलेबिचारकर प्रतिज्ञा करना हर भांत अच्छाहे"

"ऐसी सावधानी तो केवल आप लोगोंही से होसक्ती है जो दिनरात इन्हीं बातोंके धारा बिचारमें लगे रहें" लाला मदनमोहननें हँसकर कहा.

"मैं ऐसा सावधान नहीं हूं परंतु हर काम के लिये सावधानी कीबहुत ज़रूरत है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं अभी मनकी बृत्तियोंका हाल कहकर अच्छे बुरे मनुष्योंकी पहचान बता चुकाहूं परंतु उनमेंसे धर्म्मप्रबृत्ति की प्रबलता रखनें वाले अच्छे आदमी भी सावधानी बिना किसी कामके नहीं है क्योंकि वे बुरी बातों को अच्छा समझकर धोका खाजाते हे आपनें सुनाहोगा कि हीरा और कोयला दोनों कार्बोन हैं और उन्के बन्नेकी रसायनिकक्रिया भी एकसीहे दोनोंमें कार्बोन रहताहे केवल इतना अंतरहे हीरे में निरा कार्बोन जमा रहताहे और कोयले में उस्की कोई खास सूरत नहीं होती जो कार्बोन जमाहुआ, दृढ रहनेंसे बहुत कठोर, स्वच्छ, स्वेत और चमकदार होकर हीरा कहलाताहे वही कार्बोन परमाणुओंके फेल फुट और उलट पुलट होनेंके कारण काला, झिर्झिरा, बोदा, और एक सूरत मे रहकर कोयला कहलाताहे! येही भेद अच्छे मनुष्योंमें और अच्छीप्रकृतिवाले सावधान मनुष्योंमें हे कोयला बहुतसी जहरीली और दुर्गंधित हवाओंको सोख लेताहे अपनें पास की चीजोंको गलनें सड़नें की हानि से बचाताहे. और अमोनिया इत्यादि के द्वारा बनस्पतिको फ़ायदा पहुंचाता है इसी तरह अच्छे आदमी दुष्कर्मों से बचते हें परंतु सावधानी का योग मिले बिना हीराकीतरह क़ीमती नहीं होसक्ते"

"मुझे तो यह बातें मनः कल्पित मालूम होतीहें क्योंकि संसार के बरतावसे इन्की कुछ बिध नहीं मिल्ती संसारमे धनवान कुपढ़, दरिद्री पंडित, पापी सुखी, धर्मात्मादुखी, असावधान अधिकारी, सावधान आज्ञाकारी, भी देखनेंमें आतेहें" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"इसके कई कारण हें" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं पहले कहचुकाहूं कि ईश्वर के नियमानुसार मनुष्य जिस विषय में भूल करता है बहुधा उस्को उसी विषय में दंड मिल्ता है. जो बिद्वान दरिद्री मालूम होते हें वह अपनी विद्या में निपुन हे परन्तु संसारिक व्यवहार नहीं जान्ते अथवा जान बूझ कर उसके अनुसार नहीं बरतते इसी तरह जो कुपढ़ धनवान दिखाई देते हे वह विद्या नहीं पढ़े परन्तु द्रव्योपार्जन करनें और उसके रक्षा करनें की रीति जान्ते हैं. बहुधा धनवान रोगी होते हें और गरीब ने-

हते हैं इस्का यह कारण है कि धनवान द्रव्योपार्जन करनें की रीति जानते
शरीरकी रक्षा उचित रीति से नहीं करते और गरीबोंकी शरीर रक्षा उ
से बनजातीहै परंतु वे धनवान होनें की रीति नहीं जान्ते. इसी तरह जहां
बातकी कसर होती है वहां उसी चीजकी कमी दिखाई देती है. परंतु कहीं,
प्रकृति के विपरीतपापी सुखी, धर्मात्मादुखी, असावधान अधिकारी, सावधान
कारी, दिखाई देतेहैं इस्के दो कारण हैं. एक यह कि संसार की वर्तमान दशाके
मनुष्यका बड़ा दृढ संबंध रहता है इस लिये कभी, कभी औरोंके हेतु उस्का
रीत भाव होजाता है जैसे माबापके विरसे से द्रव्य, अधिकार या ऋण रोगादि
हैं, अथवा किसी और की धरी हुई दौलत किसी और के हाथ लगजानें से वह
मालिक बनबैठताहै, अथवा किसी अमीर को उदारता से कोई नालायक
वान बन जाताहै, अथवा किसी पास पड़ोसी की गफलत से अपना सामान जलजाता
अथवा किसी दयालु विद्वान के हितकारी उपदेशों से, कुपढ मनुष्य विद्या का लाभ
के हैं, अथवा किसी बलवान लुटेरे की लूट मारसे कोई गृहस्थ बेसबब धन और
दुरुस्ती खोबैठता है और ये सब बातें लोगों के हक में अनायास होती रहती हैं
लिये इनको सब लोग प्रारब्ध फलमान्ते हैं परंतु ऐसे प्रारब्धी लोगों में जिस्को कोई
अनायास मिलगई पर उसके स्थिर रखनें के लिये उसके लायक कोई बृत्ति अथवा
बृत्तियों की सहायता स्वरूप सावधानी ईश्वर नें नहीं दी तो वह उस चीज को
में अपनी स्वाभाविक बृत्तियों के बस होकर बहुधा खो बैठताहै अथवा बिपरीत
त्तियों की प्रबलता से वह बस्तु अधिक हुई तो उसमें उन बृत्तियों का नुक्सान गुप्त
कर समय पर ऐसे प्रगट होता है जैसे बचपन की बेमालूम चोट बड़ी अवस्था में
र को निर्बल पाकर अचानक कसक उठे, या शतरंज में किसी चाल की भूलका
र दसबीस चाल पीछे मालूम हो. पर ईश्वरकी कृपा से किसी को कोई बस्तु मिल
है तो उसके साथही उसके लायक बुद्धि भी मिलजाती है या ईश्वर की कृपासे किसी
यम मुकाम (प्रतिनिधि) वगैरे की सहायता पाकर उसके ठीक, ठीक काम चल
बानक बनजाता है जिससे वह नियम निभे जाते हैं परंतु ईश्वरके नियम मनुष्य
इसी तरह नहीं टूट सक्ते."

"मनुष्य क्या मैं तो जान्ता हूं ईश्वर सेभी नहीं टूट सक्ते" बाबू बैजनाथ नें कह
"ऐसा बिचारना अनुचित है ईश्वर को सब सामर्थ्य है देखो प्रकृतिका यह निय
सब जगह एकसा देखा जाता है कि गर्म होनें से होक चीज फलती है और ठंडी हो
सिमट जाती है यहां नियम ३२ डिग्री तक जल के लिये भी है परंतु जब ज
बहुत ठंडा होकर ३२ डिग्री पर बर्फ बन्ने लगताहै तो वह ठंड से सिमटने के ब

फैलता जाता है और हल्का होनें के कारण पानी के ऊपर तैरता रहता है
जल जंतुओंकी प्राणरक्षा के लिये यह साधारण नियम बदल दिया गया ऐ
बातों से उसकी अपरमित शक्तिका पूरा प्रमाण मिलता है उस नें मनुष्य के प्र
भावादि से संसार के बहुतसे कामों का गुप्त संबंध इस तरह मिलारक्खा है कि
आभास मात्र से अपना चित्त चकित होजाता है. यद्यपि ईश्वर के ऐसे बहुत
की पूरीथाह मनुष्य की तुच्छ बुद्धि को नहीं मिल्ती तथापि उस नें मनु
बुद्धि दी है इस लिये यथाशक्ति उस्के नियमों का विचार करना, उन्के अनुसार
और विपरीत भावका कारण ढूंढना उसको उचित है सो मै अपनी तुच्छ बुद्धि
सार एक कारण पहले कह चुकाहूं. दूसरा यह मालूम होताहै कि जैसे तारों
चन्द्रमा की चांदनी मे और चंद्रमाकी चांदनी सूर्य्य की धूपमें मिलकर आप
उसका तेज बढानें लगती है इसी तरह बहुत उन्नति में साधारण उन्नति
आप मिलजाती है. जबतक दो मनुष्यों का अथवा दो देशों का ब
बर रहता है कोई किसी को नहीं दबा सक्ता, परन्तु जब एक उन्
होता है, आकर्षणशक्ति के नियमानुसार दूसरे की समृद्धि अपनें आप
तरफ़ को खिचनें लगती है इसलिये जबतक हिन्दुस्थान में और देशों
कर मनुष्य के लिये वस्त्र और सब तरह के सुख की सामग्री तैया
थीं, रक्षाके उपाय ठीक, ठीक बनरहे थे, हिन्दुस्थान का वैभव प्रतिदिन बढ़
था परंतु जबसे हिन्दुस्थान का एका टूटा और देशों मे उन्नति हुई भाफ़ और
आदि कलोंके द्वारा हिंदुस्थान की अपेक्षा थोड़े खर्च, थोड़ी मह्नत, और थो
मे सब काम होनें लगा हिंदुस्थान की घटती के दिन आगए; जब तक हिंदुस
बातों मे और देशों की बराबर उन्नति न करेगा यह घाटा कभी पूरा न होग
स्थान की भूमि मे ईश्वर की कृपा से उन्नति करनें के लायक़ सब सामान मौ
मौजूद है केवल नदियों के पानी ही से बहुत तरह की कलें चल सक्ती हैं प
हिलाये बिना अपनें आप घास फूस मे नहीं आता नई, नई युक्तियों का प्रयो
बिना काम नहीं चलता. पर इन बातों से मेरा यह मतलब हर्गिज़ नहीं है कि
पुरानी सब बातें बुरी और नई, नई सब बातें एकदम अच्छी समझ ली
पर [illegible] केवल इस विचार से दिया है कि अधिकार और [illegible]
थोड़े, थोड़े दोष किसी समय कामकी होती है [illegible]
[illegible] जानें पर अथवा किसी और तरह की [illegible]
निरर्थक हो जाती है और [illegible]
एक की उन्नति [illegible]

धानी बिना मनकी वृत्तियों के ठीक होनें पर भी जमानें के पीछे रहजानें से कभी, कभी अपनें आप अवनति होजाती है और इनही कारणों से कहीं, कहीं प्रकृति के बिपरीत भाव दिखाई देताहै"

"इस्सै तो यहबात निकली कि हिंदुस्थान में इस्समय कोई सावधान नहीं है" मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

"नहीं यहबात हरगिज नहींहै, परंतु सावधानीका फल प्रसंगके अनुसार अलग, अलग होताहै" लालाब्रजकिशोर कहनें लगे "तुम अच्छी तरह बिचार कर देखोगे तो मालूम होजायगा कि हरेक समाजका मुखिया कोई निरा बिद्वान अथवा धनवान नहीं होता, बल्कि बहुधा सावधान मनुष्य होताहै और जो खुशी बड़े, बड़े राजाओंको अपनें बराबर वालोंमें प्रतिष्ठा लाभसै होतीहै वही एक गरीबसै गरीब लकड़हारे को भी अपनें बराबर वालोंमें इज्जत मिलनें से होतीहै और उन्नति का प्रसंग हो तो वह धीरें, धीरें उन्नतिभी करता जाता है परंतु इन दोनों की उन्नतिका फल बराबर नहीं होता क्योंकि दोनोंको उन्नति करनेंके साधन एकसे नहीं मिलते. मनुष्य जिन कामोंमें सदैव लगा रहताहै अथवा जिन बातोंका बारबार अनुभव करताहै बहुधा उन्हीं कामोंमें उस्की बुद्धि दौड़तीहै और किसी सावधान मनुष्यकी बुद्धि किसी अनूठे काममें दोडीभी तो उसे काममें लानेंके लिये बहुत करके मौका नहीं मिलता. देशकी उन्नति अवनतिका आधार वहांके निवासियों की प्रकृतिपरहै. सब देशोंमें सावधान और असावधान मनुष्य रहते हैं परंतु जिस देशके बहुत मनुष्य सावधान और उद्योगी होते हैं उस्की उन्नति होती जाती है और जिस देशमें असावधान और कमकस बिशेष होतेहैं उस्की अवनति होती जातीहै. हिंदुस्थान में इस्समय और देशोंकी अपेक्षा सच्चे सावधान बहुत कम हैं और जो हैं वे द्रव्यकी असंगतिसे, अथवा द्रव्यवानोंकी अज्ञानतासे, अथवा उपयोगी पदार्थोंकी अप्राप्तिसे, अथवा नई, नई युक्तियोंके अनुभव करनें की कठिनाइयोंसे, निरर्थक से हो रहे हैं और उन्की सावधानता बनके फूलोंकी तरह कुछ उपयोग किये बिना वृथा नष्ट होजाती है परंतु हिंदुस्थान में इस्समय कोई सावधान न हो यहबात हरगिज़ नहीं है"

"मेरेजान तो आजकल हिंदुस्थान में बराबर उन्नति होती जाती है. जगह, जगह पढ़नें लिखनें की चर्चा सुनाई देती है, और लोग अपना हक़ पहचान्नें लगे हैं" बाबू बैजनाथनें कहा.

"इन सब बातों में बहुतसी स्वार्थपरता और बहुतसी अज्ञानता मिलीहुईहै हकीकत में देशोन्नति बहुत थोड़ी है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जो लोग वे अपनें बापदादोंका रोजगार छोड़कर केवल नोकरीकेलिये पढ़तेहैं और जो देशो-

तिके हेतुचर्चा करतेहैं उन्काल्क्ष अच्छा नहींहै वे शोथीबातों पर बहुतहल्ला मचातेहैं रंतु विद्याकी उन्नति, कलोंकेमचार, पृथ्वीके पैदावारबढानें की नई, नई युक्ति और ाभदायक व्यापारादि आवश्यक बातों पर जैसा चाहिये ध्यान नहीं देते जिस्से अपनें हांका घाटा पूरा हो. मैं पहले कह चुकाहूं कि जिन मनुष्यों की जो वृत्तियां मबल ोतीहैं वह उन्को खींचखांचकर उसी तरफ लेजातीहैं सो देखलीजिये कि हिंदुस्थान में तनें दिन से देशोन्नति कि चर्चा होरहीहै परन्तु अबतक कुछ उन्नति नहीं हुई और ान्स वालों को जर्मनीवालों से हारे अभी पूरे दस बर्स नही हुए जिस्में फ्रान्सवालों नें च्ची सावधानी के कारण ऐसी उन्नति करली कि वे आज सब सुधरी हुई बलायतों से ागे दिखाई देते हैं. ”

"अच्छा! आपके निकट सावधानी की पहचान क्याहै? ” लाला मदनमोहननें पूछा.

" सुनिये ” लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " जिसतरह पांच, सात गोलियें बराबर, राबर चुनदी जायें और उन्में से सिरे की एक गोली को हाथ से धक्का देदिया जाय ो हाथ का बल, पृथ्वी की आकर्षणशक्ति, हवा आदि सब कार्य कारणों के ठीक, ीक जान्नेसै आपस्में टकरा कर अन्त की गोली कितनी दूर लुढकैगी इस्का अन्दाज होसक्ता है इसी तरह मनुष्यों की प्रकृति और पदार्थों की जुदी, जुदी शक्ति का परस्पर संबन्ध विचार कर दूर और पास की हरेक बात का ठीक परिणाम समझलेना पूरी सावधानी है परन्तु इन बातों को जान्नें के लिये अभी बहुतसे साधनों की कसरहै और किसी समय यह सब साधन पाकर एक मनुष्य बहुत दूर, दूर की बातों का ठीक परिणाम निकाल सके यह बात असंभव मालूम होती है तथापि अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो मनुष्य इस राह पर चले वह अपनें समाज मे साधारण रीति से सावधान समझा जाताहै. एक मोमबत्ती एक तरफ से जलती हो और दूसरी दोनों तरफ जलती हो तो उस्के बर्तमान प्रकाश पर न भूलना परिणाम पर दृष्टि करना सावधानी का साधारण काम है और इसी से सावधानता पहचानी जाती है. ”

" आपनें अपनी सावधानता जतानें के लिये इतना परिश्रम करके सावधानी का वर्णन किया इस लिये मै आपका बहुत उपकार मान्ता हूं ” लाला मदनमोहन नें हंस कर कहा.

" वाजबी बात कहनें पर मुझको आप से ये तो उम्मेदही थी. ” लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया, और लाला मदनमोहन से रुख़सत होकर अपनें मकान को रवानें हुए.

प्रकरण ८

सबमें हां (!)

" एकै साधे सब सधें सबसाधे सब जाहिं
जो गहि सींचे मूलकों फूलैं फलैं अघाहिं
कबीर.

" लाला ब्रजकिशोर बातें बनानेमें बड़े होशयारहैं परंतु आपनें भी इससमय उन्को ऐसा मंत्र सुनाया कि वह बंदहो होगए" मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

" मुझको तो उन्की लंबी चोड़ी बातोंपर लुक्मानकी वह कहावत याद आ जिस्में एक पहाड़के भीतरसे बड़ी गड़गड़ाहट हुए पीछे छोटीसी मूसी निकली थी" मास्टर शिभूदयालनें कहा.

" उन्की बातचीतमें एक बड़ा ऐब यहथा कि वह बीचमें दूसरे को बोलनेका अव बहुत कमदेतेथे जिस्से उन्की बात अपनें आप फीकी मालूम होनें लगतीथी" बैजनाथनें कहा.

" क्या करें? वह वकीलहैं और उन्की जीविका इन्हीं बातोंसे है" हकीम अहमदहुसेन बोले.

" उन पर क्याहै अपना, अपना काम बनानेंमें सबही एकसे दिखाई देते हैं" पंडित पुरुषोत्तमदासनें कहा.

" देखिये सवेरे वह काचोंकी खरीदारी पर इतना झगडा करतेथे परंतु मनमें का यल होगए इस्से इससमय उन्का नाम भी न लिया" मुनशी चुन्नीलालनें याद दिलाई.

" हां; अच्छी याद दिलाई, तुम तीसरे पहर मिस्टर ब्राइटके पास गयेथे? क कीमत क्या ठैरी?" लालामदनमोहननें शिभूदयाल से पूछा.

" आज मदरसेसे आनेंमें देर होगई इस्से नहीं जासका" मास्टर शिभूदयाल जबाबदिया. परंतु यह उस्की बनावट थी असलमें मिस्टर ब्राइट नें लालामदनमोह का भेद जान्नेके लिये सौदा अटका रक्खाथा.

" मिस्टर रसलको दसहज़ार रुपे भेजनें हैं उन्का कुछ बंदोबस्त होगया." चुन्नीलाल नें पूछा.

" हां लाला जवाहरलालसे कहदियाहै परंतु मास्टर साहब भी तो बंदोबस्त करा कहतेथे इन्हों नें क्या किया?" लाला मदनमोहननें उलट कर पूछा.

"मैंनें एक, दो जगह चर्चा की है पर अबतक किसीसे पकावट नहीं हुई" मास्टर [illegible] जबाब दिया.

हैं, तौर पर्यो भी जान्ते हैं।" पंडित पुरुषोत्तमदास नें जवाब दिया, और इस प्र
ताम मे एक दूसरे की तरफ़ देख कर मुस्करानें लगे.

"और तार ?" मुनशी चुन्नीलाल नें रही सही कलई खोलनें के वास्ते पूछा.

"इस्में कुछ योग विद्या की कला मालूम होती है।" इतनी बात कहकर पं
रुषोत्तमदास चुप होते थे परन्तु लोगों को मुस्कराते देखकर अपनी भूल सुधारने
को झट पट बोल उठे कि "कदाचित् योग विद्या न होगी तो तार भीतर से पो
ला होगा जिस्में होकर आवाज़ जाती होगी या उस्के भीतर चिट्ठी पहुंचानें के लिये
परही होगी।"

"क्यों दयालु! बेलून § कैसा होता है ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"हम सब बातें जान्ते हैं परन्तु तुम हमारी परीक्षा लेनें के वास्ते पूछते हो इस
लि हम कुछ नहीं बताते" पंडितजी नें अपना पीछा छुडाने के लिये कहा. परन्तु शिभू
याल नें सब को जता कर झूटे छिपाव से इशारे में पंडितजी को उडनें की चीज
पर पंडितजी तत्काल बोल उठे "हमको परीक्षा देनेंकी क्या जरूरतहै ? परन्तु
समय न बतावेंगे तो लोग बहाना समझेंगे. बेलून पतंग को कहते हैं."

"वाह, वा, वाह! पंडितजीनें तो हद कर दी इस कलि काल में ऐसी विद्या कि
को कहां आसक्ती है!" मुनशी चुन्नीलाल नें कहा.

"हां पंडितजी महाराज! हुल्क किस जानवर को कहते है ?" हकीम अहमदहुसैन
नें नया नाम बना कर पूछा.

"एक चोपाया है" मुनशी चुन्नीलाल नें बहुत धीरी आवाज़ से पंडितजी को सु
कर शिभूदयाल के कान में कहा.

"और बिना परों के उडता भी तो है" मास्टर शिभूदयाल नें उसी तरह
लाल को जवाब दिया.

"चलो चुप रहो देख पंडितजी क्या कहते हैं" चुन्नीलाल नें धीरे से कहा.

"जो तुमको हमारी परीक्षाही लेनी है तो लो, सुनो हुल्क एक चतुष्पद ज
विशेष है और बिना पंखोंके उडसक्ताहै" पंडितजी नें सबको सुनाकर कहा.

"यहतो आपनेंबहुत पहुंचकरकहापरंतु उस्की शक्लबताइये"हकीमजी हुज्जतकरनेंलगे

"जो शक्लही देखनी होतो यह रही" बाबूबैजनाथनें मेजपरसे एक छोटासा का
उठाकर पंडितजीके सामनें कर दिया.

† देशभाषा में बाफ और बिजली की शक्ति के वृत्तान्त न प्रकाशित होनें का यहफलहै कि
अब तक सर्व साधारण रेल और तार का भेद कुछ नहीं जान्ते.

§ ... ... का गुबारा.

इसपर सब लोग खिल खिलाकर हँस पडे.

"यह सब बातें तो आपनें बतादीं परंतु इस रागका नाम न बताया" लाला मदनमोहननें हँसी थमे पीछे कहा.

"इससमय मेरा चित्त ठिकानें नहीं है मुझको क्षमा करो" पंडित पुरुषोत्तमदासनें शरमान कर कहा.

"बस महाराज! आपको तो करेलाही करेला बताना आताहै और कुछभी नहीं आता" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"नहीं साहब! पंडितजी अपनी बिद्या में एकही हैं" "रेल और तार का हाल क्या ठीक, ठीक बतायाहै!" "और बेलूनमें तो आपही उडचले!" "हुक्ककी सूरतभी तो आपही नें दिखाईथी!" "और सबसे बढकर रागका रसभीतो इनहीनें लियाहै" चारों तरफ लोग अपनी अपनी कहनें लगे.

पंडितजी इनलोगों की बातें सुन, सुनकर लज्जाके मारे धरतीमें गढे जातेथे पर कुछ बोल नहीं सक्तेथे.

आखिर यह दिल्लगी पूरी हुई तब बाबूबैजनाथ लाला मदनमोहन को अलग लेजाकर कहनें लगे "मैंनें सुनाहै कि लाला ब्रजकिशोर दो, चार आदमियोंको पक्का करके यहां नये सिरसे कालिज स्थापन करनें के लिये कुछ उद्योग कर रहेहैं यद्यपि सब लोगोंके निरुत्साह से ब्रजकिशोरके कृतकार्य होनें की कुछ आशा नहीं है तथापि लोगों को देशोपकारी बातों में अपनी रुचि दिखानें और अवसर बन्नेके लिये आप इस्में जरूर शामिल होजायं अखबारों में धूम मैं मचादूंगा यह समय कोरी बातों मे नाम निकालनें का आगयाहै क्योंकि ब्रजकिशोर नामवरी नहीं चाहते इसीलिये मैं चलाकर आपको चेतानें केलिये इससमय आपके पास आयाथा"

"आपकी बडी महरबानी हुई मैं आपके उपकारोंका बदला किसी तरह नहीं देसक्ता किसीनें सच कहा है "हितहि पराये आपनो अहित अपनपोजाय ॥ बनकी औषधि प्रिय लगत तनको दुख न सुहाय ॥ + ऐसा हितकारी उपदेश आपके बिना और कौन देसक्ताहै" लाला मदनमोहननें बडी प्रीति से उनका हाथ पकडकर कहा.

और इसी तरह अनेक प्रकारकी बातोंमें बहुत रात चलीगई तब सब लोग रुख्सत होकर अपनें, अपनें घर गए.

+ परोपि हितवान् बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः ॥ अहितो देहजो व्याधि र्हितमारण्यमौषधम्

प्रकरण ९

सभासद

धर्मशास्त्र पढ़, वेद पढ़ दुर्जन सुधरे नाहि
गो पय मीठो प्रकृति ते प्रकृति प्रबल सब माहि ।

हितोपदेश,

इससमय मदनमोहन के वृत्तान्त लिखनें से अवकाश पाकर हम
ला मदनमोहन के सभासदों का पाठक गण को विदित करते हैं. इन्में मुख्य
नशी चुन्नीलाल स्मर्ण योग्य है.

मुनशी चुन्नीलाल प्रथम ब्रजकिशोर के यहां दस रुपे महीनें का नौकर था
इस्को कुछ, कुछ लिखना पढ़ना सिखाया था , उन्हीं की संगति में रहनें से इस्
भाचातुरी आगई थी, उन्हीं के कारण मदनमोहन से इस्की जान पहचान हुई
रन्तु इस्के स्वभाव में चालाकी ठेठ से थी इस्का मन लिखनें पढ़नें में कम
ा पर इस्ने बड़ी, बड़ी पुस्तकों में से कुछ, कुछ बातें ऐसी याद कर रक्खी थीं
ए आदमी के सामनें झड़ बांध देता था स्वार्थ परता के सिवाय परोपकार की
ाम को न थी पर ज़बानी जमा खर्च करनें और कागज़ के घोड़े दौड़ानें में यह
ुरंधर था: इस्की प्रीति अपना प्रयोजन निकालनें के लिये, और धर्म्म लोगों को
के लिये था. यह औरों से बिवाद करनें मैं बड़ा चतुर था परन्तु इस्को अपना
चलन सुधारनें की इच्छा न थी. यह मनुष्यों का स्वभाव भलीभांत पहचानता
परन्तु दूर दृष्टि से हरेक बात का परिणाम समझलेनें की इस्को सामर्थ्य न थी.
तोड़ की बातों मैं यह इयागो का अवतार था. कणिक की नीति पर इस्का पूरा
श्वास था. किसी बड़े काम का प्रबंध करनें की इस्को शक्ति न थी परन्तु बातों
धरती और आकाश को एक करदेता था इस्के काम निकालनें के ढंग दुनियासे निराले
थे. यह अपनें मतलब की बात बहुधा ऐसे समय करता था जब दूसरा किसी
काम में लगरहा हो जिस्सै इस्की बात का अच्छी तरह विचार न कर सके अ
यह काम की बात करती वार कुछ, कुछ साधारण बातों की ऐसी चर्चा छेड़
था जिस्सै दूसरे का मन बटा रहे अथवा कोई बात रुचि के बिपरीत अंगिकार क
होती थी तो यह अपनी बातोंमें हर तरह का बोझ इसढबसै डाल देताथा कि इ
इन्कार न करसके कभी, कभी यह अपनी बातों को इस युक्ति से पुष्ट करजाता

---

१ न धर्म्मशास्त्रं पठतीति कारणं न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः ।
स्वभाव एवात्र तथा तिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः ॥

सुन्नें वाले तत्काल इस्का कहना मान लेते. जो काम ये अपनें स्वार्थ के लिये करत
उस्का प्रयोजन सब लोगों के आगे और ही बताता था आर अपनी स्वार्थ परता छिपाने
के लिये बडी आनाकानीसे वह बात मंजूर करताथा यह अपनें बैरी की व्याजस्तुति
इस ढब से करजाता था कि लोग इस्का कहना इस्की दयालुता और शुभचिन्तकता से
समझनें लगतेथे. जिस्बात के सहसा प्रगट करनें में कुछ खट्का समझता उस्का प्रथम
इशारा कर देता था और सुन्नेंवाले के आग्रह पर रुक, रुक वह बात कहता था. जो
ही बात लोगों पर डाल कर कहता था अथवा शिभूदयाल वगेरे के मुख से कहव
देया करता था और आप साधनें को तयार रहता था. तुच्छ बातों को बढा कर
बड़ी बातों को घटा कर, अपनी तरफ़ से लौन मिर्च लगाकर, कभी प्रसन्न, कभी उदास
कभी क्रोधित, कभी शान्त होकर यह इस रीतिसे बातकहता था कि जो कहता थ
उस्की मूर्ति बन जाता था. इस्के मनमें संग्रह करनें की वृत्ति सब से प्रबल थी.

मुनशी चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के यहां नौकर था जब अपनी चालाकी से बहुध
मुक़द्दमें वालों को उलट पुलट समझा कर अपना हक ठैरा लिया करता था. स्टाम्प
तल्बाने वगेरे के हिसाब में उन लोगों को धोका देदिया करता था बल्कि कभी, कभ
प्रतिपक्षी से मिलकर किसी मुक़द्दमेंवाले का सबूत वगेरे भी गुप चुप उस्को दिवा दिय
करता था. ब्रजकिशोर नें ये भेद जान्ते ही पहले उसे समझाया फिर धमकाया जब
इस्पर भी राह में न आया तो घर का मार्ग दिखाया. इस्नें पहले ही से ब्रजकिशोर क
मन देख कर लाला मदनमोहन के पास अपनी मिसल लगाली थी हरकिशोर को
अपना सहायक बना लिया था. लाला ब्रजकिशोर के पास से अलग होते ही लाल
मदनमोहन के पास रहनें लगा.

मुनशीचुन्नीलालनें लाला मदनमोहन के स्वभाव को अच्छी तरह पहचान लियाथा
लाला मदनमोहन को हाकमोंकी प्रसन्नता, लोगोंकी वाह वाह, अपनें शरीर का सुख
और थोड़े खर्चमें बहुत पैदा करनें के लालच सिवाय किसी काममें रुपया खर्च करन
अच्छा नहीं लगताथा पर रुपया पैदा करनें अथवा अपनें पासकी दौलत को बच
रखनें के ठीक रस्ते नहीं मालूम थे इसलिये मुनशीचुन्नीलाल उस्को उस्की इच्छा
नुसार बातें बनाकर खूब लूटताथा.

मास्टर शिभूदयाल प्रथम लाला मदनमोहन को अंग्रेजी पढ़ानें के लिये नौक
रक्खा गयाथा पर मदनमोहन का मन बचपनमें पढ़नें लिखनें की अपेक्षा खेल कूद
अधिक लगताथा. शिभूदयालनें लिखनें पढ़नेंकी तकरार की तो मदनमोहन का म
बिगड़नें लगा. मास्टर शिभूदयाल खानें, पहन्नें, देखनें, सुन्नें, का रसिकथा और लाल
मदनमोहनके बिना अंग्रेजी नहीं पढ़ी इसलिये मदनमोहन ने मेल करनें में इस

भांत अपना लाभ समझा पढ़ानें लिखानें के बदले मदनमोहन बालकपन से अलिफ़लैलामें से सोते जागते का क़िस्सा, शेक्सपियर के नाटकोंमें से कोमेडी आफ एरर्स, ट्वेल्फ्थनाइट, मचएडू एबाउट नथिंग; बेनजान्सनका एव्रीमेन इनहिज़ ह्यूमर, स्विफ्टके ट्रैवल्सऔर लेटर्स, गुलिवर्स ट्रैवल्स, टेल आफ ए टब; आदि सुनाकर हंसाया करता था और इस युक्तिसे उसको, टोपी, रुमाल, घड़ी, छड़ी आदिका बहुधा फ़ायदा होताथा. जब मदनमोहन तरुण हुआ तो अलिफ़लैलामें से अबुलहसन, और ... हार का क़िस्सा; शेक्सपियर के नाटकों में से रोमयो ऐन्ड जुलियट आदि सुनाकर आदि रस का रसिक बनानें लगा और आप भी उसके साथ फूलके कीड़े की तरह ... रनें लगा. परंतु यह सब बातें मदनमोहनके पिता के भय से गुप्त होती थीं ... होतीथीं इसीसे शिभूदयाल आदिका बहुत फ़ायदाथा वह पहाड़ी आदमियोंकी ... की राहमें अच्छी तरह चल सक्ताथा परंतु समभूमि पर चलनेंकी उसको आदत ... जब चुन्नीलाल मदनमोहनके पास आया कुछ दिन इनदोनों की बड़ी खटपट रही ... अंतमें दोनों अपना हानि लाभ समझकर गरम लोहे की तरह आपसमें मिलगए. शि... दयालको मदनमोहननें सिफ़ारश करके मदरसे में नोकर रखा दियाथा इस्कारण ... मदनमोहनकी अहसानमंदीके बहानें से हर वक्त वहां बना रहताथा.

पंडित पुरुषोत्तमदास भी बचपनसे लाला मदनमोहनके पास आते जातेथे इन्को लाला मदनमोहन के यहांसे इन्के स्वरूपानुरूप अच्छा लाभ होजाता था परंतु ... मनमें औरों की डाह बड़ी मबलथी. लोगों को धनवान, मतापवान, विद्वान, ... सुंदर, तरुण, सुखी और कृतिकार्य देखकर इन्हें बड़ा खेद होताथा वह ... से सदा शत्रुता रखतेथे औरोंको अपनें सुख लाभका उद्योग करते देखकर कुढ़ ... अपनें दुखिया चित्त को धैर्य देनेंके लिये अच्छे, अच्छे मनुष्योंके छोटे, छोटे दोष ... करतेथे किसी के यशमें किसी तरह का कलंक लगजानें से यह बड़े मसन्न ... पापी दुर्योधनकी तरह सब ससार के बिनाश होनेंमे इन्की मसन्नताथी. और अप... सर्वज्ञता बतानेंके लिये जानें बिना जानें हर काम मे पांव अड़ादेतेथे. मदनमोहन... मसन्न करनें के लिये अपनी चिड़ करेले की कर रखीथी. चुन्नीलाल और शिभूदयाल आदि की कटती कहनेंमे कसर न रखतेथे परंतु अकल मोटीथी इस लिये उन्होंनें ... खिलौना बना रक्खाथा. और परकैंच कबूतर की तरह वह इन्हें अपना बसबर्ती रखे...

हकीम अहमदहुसैन बड़ा कमहिम्मत मनुष्यथा इस्को चुन्नीलाल और शिभूदयाल ... मे कुछ मीति न थी परंतु उन्कोकर्ता समझकर अपनें नुक्सान के डरसे यह सदा ... किया करता था उन्हीं को अपना सहायक बना रक्खाथा उन्के पीछे ब...

मदनमोहन के पास नहीं जाता आताथा और मदनमोहन की बड़ाई तथा चुन्नीलाल और शिभूदयाल की बातोंको पुष्ट करनें के सिवाय और कोई बात मदनमोहन के आगे मुखसे नहीं निकालता था मदनमोहन के लिये औषधि तक मदनमोहन के इच्छानुसार बताई जातीथी मदनमोहन का कहना उचित हो, अथवा अनुचितहो यह उस्की हांमें हां मिलानें को तयार था मदनमोहनकी राय के साथ इस्को अपनी राय बदलनेंमें भी कुछ उज्र न था ! "यह लालाजी का नोकरथा कुछ बैंगनोंका नोकर नहीं था" परंतु इनलोगों की प्रसन्नता में कुछ अंतर न आताहो तो यह ब्रजकिशोर की कहनमें भी सम्मति करनें को तैयार रहताथा इस्को बड़े, बड़े कामोंके करनेंकी हिम्मत तो कहांसे आती छोटे, छोटे कामों से इस्का जी दहलजाताथा अजीर्ण के डर से भोजन न करनें और नुक्सान के डरसे व्यापार न करनें, की कहावत यहां प्रत्यक्ष दिखाई देतीथी. इस्को सब कामों में पुरानी चाल पसंदथी.

बाबू बैजनाथ ईस्ट इन्डियन रेल्वे कपनी में नौकर था अंग्रेजी अच्छी पढा था. यूरुप के सुधरे हुए विचारों को जान्ताथा परंतु स्वार्थपरतानें इस्के सब गुण ढक रक्खेथे विद्या थी पर उस्के अनुसार व्यवहार न था "हाथीके दांत खानें के और दिखानें के और थे" इस्के निर्वाह लायक इससमय बहुत अच्छा प्रबंध होरहाथा परंतु एक संतोष बिना इस्के जीको ज़राभी सुख न था. लाभसे लोभ बढता जाता था और समुद्र की तरह इस्की तृष्णा अपारथी. लोभसेधर्म्म,अधर्म्मका कुछ बिचार नरहताथा. बचपन में इस्को इल्ममुसल्लिस, तहरीरउक्लैदस और जब्रमुकाबले वग़ैरे के सीखनें में परीक्षा के भयसे बहुत परिश्रम करना पड़ाथा परंतु इस्के मनमें धर्म्म प्रवृत्तिके उत्तेजित करनें के लिये धर्म्म नीति आदिके असरकारक उपदेश अथवा देशोन्नतिके हेतु बाफ और बिजली आदिकी शक्ति, नई, नई कलोंका भेद, और पृथ्वी की पैदावार बढानें के हेतु खेती बाड़ी की विद्या, अथवा स्वछंदतासे अपना निर्वाह करने के लिये देशदशा के अनुसार जीविका करनें की रीति और अर्थ विद्या, तन्दुरुस्ती के लिये देह रक्षाके तत्व द्रव्यादि की रक्षा और राजाज्ञा भंगके अपराधसे बचनेंको राजाज्ञा का तात्पर्य, अथवा, बड़े और बराबर वालोंसे यथायोग्य व्यवहारकरनें के लिये शिष्टाचार का उपदेश बहुतही कम मिलाथा बल्कि नहीं मिलनेंके बराबरथा इसके कई वर्ष तो केवल अंग्रज़ी भाषा सीखनें में विद्या के द्वारपर खड़े, खड़े बीतगये जो अंग्रेज़ों की तरह ये शिक्षा अपनी देश भाषा में होती अथवा काम, कामकी पुस्तकों का अपनी भाषामें अनुवाद होगया होतातो कितना समय व्यर्थ नष्ट होनेंसे बचता ! और कितनें अधिक लोग उस्से लाभ उठाते! परंतु प्रचलित रीतिके अनुसार इस्को सच्ची हितकारी शिक्षा नहींहुईथी जिस्का

भिमान इतना बढगयाथा कि बडे बुढे मुर्ख मालूम होनेंलगे और उन्के कामसे ...
गई पर इस विद्वत्ता में भी सिवाय नोकरीके और कहीं ठिकाना नथा ...
दरसा छोड़तेही रेलवे की नोकरी मिलगई पर बाबूसाहब को इतनें पर संतोष न हु
ह और किसी बुर्दकी ताक झांक में लगरहेथे इतनेंमें लालामदनमोहनसे मुला
गई एक बार लाला मदनमोहन आगरे लखनऊकी सेर को गए उस्समय इस्ने स्
टेशन पर बड़ी ख़ातिर कीथी उसी समयसे इन्की जानपहचान हुई. यह दूसरे दि
न लाला मदनमोहनके यहां जाताथा और समाबांध कर तरह, तरह की बातें ..
करताथा. इस्की बातों सै मदनमोहन के चित्त पर ऐसा असर हुआ कि वह इस्
ब से अधिक चतुर और बिश्वासी समझनें लगा इस्नें अपनी युक्ति से चुन्नील
गैरे को भी अपना बना रक्खा था पर अपनें मतलबसे निश्चिन्त नथा. यह सब
ान बूझकर. भी धृतराष्ट्रकी तरह लोभसै अपनें मनको नहीं रोकसक्ताथा.

खेदहै कि लाला ब्रजकिशोर और हरकिशोर आदिके बृत्तान्त लिखनें का अवका
स्समय नहीं रहा. अच्छा फिर किसी समय विदित किया जायगा पाठक गण धैर्य रक्

प्रकरण १०.

प्रबंध (इन्तज़ाम)

कारज को अनुबंध लख अरु उत्तरफल चाहि
पुन अपनी सामर्थ्य लख करै कि न करै ताहि *

बिदुरप्रजागरे.

सवेरेही लाला मदनमोहन हवा ख़ोरी के लिये कपड़े पहनरहेथे मुनशी चुन्नील
और मास्टर शिंभूदयाल आचुकेथे.

"आजकल में हमको एकबार हाकिमों के पास जानाहै" लाला मदनमोहन नें क
"ठीकहै, आपको म्युनिसिपेलीटी के मेम्बर बनानें की रिपोर्टहुई थी उस्की मंज़
भी आगई होगी" मुनशीचुन्नीलाल बोले.

"मंज़ूरी में क्या संदहहै? ऐसे लायक़ आदमी सरकार को कहां मिलेंगे?" मा
शिंभूदयालनें कहा.

"अभीतो (खुशामदमें) बहुत कसरहै! सादगयथृम के सभासद डायोनिस्यस
थूक चाट जातेथे और अमृतसे अधिक मीठा बतातेथे" लाला ब्रजकिशोरनें कमरे
आतेही कहा.

* [illegible] ॥ प्रयान मानस मेव धीरः कुर्वीत वा नरा

एक टीले के पीछे से निकलआए
जाते थे उससमय दो साधारण मनुष्य
लूटनें लगे उन्में एक के पास लाठी थी और दूसरे के हाथ में एक पत्थर था.
उन्को देखते ही उस बलवान पुरुष के हाथ पांव फूल गए! तीर कमान छूट
में हमको अपनें सब वस्त्र शस्त्र देकर उन्से पीछा छुड़ाना पड़ा. बहुधा अब
आताहै कि अच्छे प्रबन्ध बिना घरमें माल होनें पर किसी, किसी साहूकार का
निकल जाता है और रुपे का माल दो, दो आनें को बिकता फिरता है"

"परन्तु काम किये बिना अनुभव कैसे होसक्ता है?" मुन्शी चुन्नीलालनें

"सावधान मनुष्य काम करनें से पहले औरों की दशा देख कर हरेक बात
अनुभव अच्छी तरह कर सक्ता है और अनायास कोई नया काम भीउस्को
तो साधारण भावसे प्रबन्ध करनें की रीति जान कर और और बातों के अनुभ
लाभ लेनेंसे काम करते, करते वह मनुष्य उस बिषय में अपना अनुभव अच्छी
बढ़ा सक्ता है सो मैं प्रथम कह चुका हूं कि लाला साहब प्रबन्ध करनें की रीति
जायंगे तो हरेक काम का प्रबन्ध अच्छी तरह कर सकैंगे" लाला ब्र
जवाब दिया.

"आपकें निकट प्रबन्ध करनें की रीति क्या है?" लाला मदनमोहननें पू

"हरेक काम के प्रबन्ध करनें की रीति जुदी, जुदी हैं परन्तु मैं साधा
से सब का तत्व आपको सुनाता हूं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "सावधा
हायता लेकर हरेक बातका परिणाम पहले से सोच लेना, और उन सब पर
दृष्टि करके जितना अवकाश हो उतनें ही में सब बातों का ब्योंत बना लेना
चीज़ोंको काममें लानेंकी युक्ति सोचते रहना और जो, जो बातें आगे होनेंवा
हों उन्का प्रबन्ध पहलै ही से दूर दृष्टि पहुंचा कर धीरे, धीरे इसभांत करते
समय पर सब काम तयार मिलें, किसी बात का समय न चूकनें पावै,
उलट पलट न होनें पावै, अपनें आस पास वालों की उन्नति सें आप पीछे
नोकर का अधिकारस्वतन्त्रता की हद से आगे न बढनें पावै, किसी पर जुल्म
किसी के हक़ में अन्तर न आनें पावै, सब बातों की सम्हाल उचित स
रहे, परन्तु ये सब काम इन्की बारीकियों पर दृष्टि रखनें से कोई नहीं कर
इस रीति से बहुत महनत करनें पर भी छोटे, छोटे कामों में इतना समय
कि उस्के बदले बहुत से ज़रूरी काम अधूरे रहजाते हैं और तत्काल प्रब
ताहै इसलिये बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि काम बांट कर उन्पर योग्य
रकदे और उन्की काररवाई पर आप दृष्टि रक्खे पहले अंदाज से वि
मूलसुधारता जाय एक साथ बहुत कामनछेड़े, काम करनेंके
थोड़ा खर्च हो और कुपात्रको कुछनदिया जाय महाराज राम

कते है " आमदपूरी होत है ! खर्च अल्पदरसाय, ॥ देतनकबहुं कुपात्रकों कहहु भ
मुझाय "+

इसीतरह इन्तजामके कामोंमें जराआयतमें बडाबिगाड होता है हजरत स
कहते हे "जिससेंतेंनेदोस्ती कीउरसें नोंकरीकी आशानरख" ‡

"लाला ब्रजकिशोर साहब आज कल की उन्नति के साथी हैं तथापि पुरा
काल के अनुसार रोचक और भयानक बातों को अपनी कहन में इस तरह मिला
ई कि किसी को बिल्कुल खबर नहीं होनें पाती " मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"नहीं मैं जो कुछ कहताहूं अपनी तुच्छबुद्धि के अनुसार यथार्थ कहताहूं " ल
ब्रजकिशोर कहने लगे "चीनके शहनशाह हीएनने एकबार अपनें मंत्री दिचोसे पू
कि " राज्य के वास्ते सब से अधिक भयंकर पदार्थ क्या है ? " मंत्रीनें कहा " मूर्ति
भीतर का मूसा " शहनशाहनें कहा " समझाकर कह " मंत्री बोला " अपनें यहां व
की पोली मूर्ति बनाई जाती है और ऊपरसे रंगदी जाता है अब दैवयोग से कोई
उस्के भीतर चलागया तो मूर्ति खंडित होंनेंके भयसे उस्का कुछ नहीं कर सक्ते. इसीत
हरेक राज्य में बहुधा ऐसे मनुष्य होते हैं जो किसी तरह की योग्यता और गुण वि
केवल राजाकी कृपा के सहारे से सब कामोंमें दखल देकर सत्यानास किया क
है परतु राजाके डरसे लोग उन्का कुछ नहीं कर सक्ते " हां जो राजा आप म
करनें की रीत जान्तेंहैं वह उन लोगों के चक्कर से खूबसूरती केसाथ बचे रहते
जैसे ईरानके बादशाह आरटाजरकसीस से एक बार उस्के किसी कृपापात्रनें कि
अनुचित काम करनें के लिये सवाल किया बादशाहनें पूछा कि " तुझको इस्से क
लाभ होगा ? " कृपापात्रनें बतादिया तब बादशाहनें उतनी रक़म उसको अपनें ख़
से दिवादी और कहा कि " ये रुपे ले इन्के देनें से मेरा कुछ नहीं घटता परंतु
जो अनुचित सवाल कियाथा उस्के पूरा करनें से मैं निस्सदेह बहुत कुछ खोबैठत
उचित प्रबंध में जरासा अंतर आनें में कैसा भयंकर परिणाम होताहै इसपर वि
करिये कि इसी दिल्लीके तख्त बाबत दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच युद्ध हु
उससमय औरंगजेब की पराजय में कुछ संदेह नथा परंतु दाराशिकोह हाथीसे उत
ही मानों तख्तसें उतरगया मालिक का हाथी खाली देखतेही सब सेना तत्क
भाग निकली. "

" महाराज ! बग्गी तैयार है. " नोकरनें आकर रिपोर्टकी.

+ आयस्ते विपुलः कश्चित्कश्चित्स्वल्पतरो व्ययः ॥
अपात्रेषुनते कश्चित्कोषो गच्छतिराघव ॥

‡ भूंद्रदगरे दोस्तीकरदी तवक़ो खिदमत मदार ॥

" अच्छा चलिये रस्ते में बतलाते चलेंगे " लाला ब्रजकिशोरनें कहा.
निदान सब लोग बग्गी में बैठकर रवानें हुए.

प्रकरण ११.

सज्जनता+

सज्जनता न मिले किये जतन करो किन कोय
ज्यों कर फार निहारिये लोचन बड़ो न होय
वृन्द.

" आप भी कहां की बात कहां मिलानें लगे ! म्यूनिसिपेलीटी के मेम्बर होनें
र इन्तजाम की इन बातों से क्या संबध है ? म्यूनिसिपेलीटी के कार्य निर्वाह
क एक आदमी के सिर नहीं है उसमें बहुत से मेम्बर होते हैं और उन्में कोई न
दमी शामिल होजाय तो कुछ दिन के अभ्याससे अच्छी तरह वाक़िफ़ होसक्ता
र बराबरवालों से बात चीत करनें मे अपनें बिचार स्वतः सुधरते जाते हैं. और आ
ल के सुधरे बिचार जान्नें का सीधा रस्ता तो इस्से बढ कर और कोई नहीं है
शी चुन्नीलाल नें कहा.

" जिस तरह समुद्र मे नौका चलानेंवाले केवट समुद्र की गहराई नहीं जान स
ी तरह संसार में साधारण रीति से मिलनें भेटनेंवाले इधर उधर की निरर्थक बा
कुछ फ़ायदा नहीं उठासक्ते बाहर की सज धज और ज़ाहिर की बनावटसे स
ज्जनता का कुछ संबन्ध नहींहै वह तो दरिद्री धनवान और मूर्ख बिद्वान का भेद
ोड़ कर सदा मन की निर्मलता के साथ रहती है और जिस जगह रहतीहै उ
दा प्रकाशित रखतीहै " लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

" तो क्या लोगों के साथ आदर सत्कार से मिलना जुलना और उन्का यथो
शिष्टाचार करना सज्जनता नहीं है ? " लाला मदनमोहन नें पूछा.

" सच्ची सज्जनता मन के संग है " लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. " कुछ दिन
व अपनें गवर्नर जनरल मारक्किस• आफ रिपन साहब नें अजमेर के मेव कालि
हुतसे राजकुमारों के आगे कहा था कि " ‡ ‡ हम चाहे जितना प्रयत्न करें प
तुह्मारी भविष्यत अवस्था तुह्मारे हाथ है अपनी योग्यता बढ़ानी, योग्यता की
करनी, सत्कर्मों में प्रवृत्त रहना, असत्कर्मों से ग्लानि करना तुम यहां सीखजाओगे
निस्सन्देह सरकार मे प्रतिष्ठा, और प्रजा की प्रीति लाभ कर सकोगे. तुम
तमें राजकुमारों को बड़ी जोखों के काम उठानें पड़ेंगे और तुह्मारी कर्तव्यता
ों मनुष्यों के सुख दुःख का बल्कि जीनें मरनें का आधार रहैगा. तुम

कुलीन हो और बड़े विभववान हो. फ्रेंच भाषा मैं एक कहावत है कि जो अपनें सत्कुल का अभिमान रखता हो उस्को उचित है कि अपनें सत्कर्मों से अपना बचन प्रमाणिक करदे. तुम जान्ते हो कि अंग्रेज लोग बड़े, बड़े खिताबों के बदले सज्जन (Gentleman) जैसे साधारण शब्दों को अधिक प्रिय समझते हैं इस शब्द का साधारण अर्थ ये है कि मर्यादाशील, नम्र और सुधरे बिचार का मनुष्य हो, निस्सन्देह ये गुण यहां के बहुतसे अमीरों में हैं परन्तु इस्के अर्थ पर अच्छी तरह दृष्टि की जाय तो इस्का आशय बहुत गंभीर मालूम देताहै. जिस मनुष्य की मर्यादा, नम्रता और सुधरे बिचार केवल लोगों को दिखानें के लिये न हों बल्कि मनसें हों, अथवा जो सच्चा प्रतिष्ठित, सच्चा वीर और पक्षपात रहित न्यायपरायण हो, जो अपनें शरीर को सुख देनें के लिये नहीं बल्कि धर्म्म से औरों के हक़ में अपना कर्तव्य सम्पादन करनें के लिये जीता हो; अथवा जिस्का आशय अच्छा हो जो दुष्कर्मों से सदैव बचता हो वह सच्चा सज्जन है ! ! "

"निस्सन्देह सज्जनता का यह कल्पित चित्र अति विचित्र है परन्तु ऐसा मनुष्य पृथ्वी पर तो कभी कोई काहेको उत्पन्न हुआ होगा" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

हमलोग जहां खड़े हों वहांसे चारों तरफ़ को थोड़ी थोड़ी दूर पर पृथ्वी और आकाश मिले दिखाई देतेहैं परंतु हक़ीक़त मैं वह नहीं मिले इसी तरह संसार के सब लोग अपनी, अपनी प्रकृतिके अनुसार और मनुष्यों के स्वभाव का अनुमान करते हैं परंतु दर असल उन्मे बड़ा अंतरहै" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "देखो:—

"एथेन्स का निवासी आरिस्टाईडीज एक बार दो मनुष्यों का इन्साफ़ करनें बैठा तब उन्मे से एकनें कहा कि "प्रतिपक्षीनें आप को भी प्रथम बहुत दुख दिया है आरिस्टाईडीजनें जवाब दिया कि "मित्र! इसनें तुमको दुख दिया हो वह बताओ क्योंकि इससमय मैं अपना नहीं; तुह्मारा इन्साफ़ करताहूं"

"प्रीवरनमके लोगोंनें रूमके बिपरीत बल्वा उठाया उससमय रूमकी सेना ने वहांके मुखिया लोगोंको पकड़कर राजसभामैं हाज़िर किया उससमय प्लार्टीनियस नामी सभासदनें एक बंधुए से पूछा कि "तुह्मारे लिये कौन्सी सज़ा मुनासिबहै?" बंधुएनें जवाब दिया कि "जो अपनी स्वतंत्रता चाहनें वालोंके वास्तै मुनासिब है।" इस उत्तरमैं और सभासद अप्रसन्न हुए पर प्लार्टीनियस प्रसन्न हुआ और बोला "अच्छा! राजसभा तुह्मारा अपराध क्षमा करदे तो तुम कैसा बरताव रक्खो?" "जैसा हमारे साथ राजसभा रक्खे" बंधुआ कहनें लगा "जो राजसभा हमसे मानपूर्वक मेल करेगी तो हम सदा ताबेदार बनेरहैंगे परन्तु हमारे साथ अन्याय और अपमान से बरताव होगा तो हमारी वफ़ादारी पर सर्वथा बिश्वास न रखना" इस जवाबसै और सभासद अधिक बिगड़गए और कहनें लगे कि "इसनें राजसभा को धमकी दीगई है" प्लार्टीनियसनें समझाया कि "इसमैं धमकी कुछ नहीं दीगई यह एक स्वतंत्र मनुष्य का सच्चा जवाबहै"

द्रान प्लाटीनियस के समझानें से राजसभा का मन फिरगया और उसें उन्हें दें
ड़ दिया.

"मसीडोनके पादशाह पीरसनें रूमके कैदियोंको छोड़ा उस समय फेब्रीशियस न
क रूमी सरदारको एकांतमें लेजाकर कहा "मैं जान्ताहूं कि तुम जैसा वीर, गुण
तंत्र, और सच्चा मनुष्य रूमके राजभरमै दूसरा नहींहै जिसपर तुम ऐसे दरिद्री ब
यह बड़े खेदकी बातहै ! सच्ची योग्यताकी क़दर करना राजाओं का प्रथम कर्त
सलिये मे तुमको तुम्हारी पदवी के लायक़ धनवान बनाया चाहताहूं परंतु मैं
म्हारे ऊपर कुछ उपकार नहीं करता अथवा इसके बदले तुमसे कोई अनुचित
हीं लिया चाहता. मेरी केवल इतनी प्रार्थना है कि उचितरीतिसे अपना क
म्पादन किये पीछे न्याय पूर्बक मेरी सहायता होसके सो करना." फेब्रीशि
त्तर दिया कि "निस्संदेहमें धनवान नहीं हूं में एक छोटे से मकानमें रहताहूं और ज़
ा एक छोटासा क़िता मेरे पासहै. परंतु ये मेरी जरुरत के लिये बहुत है और ज़
ज्यादः लेकर मुझको क्या करनाहै ? मेरे सुखमें किसी तरह का अंतर नहीं
री इज्जत और धनवानों से बढ़करहै, मेरी नेकी मेरा धनहै मैं चाहता तो अ
हुतसी दौलत इकट्ठी करलेता परंतु दौलतकी अपेक्षा मुझको अपनी इज्जत प्य
स लिये तुम अपनी दौलत अपनें पास रक्खो और मेरी इज्जत मेरे पास रहनें दो.

"नोशेरवां अपनी सेना का सेनापति आप था एक बार उस्की मंज़ूरी से
चीनें तनख़्वाह बांटनेंके वास्ते सब सेना को हथियार बंद होकर हाज़िर होनेंका
दया पर नोशेरवां इस हुक्मसे हाज़िर नहुआ इस लिये ख़ज़ान्चीनें क्रोधकरके
नाको उल्टा फेरदिया और दूसरी बार भी ऐसाही हुआ तब तीसरी बार ख़ज़ा
डी पिटवाकर नोशेरवांको हाज़िर होनेंका हुक्म दिया. नोशेरवां उस हुक्म के
ार हाज़िर हुआ परंतु उस्की हथियार बदी ठीक न थी. ख़ज़ान्चीनें पूछा "तुह्मारे
की फालतू प्रत्यंचा कहांहै ?" नोशेरवांनें कहा "महलोंमें भूल आया" ख़ज़ा
हा "अच्छा ! अभी जाकरले आओ" इसपर नोशेरवां महलोंमें जाकर प्रत्यंचा ले
ब सब की तनख़्वाह बटी परंतु नोशेरवां ख़ज़ान्चीके इस अपक्षपात काम से
सन्नहुआ कि उसे निहाल कर दिया. इसप्रकार सच्ची सज्जनता के इतिहासमें
ष्टांत मिल्तेहैं परंतु समुद्रमें गोता लगाए बिना मोती नहीं मिल्ता"

"आप बार, बार सच्ची सज्जनता कहते हैं सो क्या सज्जनता, सज्जनतामें भी
द हैं ?" लाला मदनमोहननें पूछा.

"हां सज्जनताके दो भेद हैं एक स्वाभाविक होतीहै जिसका बर्णन मैं अबतक
ता आयाहूं. दूसरी अवसर दिखानें की होतीहै जो बहुधा बड़े आदमियोंमें, और

अनुचित कर्म्म से आत्मग्लानि और उचित कर्म्म से आत्मप्रसाद हुए बिना
रहता " लाला ब्रजकिशोर बोले.

"अपना मन मारनें से किसी को खुशी क्यों कर होसक्ती है ? लाला
आश्चर्य से कहनें लगे.

"सब लोग चित्तका सन्तोष और सच्चा आनन्द प्राप्त करनें के लिये अने
उपाय करते हैं परन्तु सब वृत्तियों के अविरोध से धर्म्मप्रवृत्तिके अनुसार
को जो सुख मिल्ता है वह और किसी तरह नहीं मिल सक्ता" लाला ब्रजकि
लगे "मनुस्मृति मैं लिखा है "जाको मन अरु बचन शुचि विध सों रक्षित ह
दुर्लभ वेदान्त फल जगमैं पावत सोय * जो लोग ईश्वर के बांधे हुए नियमों
सार सदा सत्कर्म्म करते रहते हैं उन्को आत्मप्रसादका सच्चा सुख मिल्ता है
विकसित पुष्पों के समान सदा प्रफुल्लित रहताहै जो लोग कह सक्ते हैं कि ह
सामर्थ्य भर ईश्वर के नियमों का प्रतिपालन करते हैं, यथा शक्ति परोपकार
सब लोगों के साथ अनीत छोड़कर नीति पूर्वक सुहृद्भाव रखते हैं, अतिशय
बिश्वास पूर्वक ईश्वर की शरणागति होरहे हैं वही सच्चे सुखी हैं. वह अपनें
रियों को वारंवार याद करके परम सन्तोष पाते हैं. यद्यपि उन्का सत्कर्म्म म
न जान्ते हों इसी तरह किसी के मुख से एक बार भी अपनें सुयश सुनें की स
हो, तथापि वह अपनें कर्तव्य काम मैं अपनें को कृतकार्य देख कर अद्वितीय
हैं उचित रीति से निष्प्रयोजन होकर किसी दुखिया का दुःख मिटानें की, वि
को ज्ञानोपदेश करनें की एक, एक बात याद आनें से उन्को जो सुख मिल्त
किसी को बड़ेसे बड़ा राज मिलनें परभी नहीं मिलसक्ता. उन्का मन पक्ष प
होकर सबके हितसाधन मैं लगा रहता है इस्कारण वह सबके प्यारे होनें चाहि
मूर्ख जलनसे, हठसे स्वार्थपरतासे अथवा उन्का भाव जानें बिना उनमैं द्वेषक
बिगाड़ करनाचाहें तो क्या करसक्ते हैं ? उन्का सर्वस्व नष्ट होजाय तोभी वह नहीं
उन्के हृदयमैं जो धर्म्म का खज़ाना इकट्ठा होरहाहै उस्के लूटनेंकी किसको सा
आपनें सुना होगाकि:—

"महाराज रामचंद्रजीको राजतिलकके समय चौदह वर्ष का बनवास हुआ
उन्के मुखपर उदासीके बदले प्रसन्नता चमकनें लगी.

"इंग्लैंड का गद्दी बाबत एलीज़ाबेथ और मेरीके बीच विवाद होरहाथा
ऐसी अवस्थामें उन्के पिता, पति और स्वसुरनें गद्दी पर बिठाना चाहा परंतु उस
का शौक नथा वह सौम्यस्वभाव, विद्वान और धर्मात्मा स्त्रीथी. उसनें उन्को समर

* यद्वाङ्मनसी शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्वदा ॥ सवै सर्व मवाप्नोति वेदान्तोपगतम्

मेरी निस्वत मेरी और एलिज़ाबेथ का ज्यादः हक़है और इस कामसे तरह, तरहके
खेड़े उठनेंकी संभावना है. मैं अपनी बर्तमान अवस्था में बहुत प्रसन्नहूं इसलिये मुझको
क्षमाकरो" पर अंतमें उस्को अपनी मरज़ी के उपरांत बड़ोंकी आज्ञासे राजगद्दी पर
बैठना पड़ा परंतु दसदिन नहीं बीते इतनेंमें मेरीनें पकड़कर उसे क़ैद किया और
उसके पति समेत फांसी का हुक्म दिया. वह फांसी के पास पहुची उससमय उस्नें अपनें
पतिको लटकते देखकर तत्काल अपनी याददाश्तमें यह तीन बचन लाटिन, यूनानी,
और अंग्रेजी मैं क्रमसे लिखेकि "मनुष्य जातिके न्यायनें मेरी देहको सज़ादी परंतु ईश्वर
मेरे ऊपर कृपा करेगा. और मुझको किसी पापके बदले यह सजा मिली होगी तो
अज्ञान अवस्थाके कारण मेरे अपराध क्षमा कियेजायेंगे औरमैं आशा रखतीहूं कि
सर्वशक्तिमान परमेश्वर और भविष्यत कालके मनुष्य मुझ पर कृपादृष्टि रक्खेंगे" उस्नें
फांसीपर चढ़कर सबलोगोंके आगे एक वक्तृताकी जिस्में अपनें मरनेंके लियेअपने सिवाय
किसी को दोष न दिया वह बोली कि "इंगलैन्डकी गद्दी पर बैठनेंके वास्ते उद्योग
करनें का दोष मुझपर कोई नहीं लगावेगा परंतु इतना दोष अवश्य लगावेगा कि "वह
औरोंके कहनेंसे गद्दीपर क्यों बैठी? उस्नें जो भूलकी वह लाभके कारण नहीं, केवल
बड़ोंके आज्ञावर्ती होकर कीथी" सो यह करना मेरा फर्जथा परंतु किसी तरह करो
मेरेके साथ मैंनें अनुचित ब्यवहार किया उसके हाथ में प्रसन्नतासे अपनें प्राण देनेंको
तैयारहूं" यह कहकर उस्नें बड़े धैर्यसे अपनी जानदी"

"दुनियां अपनें मनको धैर्य देनेंके लिये चाहे जैसे समझा करैं परंतु साधारण
रीत तो यहहै कि उचित उपायसे हो अथवा अनुचित उपायसे हो जो अपना काम
निकाललेताहै वही सुखी समझाजाताहै. आप बिचार कर देखेंगे तो मालूम होजायगा
कि आज भूमंडलमें जितने अमीर और रईस दिखाई देते हैं उन्के बर्गमें से बहुतों नें
अनुचित कर्म करके यह बैभव पाया होगा" मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

"कभी अनुचित कर्म करनेंसे सच्चा सुख नहीं मिलता प्रथम तो मनुमहाराज और
प्रशर्फाव एक स्वरसे कहतेहैं कि "कर अधर्म पहले बढ़त सुखपावत बहु भांत ॥
पुन जय कर आप पुन मूलसहित बिनसात॥ [1]" फिर जिसतरह सत्कर्म का फल आत्म
प्रसादहै इसीतरह दुष्कर्म का फल आत्मग्लानि, आंतरिकदुख अथवा पछतावा हुए
बिना सर्वथा नहीं रहता मनुस्मृतिमें लिखाहै "पापी समुझत पापकर काहू देख्यो नाह॥
पर अंतर्निज आतमा निस दिन देखन जाहि॥ +" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "नि-

---

[1] अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति ॥ ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥

+ अधर्मेण एधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति ॥ ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥

+ मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः ॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तर पूरुषः

रसमय कोई निकृष्टप्रवृत्ति अत्यंत प्रबल होकर धर्म्मप्रवृत्ति को रोक नहीं मान्ती और हम उस्की इच्छा पूरी करनें के लिये पाप करतेहैं परंतु उस कामसे निवृत्ति हमारे मनमें अत्यंत ग्लानि होतीहै हमारी आत्मा हमको धिक्कारतीहै और लोक पर के भयसे चित्त बिकलरहताहै जिस्नें अपनें अधर्म्म से किसीका सुख हर अथवा स्वार्थपरता के बसबर्ती होकर उपकारके बदले अपकार किया है, छल बलसे किसी का धर्म्म भ्रष्ट करदियाहै, जो अपनें मनमें समझताहै कि मुझसे का सत्यानाश हुआ, अथवा मेरेकारण फलानें के निर्मल कुल में कलंक लगा, संसारमें दुःखके सोते इतनें अधिक हुएमें उत्पन्न न हुआ होता तो पृथ्वी पर इतन कमहोता, केवल इन बातों की याद उस्काह्रदय विदीर्ण करनेंके लिये बहुत है मनुष्य ऐसी अवस्थामें भी अपनें मनका समाधान रखसके उस्को मैं वज्रह्रदय जिस्नें किसी निर्धन मनुष्य के साथ छल अथवा बिश्वासघात करके उस्की कीहै उस्की आत्मग्लानि और आंतरिक दुःखका बरणन कोन करसक्ताहै! अनेक के भोगबिलास करनेंवालों को भी समय पाकर अवश्य पछतावा होताहै. जो काल श्रद्धा और यत्न पूर्वक धर्म्मका आनंद लेकर इसदलदल में फस्तेहैं उन्से और आंतरिकदाहका क्लेश पूछना चाहिये.

" टरकी का खलीफ़ा मौन्तासर अपनें बापको मरवाकर उस्के महल का सामान देखरहाथा उससमय एक उम्दा तसवीर पर उसकी दृष्टि पड़ी जिसमें एक भित तरुण पुरुष घोड़े पर सवारथा और रत्नजटित " ताज " उस्के सिरपर था. उस्के आसपास फारसीमें बहुतसी इबारत लिखी थी खलीफ़ानें एक बुला कर वह इबारत पढ़वाई उस्में लिखाथा कि " मैं सीरोज़ खुसरोका बेटा अपनें बापका ताज लेनेंके वास्ते उसे मरवाडाला पर उस्से पीछे वह ताज मैं महीने अपनें सिर पर रखसका " यह बात सुन्तेही खलीफ़ा मौन्तासरके लगी और अपनें आंतरिक दुःखसे वह केवल तीन दिन राजकरके मरगया."

" यह आत्मग्लानि अथवा आंतरिकक्लेश किसी नए पंछी को जालमें भठेहीहो होताहो परानें खिलाड़ियोंको तो इस्की खबरभी नहीं होती संसारमें ऐसे बहुत लोग मोजूदहैं जो दूसरेके प्राण लेकर हाथभी नहीं धोते " मास्टर याल नें कहा.

" यह बात आपनें दुरुस्त कही निस्संदेह जो लोग लगातार दुष्कर्म करते हैं और एक अपराधीसे बदला लेनेंके लिये आप अपराधी बनजातेहैं अथवा छिपानेंके [illegible] करनें लगतेहैं या जिन्को केवल अपनें मतलब रहताहै [illegible] अरुचि उठती जाती है " लाला ब्रज कहनें [illegible] मस्तकमें दुर्गंध समाजाती है तब

ह दुर्गंध नहीं मालूम होती अथवा बारंबार तरवारको पत्थर पर मारनेंसे उस्की धार पनें आप भोंटी होतीजातीहै इसी तरह ऐसे मनुष्योंके मनसे अभ्यासबस अधर्म की लानि निकलकर उन्के मनपर निकृष्टप्रवृत्तियोंका पूरा अधिकार होजाताहै बिदुरजी कहते हैं "तासों पाप न करत बुध किये बुद्धि को नाश ॥ बुद्धि नासते बहुरि नर पापै करत प्रकाश १॥ यह अवस्था बड़ी भयंकर है और सन्निपात के समान इस्से आरोग्य होनेंकी आशा बहुत कम रहती है. ऐसी अवस्थामें निस्संदेह शिभूदयालके कहनें मूजब उन्को अनुचित रीतिसे अपनी इच्छा पूरीकरनेंमें सिवाय आनंदके कुछ पछतावा नहीं होता परंतु उन्को पछतावा हो या नहो ईश्वरके नियमानुसार उन्हें अपनें पापों का फल अवश्य भोगना पड़ताहै मनुस्मृतिमेंलिखाहै " बेद, यज्ञ, तप, नियम, अरुबहुत रीतिके दान ॥ दुष्ट हृदय को जगतमें करत न कुछ कल्यान ॥ + " ऐसे मनुष्यों को समाज की तरफ़से राजकी तरफ़से, अथवा ईश्वर की तरफ़से अवश्य दंडमिल्ताहै और बहुधा वह अपना प्राणदेकर उस्से छुट्टी पातेहैं इसलिये सुख दुःखका आधार इच्छाफलकी प्राप्ति परनहीं बल्कि सत्कर्म और दुष्कर्मपरहै "

इसतरह पर अनेक प्रकारकी बातचीत करते हुए लाला मदनमोहनकी बग्गी मकान पर लोटआई और लाला ब्रजकिशोर वहांसे रुखसत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण १३

बिगाड़कामूल-बिवाद

कोपै बिनअपराध । रीझै बिन कारन जुनर ॥
ताको शील असाध । शरदकालके मेघ ज्यों ॥ *

बिदुर प्रजागरे.

लालामदनमोहन हवाखाकर आए उससमय लालाहरकिशोर साहबको गद्दी लाकर बैठेथे.

" कल तुमनें लाला हरदयालसाहबके सामनें बड़ीढिटाईकी परंतु मैं पुरानी बातों पर बिचार करके उससमय कुछ नहीं बोला " लालामदनमोहननें कहा

" आपनें बड़ी दयाकी पर अब मुझको आपसे एकांतमें कुछ कहनाहै, अवकाश हो तो सुनलीजिये " लालाहरकिशोर बोले.

" यहां तो एकांतही है तुमको जोकुछ कहनाहो निस्संदेह कहो " लालामदनमोहन नें फ़रमाया.

तद्‌ पापं न कुर्वीत पुरुषः ॥ शंसितव्रतः ॥ पापं प्रज्ञां नाशयति क्रियमाणं पुनः पुनः ॥
+ त्यागयज्ञश्च नियमाश्च तपांसि च ॥ नविप्रभावदुष्टस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥
* अकस्मादेव कुप्यंति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः ॥ शीलमेतदसाधूनामभ्रंपारिप्लवं यथा ॥

" मुझको इतनाही कहनाहै कि मैनें अबतक अपनी समझ मुजिब आपको अप्रसन्न
नें की कोई बात नहीं की परंतु मेरी सबबातें आपको बुरी लगतीहैं तो मैं भी ज्यादः
राजाई रखनेंमें प्रसन्न नहीं हूं. किसीनें सच कहाहै " जबतो हम गुलथे मियां लगते
रोंके गले ॥ अबतो हम खार हुए सबसे किनारे ही भले ॥ " संसारमें प्रीति स्वार्थ-
ा का दूसरा नामहै समय निकले पीछै दूसरेसे मेल रखनें की किसि को क्या ग़रज़
है ? अच्छा ! आप महरबानी करके मेरे मालकी कीमत मुझको दिलवादें. " हरकि-
नें रुखाईसे कहा.

" क्या तुम कीमत का तकाजा करके लालासाहब को दबायाचाहते हो ? " मुनशी
ीलाल बोले.

" हरगिज नहीं, मेरी क्या मजाल ? " हरकिशोर कहनें लगे. " सबजान्तेहैं किमेरे
गांठकी पूंजी नहींहै, मैं जहां तहांसे माल लाकर लालासाहबके हुक्म की तामील
रताथा परंतु अबकी बार रुपे मिलनेंमें देरहुई कई इक़रार झूटे होगए इसलियें
ोंका बिश्वास जातारहा अब आज कलमें उन्के माल की कीमत उन्के पास न
चेगी तो वे मेरे ऊपर नालिश करदेंगे और मेरी इज्जत धूलमें मिलजायगी ".

" तुम कुछ दिन धैर्य धरो, तुह्मारे रुपेका भुगतान हम बहुत जल्दी करदेंगे"
ामदनमोहननें कहा.

" जब मेरे ऊपर नालिश होगई और मेरी साख जातीरही तो फिर रुपे मिलनें से
क्या काम निकला ? "देवो अवसर को भलो जासों सुधरे काम । खेती सूखे बरसवो
को निपट निकाम॥ " मैं जान्ताहूं कि आपको अपनें कारण किसी ग़रीबकी इज्जतमें
लगाना हरगिज़ मंज़ूर न होगा " लाला हरकिशोरनें कुछ नरम पड़कर कहा.

" तुह्मारा रुपया कहां जाताहै ? तुम ज़रा धैर्य रक्खो. तुमनें यहांसे बहुत कुछ
यदा उठायाहै, फिर अबकी बार रुपे मिलनेंमे दो, चार दिनकी देर होगई तो क्या
र्थ होगया ? तुमको ऐसा कड़ा तक़ाज़ा करनें मे लाज नहींआती ? क्या संसारसे
मुलाहज़ा बिल्कुल उठगया ? " मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

" मैंभी इसी चारा बिचार में हूं " हरकिशोरनें जबाब दिया "मैंतो माल देकर
चाहताहूं. ज़रूरतके सबबसे तक़ाज़ा करताहूं पर न जानें और लोगों को क्या
ाया जो बेसबब मेरे पीछै पडरहे हैं ? मुझसे उन्को बहुत कुछ लाभ हुआ होगा
तु इस्समय वे सब 'तोता चश्म ' होगए. उन्हीके कारण मुझको यह तक़ाज़ा करना
ताहै. जो आजकलमें मेरे लेनदारोंका रुपया न चुका, तो वे निस्संदेह मुझपर
लिश करदेंगे और मैं ग़रीब अमीरोंकी तरह दबाव डालकर उन्को किसी तरह

"तुह्मारी ठगविद्या हम अच्छी तरह जान्तेहैं., तुह्मारी ज़िदसे इससमय तुमको फूटी कौड़ी न मिलेगी, तुह्मारे मनमें आवे सो करो." मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

"जनाब ज़बान सह्मालकर बोलिये. माल देकर क़ीमत मांगना ठगविद्याहै? गिरधर सच कहताहै "साईं नदी समुद्रसों मिली बडप्पन जानि ॥ जात नास भयो आपनो मान महतकी हानि ॥ मान महतकी हानि कहो अब कैसी कीजे ॥ जलखरी व्हैगयो ताहि कहु कैसें पीजे ॥ कह गिरधर कविराय कच्छ मच्छन सकुचाई ॥ बडो फ़जीहत चार भयो नदियन को साईं ॥"

"बस अब तुम यहांसे चलदो. ऐसे बाजारू आदमियोंका यहां कुछ काम नहींहै" मास्टर शिभूदयालनें कहा.

"मैंने किसी अमीरके लडके को बहकाकर बदचलनी सिखाई? या किसी अमीरके लडके को भोगबिलासमें डालकर उसकी दौलत ठगली जो तुम मुझे बाज़ारू आदमी बताते हो?"

"तुम कपडा बेचनें आएहो या झगडा करनें आएहो?" मुनशीचुन्नीलाल पूछनेंलगे.

"न मैं कपडा बेचनें आया न मै झगडा करनें आया. मैंतो अपना रुपया वसूलकरनें आयाहू. मेरा रुपया मेरी झोली में डालिये फ़िर मैं यहां क्षणभर न ठैरुंगा"

"नहींजी, तुमको ज़बरदस्ती यहां ठैरनेंका कुछ अखत्यार नहीं है रुपे का दावाहो तो जाकर अदालतमें नालिशकरो" मास्टरशिभूदयाल बोले.

"तुमलोग अपनी गलीके शेरहो यहां चाहे जो कहलो परंतु अदालतमें तुह्मारी गीदड भपकी नहीं चलसक्ती. तुम नहीं जान्ते कि ज्यादः घिसने पर चंदन से भी आग निकलती है अच्छे आदमीको ख़ातर शिष्टाचारी से चाहे जितना दबालो परंतु अभिमान और धमकी से वह कभी नहीं दबता"

"तो क्या तुम हमको इनबातोंसे दबालोगे?" लालामदनमोहननें त्योरी चढ़ाकर कहा.

"नहीं साहब, मेरा क्या मक्दूर है? मैं ग़रीब, आप अमीर. मुझको दिनभर रोज़गार धंधा करना पड़ताहै, आपका सर्बदिन हंसी दिल्लगी की बातोंमें जाताहै. मैं दिनभर पैदल भटकताहूं, आप सवारीबिना एककदम नहीं चलते. मेरे रहनेंकी एक झोंपड़ी, आपके बड़े बड़े महल. मुल्कमें अकालहो, गरीब बिचारे भूखों मरतेहों, आपके यहां दिन रात ये ही हाहा, हीही, रहैगी. सर्वेह आप पर उन्का दया हक़ है? उनमें आपका क्या संबन्ध है? परमेश्वरनें आपको मनमानी मौज करने के लिये दौलत देदी फ़िर औरों के दुख दर्द में पड़नें की आपको क्या ज़रूरत रही? आपके लिये नीति अनीति की कोई रोक नहीं है आप—"

"क्यों जी? तुम अपनी बकवाद नहीं छोड़ते अच्छा जमादार इनको हाथ पक-

र यहां से बाहर निकालदो और इस्की गठरी उठाकर गली में फेंकदो " मुनशी
ीलालनें हुक्म दिया.

" मुझको उठानेंकी क्या ज़रूरत है ? मैं आप जाताहूं परन्तु तुमनें बेसबब मेरी
त ली है इस्का परिणाम थोड़े दिन में देखोगे जिस तरह राजा द्रुपदनें बचपन में
ाचार्यसे मित्रता करके राज पानें पर उन्का अनादर किया तब द्रोणाचार्यनें कौरव
वों को चढ़ा लेजाकर उस्की मुश्कें बंधवा ली थीं और चाणक्य नें अपनें अपमान
पर नन्द बंश का नाश करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दिखाई थी, पृथ्वीराजनें
ोगता के बसवर्ती होकर चन्द और हाहुली राय को लोंडियों के हाथ पिटवाया तब
हुली रायनें उस्का बदला पृथ्वीराज से लिया था, इसी तरह परमेश्वरनें चाहातो मैं
इस्का बदला आपसे लेकर रहूंगा " यह कह कर हरकिशोरनें तत्काल अपनी गठरी
ली और गुस्से में मूछोंपर ताव देता चला गया.

" ये बदला लेंगे ! ऐसे बदला लेनेंवाले सैकड़ों झकमारते फिरते हैं " हरकिशोरके
ते ही मुनशी चुन्नीलालनें मदनमोहन को दिलासा देनें के लिये कहा.

" जो यों किसीके बैर भावसे किसीका नुक्सान होजाया करे तो बस संसार के
म ही बन्द होजायँ " मास्टर शिभूदयाल बोले.

"सूर्य चंद्रमा की तरफ़ धूल फेंकनें वाले अपनेही सिर पर धूल डालतेहैं " पंडित
ुषोत्तमदासनें कहा. पर इनबातोंसे लाला मदनमोहन का संतोष न हुआ.

"मैं हरकिशोर को ऐसा नहीं जान्ताथा, वहतो आज आपेसे बाहर होगए. अच्छा!
 वह नालिशकरे तो उस्की जवाब दिही किस तरह करनी चाहिये ? मैं चाहता हूं
चाहे जितना रुपया खर्च होजाय परंतु हरकिशोर के पल्ले फूटी कौड़ी न पड़े "
ला मदनमोहननें अपनें स्वभावानुसार कहा

मदनमोहनके निकट वर्ती जान्तेथे कि मदनमोहन जैसें हठीलेहैं वैसेही कमहिम्मत
जिससमय उन्को किसी तरहका घबराट हो हरेक आदमी दिलजमई की झूंटी सच्ची
तें बनाकर उन्को अपनें काबू पर चढ़ासक्ता है और मन चाहा फ़ायदा उठासक्ताहै
सलिये अब चुन्नीलालनें वह चाल डाली.

" यह मुकद्दमा क्या चीजहै ! ऐसे सैंकडों मुकद्दमें आपके पुन्य प्रतापसे चुटकियों
उड़ा सक्ताहूं परन्तु इससमय मेरे चित्त को ज़रा उद्वेग होरहाहै इसी से अकल काम
हीं देती " मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

" क्यों तुह्मारे चित्तके उद्वेगका क्या कारणहै ? क्या हरकिशोर की धमकी से
... ? ऐसा है तो विश्वास रक्खो कि मेरी सब दौलत खर्च होजायगी तो भी तुह्मारे

" नहीं, महाराज ! ऐसी बातोंसे मैं कब डरताहूं ? और आपके लिये जो तकलीफ़ मुझको उठानी पड़े उसमें तो और मेरी इज्जतहै. आपके उपकारोंका बदला मैं किसी तरह नहीं देसक्ता, परन्तु लड़की के ब्याहके दिन बहुत पास आगये, तयारी अबतक कुछ नहीं हुई, ब्याह आपकी नामवरीके मूजिब करना पड़ेगा, इस्से इनदिनों मेरी अक्ल कुछ गुमसी होरहीहै " मुनशीचुन्नीलालनें कहा

" तुम धैर्य रक्खो तुह्मारी लड़की के ब्याहका सब खर्च हम देंगे " लाला मदनमोहननें एकदम हामी भरली.

" ऐसी सहायता तो इस सरकार से सब को मिल्ती ही है परन्तु मेरी जीविका का वृत्तान्त भी आपको अच्छी तरह मालूम है और घर गृहस्थका खर्च भी आप सै छिपा नहींहै, भाई खाली बैठे हैं जब आप के यहां से कुछ सहायता होगी तो ब्याहका काम छिड़ेगा कपड़े लत्ते वग़ैरे की तैयारी मैं महीनों लगते हैं" मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

"लो; ये दोसौरुपे के नोट लेकर इस्समय तो काम चलता करो, और बातों के लिये बंदोबस्त पीछेसे कर दिया जायगा" लाला मदनमोहननें नोट देकर कहा.

" जी नहीं, हुजूर ! ऐसी क्या जल्दी थी " मुनशीचुन्नीलाल नोट जेब मैं रखकर बोले.

" यह भी अच्छी किया है " पंडितजी नें भरमा भरमी सुनाई.

" मैं जान्ताहूं कि प्रथम तो हरकिशोर नालिशही नहीं करेंगे और की भी तो दम भर मैं खारिज करादी जायगी " मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

निदान लाला मदनमोहन बहुत देर तक इस प्रकार की बातों से अपनी छातीका बोझ हल्का करके भोजन करनें गए और गुपचुप बैजनाथके बुलानें के लिये एक आदमी भेज दिया.

प्रकरण १४

पत्रव्यवहार

अपनें अपनें लाभकों बोलतबैन बनाय
बेश्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय

वृंद.

लालामदनमोहन भोजन करके आए उस्समय डाकके चपरासीनें लाकर चिट्ठियां दीं उन्मैं एक पोस्टकार्ड महरोलीसे मिस्टर बेलीनें भेजाथा उसमें लिखाथा कि " मेरा बिचार कल शामको दिल्ली आनेंकाहै आप महरबानी करके मेरे वास्ते डाकका बंदोबस्त करदें और लोटती डाकमें मुझको लिखभेजें " लालामदनमोहननें तत्काल उसका प्रबंध करदिया.

सरी चिट्ठी कलकत्तेसे हमल्टीनकंपनी जुएलर' (जोहरी) की आई थी उसमें गा " आपके आरडरके बमूजिब हीरों की पाकट चेन बनकर तैयार होगई है ा दिनमें पालिश करके आपके पास भेजी जायगी और इसपर लागत चार हज़ार ा रहैगी. आपनें पन्ने की अंगूठी और मोतियोंकी नेकलेसके रुपे अबतक नहीं ो महरबानी करके इनतीनों चीजोंके दाम बहुत जल्द भेज दीजिये "

ीसरा फ़ारसी खत अह्मदीपुरसे अब्दुर्रहमान मेट का आयाथा उसमें लिखाया कि जल्दी भेजिये नहीं तो मेरी आबरु मैं फ़र्क आजायगा और आपका बड़ा हर्ज कंकरवालेका रुपया बहुत चढ़गया इसलिये उसनें खेप भेजनी बंदकरदी. मज्दूरों ाहा एक महीनेंसे नहीं बटा इसलिये वह मेरी इज्जत लिया चाहतेहैं. इस ठेके पांच हज़ाररुपे सरकारसे आपको मिलनें वालेथे वह मिले होंगे, महरबानी करके लरुपे यहां भेजदीजिये जिस्से मेरा पीछा छूटे. मुझको बड़ा अफ़सोसहै कि इस आपको नुक्सान रहैगा परन्तु मैं क्या करूं ? मेरे बसकी बात नथी. ज़मीन ऊंची नीची निकली, मज्दूर दूर, दूरसे दूनी मज्दूरी देकर बुलानें पडे, पानी का पता न था मुझसे होसका जहांतक मैनें अपनी जानलडाई. ख़ैर इस्का इनाम ज़ूरके हाथहै परंतु रुपे जल्दी भेजिये, रुपयोंके बिना यहां का काम घड़ी हीं चलसक्ता "

ालामदनमोहन नोकरोंको काम बतानें, और उन्की तनख़्वाह का ख़र्च निकालनें ये बहुधा ऐसे ठेके वगैरा ले लिया करतेथे नोकरोंके बिषयमें उन्का बरताव बडा ाणथा. जो मनुष्य एकबार नोकर होगया वह होगया. फिर उस्से कुछ काम जाय या न लिया जाय, उस्के लायक़ कोई काम हो या न हो, वह अपना काम ी तरह करे या बुरी तरह करे, उस्के प्रतिपालन करनें का कोई हक़ अपनें हो या नहो, वह अलग नहीं हो सक्ता और उसपर क्या है ? कोई ख़र्च एक क़र्रर हुए पीछे कम नहींहो सक्ता, संसार के अयशका ऐसा भय समारहाहै पनी अवस्थाके अनुसार उचित प्रबंध सर्बथा नहीं होनें पाता. सब नोकर सब मै दख़ल देतेहैं परंतु कोई किसी काम का जिम्मेवर नहीं हैं, और नकोई सम्हाल है. मामूली तनख़्वाह तो उन लोगोंनें बादशाही पेन्शन समझरक्खी है. दस पंदरह हीनें की तनख़्वाहमें हजार पांचसो रुपे पेशगी लेरखना, दो, चार हज़ार पैदा ना कौन बडी बातहै ? पांचरुपे महिनेंके नोकर हों, या तीनरुपे महिनें के नोकर वाह आदिका ख़र्च लालासाहबके जिम्मैं समझतेहैं, और क्यों न समझैं ? लाला की नोकरी करें तब बिवाह आदिका ख़र्च लेने कहां जांय ? मदतका दारोग़ा ;, चीज़बस्त लानेंवाले चीजबस्तमें दुकानके गुमाश्ते दुकानमें, मन माना काम

चनारहेहैं जिसनें जिसकाम के वास्ते जितना रुपया पहले ले लिया वह उसके बाप दादेका होचुका, फिर हिसाब कोई नहीं पूछता. घाटे नफ़े और लेनदेनकी जांच परताल करनें के लिये कागज कोई नहीं देखता. हालमें लाला मदनमोहन नें अपनें नोकरों के प्रतिपालन के लिये अलीपुर रोड का ठेका लेरक्खा था जिस्में सरकार से ठेका लिया उस्से दूनें रुपे अबतक खर्च होचुके थे पर काम आधा भी नहीं बनाथा और खर्चके वास्ते वहां से ताकीदपर ताकीद चलीआती थी परमेश्वर जानें अबदुर्रहमान को अपनें घर खर्चके वास्ते रुपे की जरूरतथी या मदतके वास्ते रुपेकी जरूरथी.

चौथा खत एक अखबार के एडीटर का था उसमें लिखा था कि " आपनें इस महीनें की तेरहवी तारीख़ का पत्र देखा होगा उसमें कुछ वृत्तान्त आपका भी लिखा गया है इससमय के लोगों को खुशामद बहुत प्यारी है और खुशामदी चैन करते है परन्तु मेरा यह काम नहीं. मैंनें जो कुछ लिखा वह सच, सच लिखाहै. आपसे बुद्धिमान, योग्य, सर्व्व अभिज्ञ, उदार और देशहितैषी हिन्दुस्थान मे बहुत कमहै इसी से हिन्दुस्थान की उन्नति नहीं होती, विद्याभ्यासके गुण कोई नहीं जान्ता, अख़बारों की क़दर कोई नहीं करता, अख़बार जारी करनेंवालों को नफ़ेके बदले नुक्सान उठाना पड़ता है. हम लोग अपना दिमाग़ खिपाकर देश की उन्नतिके लिये आर्टिकल लिखते हैं, परन्तु अपनें देशके लोग उसकी तरफ़ आंख उठाकर भी नहीं देखते इसी की टूटा जाताहै. देखिये अख़बार के कारण मुझपर एक हज़ार रुपे का कर्ज़ होगया और आगे को छापेखानें का खर्च निकलना भी बहुत कठिन मालूम होताहै. प्रथम तो अख़बार के पढ़नेंवाले बहुत कम, और जो है उन्मे भी बहुधा कारस्पोंडेन्ट बनकर बिना दाम दिये पत्र लिया चाहते है और जो ग्राहक बनते है उन्मे भी बहुधा दिवालिये निकल जाते है. छापेखानें का दोहज़ार रुपया इससमय लोगों मे बाकी है परन्तु पूरी कौड़ी पटनें का भरोसा नहीं. कोई आपसा साहसी पुरुष देशका हित बिचार कर इस डूबती नाव को सहारा लगावे तो बेड़ा पार होसक्ताहै नहीं तो फ़ैर जो इच्छा परमेश्वर की "

एक अख़बारके एडीटरकी इस लिखावट से क्या, क्या बातें मालूम होती हैं! प्रथम तो यह कि हिन्दुस्थान मे विद्या का, सर्व साधारण की अनुमति जान्नें का, देशान्तर के वृत्तान्त जान्ने का, और देशोन्नति के लिये देश हितकारी बातों पर चर्चा करनें का प्रचार अभी बहुत कम है यद्यपि बिलायत की बस्ती हिन्दुस्थान की बस्ती से बहुत थोड़ी है तथापि वहां अख़बारों की इतनी वृद्धि है कि बहुतसे अख़बारों की दस दस, दो, दो लाख कापियें निकल्ती है. वहां के स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बालक, गरीब, अमीर, सब अपनें देश का वृत्तान्त जान्ते है और उस्पर बारबार विचार करते है जिस्से उस्देश मे कोई बात नई छपती है तो तत्काल उसकी चर्चा सब देश में फैल जाती है और देशान्तर की

ोद जाते हैं परन्तु हिन्दुस्थान में ये बात कहां? यहां बहुतसे अख़बारों की !
ा सो कापियां भी नहीं निकलती! और जो निकलती हैं उन्में भी जान्नें के ला
बहुत ही कम रहती हैं क्योंकि बहुतसे एडीटर तो अपना कठिन काम सम्पा
की योग्यता नहीं रखते और वलायत की तरह उन्को और बिद्वानों की सहाय
मिलती, बहुतसे जान बूझ कर अपना काम चलानें के लिये अजान बनजाते
ऱ्ये उचित रीति से अपना कर्तव्य सम्पादन करनेंवाले अख़बारों की संख्या ब
है पर जो है उस्को भी उत्तेजन देनेंवाला और मन लगा कर पढ़नें वाला क
मिलता. बड़े, बड़े अमीर, सौदागर, साहूकार, ज़मींदार, दस्तकार जिन्की हानि ल
ौर देशों से बडा संबन्ध है वह भी मन लगा कर अख़बार नहीं देखते बल्कि क
तो अख़बार के एडीटरों को प्रसन्न रखनें के लिये अथवा गाहकों के सूचीपत्र
ा नाम छपानें के लिये, अथवा अपनी मेज़ को नए, नए, अख़बारों से सुशोभि
के लिये, अथवा किसी समय अपना काम निकाललेनें के लिये अख़बार ख़री
तस्वर अख़बार निकालनेंवालों की यह दशा है ! लाला मदनमोहन इस ख़त
ऱ सहायता करनें के लिये बहुत ललचाये परन्तु रुपे की तंगी के कारण तत्का
न कर सके.

" हुजूर ! मिस्टर रसलके पास रुपे आज भेजनें चाहियें " मुन्शीचुन्नीलाल
देखे पीछे याद दिवाई.

ां ! मुझको बहुत ख़यालहै परंतु क्या करूं ? अबतक कोई बानक नहीं बना
मदनमोहन बोले.

" थोडी बहुत रक़मतो मिस्टर ब्राइट के यहां भी ज़रूर भेजनी पडेगी " मास्ट
याल नें अवसर पाकर कहा.

"हां, और हरकिशोरनें नालिश करदी तो उस्से जवाब दिही करनें के लि
े चाहियेंगे " लालामदनमोहन चिंता करनें लगे.

" आप चिन्ता न करें, जोतिष से सब होनहार मालूम होसक्ता है. चाणक्यनें कहा है
ऐश्वर्य बिशालमैं का मौद्दुख पाहिं । रस्सी बांध्यो होय ज्यों पुरुष दैव बस माहिं॥*"
ऱ्ये आपको कुछ आगे का बृत्तान्त जान्ना हो, तो आप प्रश्न करिये. जोतिष से
र होनहार जान्नें का कोई सुगम मार्ग नहींहै " पंडित पुरुषोत्तमदासनें लाला मदन-
को कुछ उदास देख कर अपना मतलब गांठनें के लिये कहा. वह जान्ता था
र्बल चित्त के मनुष्य सुख मैं किसी बात की गर्ज़ नहीं रखते परन्तु घबराट के
हर तरफ़ को सहारा तकते फीरते हैं.

* वासुविस्तीर्णे व्यसने वापि दारुणे ॥ रज्वेव पुरुषो बद्धः कृतांतेनोपनीयते ॥

" विद्याका प्रकाश प्रतिदिन फैलताजाता है इसलिये अब आपकी बातों मैं कोई नहीं आवेगा " मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

" यहतो आजकल्के सुधरे हुओं की बात है परंतु वे लोग जिस बिद्याका नाम नहीं जान्ते उस्में उन्की बात कैसे प्रमाण हो ? " पंडित जीनें जवाब दिया.

" अच्छा ! आप करेले के सिवाय और क्या जान्तेहैं ? आपको मालूमहै कि नई तहक़ीक़ात करनें वालोंनें कैसी, कैसी दूरबीनें बनाकर ग्रहोंका हाल निश्चय कियाहै ? " मास्टर शिंभूदयाल बोले.

" किया होगा, परंतु हमारे पुरुखोंनें भी इस विषयमैं कुछ कसर नहीं रक्खी " पंडित पुरुषोत्तमदास कहनें लगे. " इस समयके विद्वानोंनें बडा खर्च करके जो कलैं ग्रहों का वृतान्त निश्चय करनें के लिये बनाई हैं हमारे बडों नें छोटी, छोटी नालियों और बांसकी छडियोंके द्वारा उन्से बढ़कर काम निकाला था. संस्कृत की बहुतसी पुस्तकें नष्ट होगईं, योगाभ्यास आदि बिद्याओंका खोज नहीं रहा परंतु फिरभी जो पुस्तकें अब मौजूदहैं उन्में ढूंढनें वालोंके लिये कुछ थोड़ा खजाना नहीं है. हां आपकी तरह कोई कुछ ढूंढभालकरे बिना दूरही से " कुछनहीं " " कुछनहीं " कहकर बात उड़ादे तो यह जुदी बातहै "

" संस्कृत बिद्याकी तो आजकल के सब विद्वान एक स्वर होकर प्रशंसा करते हैं परन्तु इससमय जोतिष की चर्चा थी सो निस्सन्देह जोतिष मैं फलादेश की पूरी बिध नहीं मिल्ती शायद बतानेंवालों की भूल हो. तथापि मैं इस विषय मैं किसी समय तुमसै प्रश्न करूंगा और तुह्मारी बिध मिलजायगी तो तुह्मारा अच्छा सत्कार किया जायगा " लाला मदनमोहन नें कहा और यह बात सुन कर पंडितजी के हर्ष की कुछ हद न रही.

प्रकरण १५

प्रिय अथवा पिय् ?

दमयन्ति बिलपनहुती बनमैं अहि भय पाइ
अहि बध बधिक अधिक भयो ताहूते दुखदाइ

नलोपाख्याने.

ज्योतिषको बिध पूरी नहीं मिल्ती इसलिये उसपर बिश्वास नहीं होता परन्तु प्रश्नका बुरा उत्तर आवे तो भयमहीसै चित्त ऐसा ब्याकुल हो जाता है कि उस काम के अचानक होनें पर भी वैसा नहीं होता, और चित्त का असर ऐसा प्रबल होताहै कि जिस बस्तु की संसार मैं सृष्टिही न हो वह भी वहम समाजानें से तत्काल दिखाई देनें लगती है. जिसपर जोतिषी ग्रहों को उलट पुलट नहीं कर सक्ते, अच्छे बुरे फल को

हीं सक्के, फिर प्रश्न करनें से लाभ क्या ? कोई ऐसी बात करनी चाहिये जिस
भ हो ” मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

आप हुक्मदें तो मैं कुछ अर्ज़ करूं ? ” बिहारी बाबू बहुत दिन से अवसर देख
वह धीरे से पूछनें लगे.

अच्छा कहो ” मुनशी चुन्नीलालनें मदनमोहन के कहनें से पहले ही कह दिया
भोजला पहाड़ी पर एक बड़े धनवान जागीरदार रहते हैं उन्को ताश खेलने
व्यसन है वह सदा बाज़ी बद कर खेल्ते हैं और मुझको इस खेल के पत्ते
ह से लगानें आते हैं कि जब खेलें तब अपनी ही जीत हो. मैंने उन्को कितनी
हरादिया इस लिये अब वह मुझको नहीं पतियाते परन्तु आप चाहें तो मैं वह
प को सिखादूं फिर आप उन्से निधड़क खेलें आप हार जांयगे तो वह रक़म
और जीतें तो उस्में से मुझको आधी ही दें ” बिहारी बाबूनें जुए का नाम
र मदनमोहन को आसामी बनानें के वास्ते कहा.

जीतेंगे तो चौथाई देंगे परन्तु हारनें के लिये रक़म पहले जमा करादो ” मुनशी
ल लाला मदनमोहन की तरफ़ से मामला करनें लगे.

हारनें के लिये पहले पांचसो की थैली अपनें पास रख लीजिये परन्तु जीतमें मैं
हिस्सा लूंगा ” बिहारी बाबू हुज्जत करनें लगे.

नहीं, जो चुन्नीलालनें कह दिया वह होचुका, उस्से अधिक हम कुछ न देंगे ”
दनमोहन नें कहा.

र बडी मुश्किलसे बिहारी बाबू उस्पर कुछ, कुछ राज़ी हुए परन्तु सौभाग्य बस
बाबू बैजनाथ आगए इस्से सब काम जहां का तहां अटक गया.

बिहारी बाबू से किस बात का मामला होरहाहै ?” बाबू बैजनाथनें पहुंच-
हा.

कुछ नहीं, यह तो ताश के खेल का ज़िक्र था ” मुनशी चुन्नीलालनें साधारण
कहा.

बिहारी बाबू कहते हैं कि “मै पत्ते लगानें सिखादूं जिस्तरह पत्ते लगा कर
क धनवान जागीरदारसे ताश खेलें. और बाज़ी बदलें जो हारेंगे तो सब नुक्सान
और जीतेंगे तो उस्में से चौथाईही मैं लूगा ” लाला मदनमोहन नें भोले भाव
वृत्तान्त कह दिया.

यह तो खुला जुआ है और बिहारी बाबू आप को चाट लगानें के लिये प्रथम
ज़ बाग दिखातेहैं ” बाबू बैजनाथ कहनें लगे “ जिस तरह से पहले एक मेवनें
ो गडी दौलतका तांबेपत्र दिखाया था, और वह सब दौलत गुप चुप आपके

यहां ला डालनें को हामी भरताथा परन्तु आपसे खोदनें के बहानें सो, पचास रुपे मार लेगया तब से लोट कर सूरत तक न दिखाई ! आपको याद होगा कि आपके पास एक बदमाश स्याम का शाहजादा बनकर आया था, और उस्नें कहा था कि "मैं हिन्दुस्थान की सैर करनें आयाहूं मेरे जहाज़नें कल्कत्ते में लंगर कर रक्खा है मुझको यहां खर्च की जरुरत है आप अपनें आढ़तिये का नाम मुझे बतादें मैं अपनें नोकरों को लिखकर उस्के पास रुपे जमा करादूंगा जब उस्की इत्तला आपके पास आजाय तब आप रुपे मुझे देंदें" निदान आप के आढ़तिये के नामसे तार आपके पास आगया और आपनें रुपे उस्को देदिये, परन्तु वह तार उन्ही के किसी साथी नें आपके आढ़तिये के नामसे आप को देदियाथा इसलिये यह भेद खुला उससमय शाहज़ादे का पता न लगा ! एक बार एक मामला करानें वाला एक मामला आपके पास लाया था जब उसें कहा था कि "सरकार में रसद के लिये लकडियों की खरीद है और तहसील में ढाई मन का भावहे. मैं सरकारी हुक्म आपको दिखा दूंगा आप चार मन के भाव मे मेरी मारफ़त एक जंगलवाले की लकडी लेनी करलें" यह कह कर उसें तहसील से निर्ख़नामे की दस्तखती नक्ल लाकर आप को दिखादी पर उस भाव में सरकार की कुछ खरीददारी नथी ! इन्से सिवाय जिस्तरह बहुतसे रसायनी तरह, तरह का धोका देकर सीधे आदमियों को ठगते फिरते हैं इसी तरह यह भी जुआरी बनानें की एक चाल है. जिस काम में बे लागत और बे महनत बहुतसा फ़ायदा दिखाई दे उस्में बहुधा कुछ न कुछ धोकेबाज़ी होती है ऐसे मामलेवाले ऊपर से सब्जबाग़ दिखाकर भीतर कुछ न कुछ चोरी जरूररखते हैं"

"बाबूसाहब ! मैंनें जिसराहसे ताश खेलनेंके वास्ते कहाथा वह हरगिज़ जुएमें नहीं गिनी जासक्ती परंतु आप उस्को जुआही ठैरातेहैं तो कहिये जुएमें क्या दोषहै ?" बिहारीबाबू मामला बिगड़ता देखकर बोले "दिवाली के दिनोंमें सब संसार जुआ खेल्ताहै और असलमें जुआ एक तरहका ब्यापारहै जो नुक्सानके डरसे जुआ बर्जित हो तो और सब तरहके ब्यापार भी बर्जित होनें चाहियें. और ब्यापारमें घाटा देनेंके समय मनुष्यकी नीयत ठिकानें नहीं रहती परंतु जुएके लेनदेन बाबत अदालतकी डिक्री का डर नहीं है तोभी जुआरी अपना सब मालअस्बाब बेचकर लेनदारोंकी कौडी, कौडी चुका देताहै उस्के पास रुपया हो तो वह उस्के लुटानें में हाथ नहीं रोकता और अपनें काममें ऐसा निमग्न होजाताहै कि उसे खानेंपीनें तककी याद नहीं रहती. उस्के पास फूटी कौडी नरहे तोभी वह भूखों नहीं मरता फड़पर जातेही जीते जुआरी दो, चार गंडे देकर उस्का काम अच्छी तरह चलादेतेहैं"

"राम ! राम ! दिवाली पर क्या ? समझवार तो स्वप्न मै भी जुए के पास नहीं

जाते जुएसे व्यापार का क्या संबंध ? उस्की कुछ
मिल्ती है पर उस्को जुएसे अलग कौन समझताहै ? उस्
हैं ? सरकारमें उस्की सुनाई कहां होतीहै ? निरी बातों
नहीं गिनाजाता. व्यापारके तत्वही जुदेहैं. भविष्यत का
परता लगाना, मालका ख़रीदना, बेचना, या दिसावर के
और माल भेजकर बदलाभुगताना, व्यापारहै परंतु जुएमें
अधर्मो की जड़है. मनु और बिदुरजी एक स्वरसे कहतेहैं "
को मूलहै ॥ हांसीहूमें तात तासों नहीं खेलै चतुर ॥ * "

" आप वृथा तेज़ होतेहैं मैं ख़ुद जुएका तरफ़दार
अच्छी, अच्छी युक्तियोंसे अपना पक्ष मबलकरना चा
जय नहीं होती. आपकी दृष्टिमें मैं झूंटाहूं परंतु मेरी स
ठेरा सकें मुझपर किसी तरहका दोषारोप किया जाय त
करनाचाहिये औरऔर बातोंमें मेरी भूल निकालनें से क्या

" जुएका नुकसान साबित करनेंके लिये विशेष परिश्र
और युधिष्ठिरादि की बरबादी इस्का प्रत्यक्ष प्रमाणहै " बा

" मैं आपसे कुछ अर्ज़ नहीं करसक्ता परंतु—— "

" बसजी ! रहनेंदो बाबूसाहब कुछ तुमसे बहसकरनें
आए " यह कहकर लालामदनमोहन बाबूबैजनाथ को
की तकरार का सब वृत्तान्त थोड़े में उन्हें सुनादिया.

" मैं पहले हरकिशोर को अच्छा आदमी समझताथ
चाल बिल्कुल बिगड़गई उस्को आपकी प्रतिष्ठाका बिल्कुल वि
इसनें ऐसी ढिटाईकी कि उस्को अवश्य दंड होना चाहियेथ
अपनें आप यहां से चलागया, उस्के चले जानेंसे उस्के
दिन धक्के खानेंसे इस्की अक़ल अपनें आप ठिकानें आजाय

" और उसनें नालिशकरदी तो ! " लालामदनमोहन घ

" सचहै उस्को रुपे की गर्ज होगी तो वह नाक रगडता आप चला आयगा हम उस्के नीचे नहीं दबे वही कुछ हमारे नीचे दबरहाहे "

" आप इस बिषयमें बिल्कुल निश्चिन्तरहें "

" मुझको थोडासा खटका लाला ब्रजकिशोरकी तरफ़ का हे यह हरबातमें मेरा गला घोटतेहैं और मुझको तोतेकी तरह पिंजरेमें बंद रक्खा चाहते हैं "

"वकीलोंकी चाल ऐसीही होतीहे वह प्रथम धरती आकाशके कुलाबे मिलाकर अपनी योग्यता जतातेहैं फिर दूसरेको तरह, तरह का डर दिखाकर अपना आधीन बनातेहैं और अंतमें आप उस्के घरबारके मालक बन बैठतेहैं परंतु चाहे जैसा फ़ायदा हो मेंतो ऐसी परतंत्रतासे रहनेंको अच्छा नहीं समझता "

" मेराभी यही बिचारहै मैं जोंजों दबताहूं वह ज्यादः दबाते जातेहैं इसलिये अबमें नहीं दबाचाहता "

" आपको दबनें की क्या जरूरतहै ? जबतक आप इनको मूंहतोड जबाब नदेंगे यह सीधे नहेंगे, लालाब्रजकिशोर आपके घरके टुकडे खाखाकर बडे हुएथे वह दिन भूलगए ! "

" लालामदनमोहननें बाबूबैजनाथकी नेकसलाहोंका बहुत उपकारमाना और वह लालामदनमोहन से रुखसत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण १६

सुरा (शराब)

जेनिंदितकर्मनडरहिं करहिंकाज शुभजान ॥
रखें मंत्रप्रमादतज करहिंन ते मदपान ॥

बिदुरनीति.

" अब तो यहां बैठे, बैठे जी उखताताहै चलो कहीं बाहर चलकर दस, पांच दिन सैरकर आवें " लाला मदनमोहननें कमरेमें आकर कहा.

" मेरे मनमे तो यह बात कई दिनसे फिर रहीथी परंतु कहनेंका समय नहीं मिला " मास्टर शिभूदयाल बोले.

" हुज़ूर ! आजकल कुतब में बडी बहार आरहीहै थोडेदिन पहले एक छींटा होगयाथा इस्से चारोंतरफ़ हरियाली छागई इससमय झरनें की शोभा देखनें लायक़है " मुनशीचुन्नीलाल कहनें लगे.

अकार्य कारणाद्भीतः कार्याणांच विवर्जनात् ॥
अकाले मंत्र भेदाच्च येनमाद्येन्न तत्पिबेत् ॥

" आहा ! वहांकी शोभाका क्या पूछना है ? आमके मौरकी सुगंधीसे सब अम-
महकरहीहै उन्की लहलही लताओंपर बैठकर कोयल कुहुकती रहती है घनघो
की घटासी छटा देखकर मोर नाचा करतेहैं नीचै झरनाझरताहै ऊपर बेल और
ओंके मिलनेंसे तरह, तरह की रमणीक कुंजे और लता मंडप बनगयेहैं रंग, रंगके
की बहार जुदी ही मनको लुभातीहै फूलोंपर मदमाते भौरोंकी गुंजार औरभी
द बढ़ातीहै शीतलमंद सुगंधित हवासै मन अपनें आप खिलाजाताहै निर्मल सरोव-
बीच बारहदरीमें बैठकर चद्दर और फुआरों की शोभा देखनेंसे जी कैसा हरा
ताहै ? वृक्षोंकी गहरी छाया में पत्थरके चट्टानों पर बैठकर यह बहार देखनें सै
आनंद आताहै ? " पंडितपुरुषोत्तमदासनें कहा.

" पहाड़की ऊंची चोटियों पर जानें से कुछ और भी विशेष चमत्कार दिखाई
है जब वहां से नीचेकी तरफ़ देखतेहैं कहीं बर्फ़, कहीं पत्थर की चट्टानें, कहीं
, बड़ी कंदराएँ, कहीं पानी बहनेंके घाटोंमैं कोसोंतक वृक्षों की लँगतार, कहीं
र, रीछ, और हिरनोंके झुंड, कहीं ज़ोरसै पानी का टकराकर छींट छींट होजाना
उन्में सूर्यकी किर्णों के पड़नेंसै रंग, रंगके प्रतिबिंबों का दिखाई देना, कहीं बादलों
पहाड़सै टकराकर अपनें आप बरसजाना, बरसाकीझड़,अपनें आस पास बादलोंका
झूम कर घिरआना अति मनोहर दिखाई देताहै " मास्टर शिभूदयालनें कहा.

" कुतबमैं ये बहार नहीं है तोभी वो अपनी दिल्लगी के लिये बहुत अच्छी जग-
" मुनशी चुन्नीलाल बोले.

" रात को चांद अपनी चांदनी से सब जगत को रुपहरी बनादेताहै उससमय
किनारे हरियाली के बीच मीठी तान कैसी प्यारी लगती है ? " हकीम अहमद-
नें कहा " पानी के झरनें की झनझनाहट, पक्षियों की चहचहाहट, हवाकी सन
हट, बाजेके सुरोंसे मिलकर गानेंवाले की लयको चौगुना बढ़ा देतेहैं. आहा ! जिस-
यह समा आंख के साम्नें हो स्वर्गका सुख तुच्छ मालूम देता है "

" जिस्मैं यह बसंतऋतु तो इसके लिये सब से बढ़करहै " पंडितजी कहनें लगे " नई
ल, नए पत्ते, नई कली, नए फूलोंसे सज सजाकर वृक्ष ऐसे तैयार होजातेहैं जैसे
मैं नए सिरसै जवानी आजाय "

" निस्संदेह ; वहां कुछ दिन रहनाहो, सुख भोगकी सब सामग्री मौजूदहो और
, भीनी रातमैं ताल्सुरके साथ किसी पिकबयनीकी आवाज आकर कानमैं पड़ेतो
आनन्द मिले मास्टर शिभूदयालनें कहा.

" शराबकी चसबिना यह सब मज़ा फीकाहै " मुनशी चुन्नीलाल बोले.

मिटानें के लिये तोये अक्सीर का गुण रखतीहै इस्की लहरोंके चढाव उतार में र
सुख तुच्छ मालूम होता है इस्के जोशमें बहादुरी बढती है बनावट और छिप
होजाता है हरेक काममें मन खूब लगता है.

" बस; विशेष कुछनकहो ऐसी बुरी चीजकी तुम इतनी तारीफ़ करते हे
मालूम होताहै कि तुम इससमयभी उसी के बसवर्ती होरहे हो " बाबू बैजनाथ
लगे. "मनुष्य बुद्धिके कारण और जीवों से उत्तम है फिर जिस्के पानसे बुद्धिमें
हो, किसी काम के परिणामकी खबर न रहे, हरेक पदार्थका रूप और से और
जाय, स्वेच्छाचारकी हिम्मत हो कामक्रोधादि रिपु प्रबल हों, शरीर जर्जरहो व
अच्छी समझी जाय !

" यों तो गुणदोषसे खाली कोई चीज़ नहीं है परन्तु थोडी शराब लेनें से श
बल और फुर्ती तो जरूर मालूम होती है " मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

" पहले थोडी शराबपीनें से निःसंदेह रुधिर की गति तेज़ होती है, नाडी ब
लेतीहै और शरीर में फुर्ती पाई जाती है परंतु पीछे उतनी शराबका कुछ असर
लूम होता इस लिये वह धीरे धीरे बढानी पडतीहै उस्के पानकिये बिन
शिथिल होजाता है, अन्न हजम नहीं होता, हाथपांव काम नहीं देते पर बढानें से
देते वोही शराब प्राणघातक होजातीहै. डाक्टर पेरेरा लिखतेहैं कि शराबसे दिमा
दर आदिके अनेक रोग उत्पन्न होतेहैं डाक्टर कार्पेन्टरनें इस बाबत एक पुस्तक
उसमें बहुतसे प्रसिद्ध डाक्टरोंकीरायसे साबित किया है कि शराबसे लकवा,
वात, मूत्ररोग, चर्मरोग, फोडाफुन्सी. और कफवायु आदि अनेक रोग उत्पन्न
शराबियोंकी दुर्दशा प्रतिदिन देखी जातीहै, कभी कभी उनका शरीर सूखे काठक
अपने आप भभक उठताहै, दिमागमें गर्मी बढनेंसे बहुधा लोग बावले होजातेहै

" शराबमें इतनें दोष होते तो अंग्रेजों में शराबका इतना रिवाज हरगिज़
पाता " मास्टर शिभूदयाल बोले.

" तुमको मालूम नहीं है बिलायत के सैकडों डाक्टरोंने इस्के विपरीत र
और वहां सुरापान निवारणी सभा के द्वारा बहुत लोग इसे छोडते जाते हैं प
छोडें तो क्या और न छोडें तो क्या ! इन्द्रके परस्त्री (अहिल्या) गमन से व
काम अच्छा समझ लिया जायगा ! अफसोस ! हिन्दुस्थानमें यह दुराचार दि
बढता जाताहै यहां के बहुतसे कुलीन युवा छिप छिपकर इसमें शामिल होने
पर जब इंग्लैंड जैसे ठंडे मुल्क में शराब पीनेंसे लोगोंकी यह गत होतीहै तो
हिन्दुस्थानियों का क्या परिणाम होगा और देशकी इस दुर्दशा पर कौनसे दे
हितैषी आंखोंसे आंसू न टपकेंगे. "

" अबतो आपहद से आगे बढचले " मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

" नंही, हरगिज़ नहीं मैं जो कुछ कहताहूं यथार्थ कहताहूं देखो इसी मदिराके कारण छप्पन कोटि यादवोंका नाश घडीभर में होगया, इसी मदिराके कारण सिकंदर जवानी में अपनें प्राण खोदिये मनुस्मृति में लिखाहै "द्विजघाती, मद्यप, बहुरि चो स्त्री, मीत ॥ महापातकीहै सोउजाकी इनसों प्रीति ॥ + इसी तरह कुरानमें शराब पातकका महादोष लिखाहै "

" आजतो बाबू साहबनें लाला ब्रजकिशोरकी गद्दी दबाली " मुनशी चुन्नीलाल कुरा कर कहा.

" राम, राम उन्का ढंग तो दुनियासै निरालाहै वह क्या अपनी बात चीतमें किस एक अक्षर बोलनें देतेहै " मास्टर शिंभूदयाल बोले.

" उन्की कहन क्याहै अर्गन बाजाहै एक बार चाबी देदी ; घंटों बजतारह शी चुन्नीलालनें कहा.

" मैंनें तो कलही कहदियाथा कि ऐसे फ़िलासफ़र विद्या संबंधी बातोंमें भले कारी हों संसारी बातोंमें तो किसी कामके नहीं होते " मास्टर शिंभूदयाल बोले.

" मुझको तो उन्का मनभी कुछ अच्छा नहीं मालूम देता " लाला मदनमोह पही बोल उठे.

" आप उन्से ज़रा हरकिशोर की बाबत बातचीत करेंगे तो रहासहा भेद औ ल जायगा देखें इस विषय में वह अपनें भाईकी तरफ़दारी करतेहैं या इन्साफ़ प ते है " मुनशी चुन्नीलाल नें पेच से कहा.

" क्या कहें ? हमारी आदत निन्दा करनें की नहीं है परसों शाम को लाला साह नसे चांदनीचौक में मिले थे आंख की सैन मार कर कहनें लगे " आजकल तो ब दूरों में हो हम पर भी थोडी कृपादृष्टि रक्खा करो " मास्टर शिंभूदयाल नें मदनमो का आशय जान्ते ही जडदी.

" हैं ! तुमसे ये बात कही ? " लाला मदनमोहन आश्चर्य से बोले.

" मुझसे तो सैंकड़ों बार ऐसी नोक झोंक होचुकी है परन्तु मे कभी इन्बातोंक चार नहीं करता " मुनशी चुन्नीलाल नें मिल्ती में मिलाई.

" जब वह मेरे पीछे मेरा ठ्ठा उड़ाते है तो मेरे मित्र कहां रहे ? जब तक वह मेरे मों के लिये केवल मुझसे झगडते थे मुझको कुछ विचार न था परन्तु जब वह रे पासवालों को छेड़नें लगे तो मैं उन्को अपना मित्र कभी नहीं समझसक्ता " लाला दनमोहन बोल उठे.

" सच तो ये है कि सब लोग आप की इस बरदाश्त पर बड़ा आश्चर्य करते हैं " शी चुन्नीलालनें अवसर पाकर बात आगे बढाई.

"आपको लाला ब्रजकिशोर का इतना क्या दबाव है? उन्से आप इतनें क्यों दबते हैं?" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"सच है मैं अपनी दौलत खर्च करता हूं इस्मै उन्की गांठ का क्या जाताहै? और वह बीच, बीच मैं बोलनेवाले कौन हैं?" लाला मदनमोहन तेज़ होकर कहनें लगे.

"इसतरह पर हर बात मैं रोक टोक होनें से बात का गुमर नहीं रहता; नौकरों को मुक़ाबला करनें का हौसला बढ़ता जाताहै और आगे चल कर कामकाज मैं फ़र्क़ आनें की सूरत होचलीहै" मुनशी चुन्नीलाल ले बढ़ानें लगे.

"मैं अब उन्से हरगिज नहीं दबूंगा मैंनें अब तक दब, दब कर बृथा उन्को सिर चढ़ा लिया" लाला मदनमोहन नें प्रतिज्ञा की.

"जो वह झरनें के सरोवरों मैं अपना तैरना और तिबारी के ऊपर से कलामुंडी खा खाकर कूदना देखेंगे तो फिर घंटों तक उन्का राग काहेको बन्द होगा?" पंडित पुरुषो त्तमदास बड़ी देर से बोलनें के लिये उमाह रहेथे वह झट पट बोल उठे

"उन्का वहां चलनें का क्या काम है? उन्को चार दोस्तों मैं बैठ कर हंसनें बोलनें की आदतही नहीं है वह तो शाम सवेरे हवा खा लेते हैं और दिन भर अपनें काम मैं लगे रहते हैं या पुस्तकों के पत्रे उलट पुलट किया करते हैं! वह संसार का सुख भोगनें के लिये पैदा नहीं हुए फिर उन्हें लेजाकर हम क्या अपना मज़ा मट्टी करें?" लाला मदनमोहन नें कहा.

"बरसात मै तो वहां झूलों की बड़ी बहार रहती है" हकीम अहमदहुसैन बोले.

"परन्तु यह ऋतु झूलों की नहीं है आज कल तो होली की बहार है" पंडित पुरुषोत्तमदास नें जवाब दिया.

"अच्छा फिर कब चलनें की ठैरी और मैं कितनें दिन की रुख़सत ले आऊं" मास्टर शिंभूदयाल नें पूछा.

"बृथा देर करनें से क्या फ़ायदा है? चलनाही ठैरा तो कल सवेरे यहां से चलैंगे और कमसे कम दस बारह दिन वहां रहैंगे" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

लाला मदनमोहन केवल सैर के लिये कुतब नहीं जाते ऊपरसे यह केवल सैर का बहाना करते हैं परन्तु इन्के जी मैं अब तक हरकिशोर की धमकी का खटका बनरहा है मुनशी चुन्नीलाल और बाबू बैजनाथ वगैरे नें इन्को हिम्मत बंधानें मैं कसर नहीं रक्खी परन्तु इन्का मन कमज़ोर है इस्सै इन्की छाती अब तक नहीं ठुकती यह इस अवसर पर दस पांच दिन के लिये यहां से टलजाना अच्छा समझते हैं इन्का मन आज दिन भर बेचैन रहाहै इसलिये और कुछ फायदा हो या न हो यह अपना मन बहलानें के लिये, अपनें मनसे यह डरावनें विचार दूर करनें के लिये दस पांच दिन यहां से

हां क्यों जाना अच्छा समझते हैं और इसी वास्ते वे इस वक्त दिल्ली से बाहर जाने की तैयारी कर रहे हैं.

प्रकरण १७

स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार

जो कहुं सब प्रानीन में होय सरलता भाव
सब तीरथ अभिषेक ते ताको अधिक प्रभाव॥

विदुरप्रजागर.

लाला मदनमोहन कुतब जानें की तैयारी कर रहे थे इतनें मे लाला ब्रजकिशोर आपहुंचे.

"आपनें लाला हरकिशोर का कुछ हाल सुना?" ब्रजकिशोर के आते ही मदनमोहन नें पूछा.

"नहीं! मैं तो कचहरी से सीधा चला आयाहूं"

"फिर आप नित्य तो घर होकर आते थे आज सीधे कैसे चले आए?" मास्टर शिंभूदयालनें सन्देह प्रगट करके कहा

"इसमें कुछ दोष हुआ? मुझको कचहरी मे देर होगई थी इसवास्ते सीधा चला आया तुम अपना मतलब कहो"

"मतलब तो आपका और मेरा लाला साहब गुड़ समझते होंगे परन्तु मुझको यह कुछ नई, नईसी मालूम होती है" मास्टर शिंभूदयालनें सन्देह बढानें के वास्ते कहा.

"सीधी बात को वे मतलब पहेली बनाना क्या ज़रूर है? जो कुछ कहना हो सो कहो."

"अच्छा! सुनिये" लाला मदनमोहन कहनें लगे "लाला हरकिशोर के स्वभाव को आप जान्तेही हैं आपके और उन्के बीच बचपन से झगड़ा चला आता है---"

"वह झगड़ा भी आपही की बदोलत है परन्तु खैर इससमय आप उस्का कुछ विचार न करें अपना वृत्तान्त सुनायें औरों के काम में अपनी निजकी बातोंका सम्बन्ध मिलाना बड़ी अनुचित बात है?" लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"अच्छा! आप हमारावृत्तान्त सुनिये" लालामदनमोहन कहनें लगे. "कई दिनसे लाहरकिशोर रुठे रुठेसे रहतेथे कल बेसबब हरगोविंदसे लडपडे उस्की जिद्पर पांच, पांच रुपेके घाटेसे टोपियें देने लगे! शामको बाग़में गएतो लाला हरदयाल

...पु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम् ॥ उभे त्वेते समे स्याता मार्जवं वा विशिष्यते ॥

साहब से वृथा झगडपडे, आज यहां आए तो मुझको और चुन्नीलाल को सैंकडों कहनी न कहनीसुनागए ! "

"बेसबब तो कोई बात नहीं होती आप इस्का अस्ली सबब बताइये ? और लाला हरकिशोर पांच, पांच रुपेके घाटेपर प्रसन्नता से आपको टोपियां देतेथे तो आपनें उनमेंसे दस पांच क्यों नहीं लेलीं ? इस्में आपसे आप हरकिशोरपर पांच पचीस रुपे का जुर्माना होजाता " लाला ब्रजकिशोरनें मुस्कराकर कहा.

"तो क्यामें हरकिशोरकी जिदपर उस्की टोपियें लेलेता और दस बीस रुपेके वास्ते हरगोविंद को नीचा देखनें देता ? मैं हरगोविंद की भूल अपनें ऊपर लेनेंको तैयारहुं परंतु अपनें आश्रितुओं की ऐसी बेइज्जती नहीं किया चाहता " लाला मदनमोहननें ज़ोर देकर कहा.

"यह आप का झूंटा पक्षपातहै " लाला ब्रजकिशोर स्वतंत्रता से कहनें लगे "पापी आप पाप करनें सेही नहीं होता. पापियों की सहायता करनें वाले, पापियों को उत्तेजन देनें वाले, बहुत प्रकार के पापी होतेहैं; कोई अपनें स्वार्थसे, कोई अपराधी की मित्रतासे कोई औरोंकी शत्रुतासे, कोई अपराधी के संबंधियोंकी दयासे, कोई अपनें निजके संबंधसे, कोई खुशामदसे, महान् अपराधियों का पक्षकरनें वाले बनजातेहैं परंतु वह सब पापी समझेजातेहै और वह प्रगटमें चाहे जैसे धर्मात्मा, दयालु, कोमल चित्तहों, भीतरसे वहभी बहुधा वैसेही पापी और कुटिल होतेहैं "

"तो क्या आपकी राहमें किसी की सहायता नहीं करनी चाहिये ? " लाला मदनमोहननें तेज़होकर पूछा.

"नहीं, बुरे कामोंके लिये बुरे आदमियों की सहायता कभी नहीं करनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. " रशियाका शहन्शाह पीटर एक बार भयंकरज्वर से मरनें लायक़ होगयाथा उससमय उसके वज़ीरनें पूछा कि " नौ अपराधियों को अभी लूट, मारके कारण कठोरदंड दियागयाहै क्या वहभी ईश्वर प्रार्थनाके लिये छोड दियेजाये ? " पीटरनें निर्बलआवाज से कहा " क्या तुम यह समझतेहो कि इन अभागोंको क्षमा करनें और इन्साफ़ की राहमें कांटे बोनेंसे मैं कोई अच्छा काम करूंगा ? और जो अभागे माया जालमें फसकर उस सर्व शक्तिमान ईश्वरको भूल गएहैं मेरे फायदे के लिये ईश्वर उन्की प्रार्थना अंगीकार करेगा ? नहीं हरगिज़नहीं; जो कोई काम मुझसे ईश्वर की प्रसन्नता लायक बन पडे तो वह यही इन्साफ़का शुभकाम है "

"मैंतो आपके कहनें से इन्साफ़के लिये परमार्थ करना कभी नहीं छोड सक्ता " लाला मदनमोहन तमक कर कहनें लगे

"जो जिस्के लिये करनाचाहिये सो करना इन्साफ़ मैं आगया परंतु परमार्थ का

ाम परमार्थ कैसे होसक्ताहै ? एक के लाभके लिये दूसरों की अनुचित हानि परमार्थ कैसे समझी जासक्ती है ? किसी तरह के स्वार्थ बिना केवल अपनें ऊपर परिश्रम ठा कर, आप दुःख सहकर, अपना मन मारकर औरोंको सुखी करना सच्चा धर्म मझा जाताहै जैसे यूनान मैं कोड्रर्स नामी बादशाह राज करताथा उससमय यूनानियों र हेरेकडिली लोंगों नें चढाई की. उससमयके लोग ऐसे अवसर पर मंदिरमें जाकर ार जीतका प्रश्न किया करतेथे इसी तरह कोड्रर्सनें प्रश्न किया तब उसे यह उत्तर मेला कि " तू शत्रुके हाथसे माराजायगा तो तेरा राज स्वदेशियोंके हाथ बनारहेगा मौर तू जीता रहैगा तो शत्रु मबल होताजायगा"कोड्रर्स देशोपकारके लिये प्रसन्नाता ी अपनें प्राणदेनें को तैयार था परंतु कोड्रर्सके शत्रु को भी यह बात मालूम होगई इस लिये उसनें अपनी सेना में हुक्म देदिया कि कोड्रर्स को कोई न मारे. तथापि कोड्रर्स यह बात लोग दिखाईके लिये नहीं कीथी इससे वह साधारण सिपाही का भेष बना कर लड़ाईमै लड़मरा परंतु अपनें देशियों की स्वतंत्रता शत्रुके हाथ नजानें दी."

" जब आप स्वतंत्रता को ऐसा अच्छा पदार्थ समझतेहैं तो आप लाला साहब को इच्छानुसार काम करनेंसे रोककर क्यों पिंजरेका पंछी बनाया चाहतेहैं ? " मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"यह स्वतंत्रता नहीं स्वेच्छाचारहै;और इनको एक समझनेंसे लोग बारम्बार धोखा खातेहैं " लालाब्रजकिशोर कहनेंलगे " ईश्वरनें मनुष्यको स्वतंत्र बनायाहै परस्वेच्छाचारी नहीं बनाया क्योंकि उस्को प्रकृतिके नियमों मैं अदलबदल करनें की कुछशक्ति नहीं दीगई वह किसी पदार्थकी स्वाभाविक शक्तिमै तिलभर घटाबढ़ी नहीं करशक्ता जिन पदार्थों मे अलग, अलग रहनें अथवा रसायनिक संयोग होनेंसे जो, जो शक्ति उत्पन्न होनेंका नियम ईश्वरनें बनादिया है बुद्धिद्वारा उन पदार्थोंकी शक्ति पहचानकर केवल उन्से लाभ लेनेंके लिये मनुष्य को स्वतंत्रता मिली है इसलिये जोकाम ईश्वरके नियमानुसार स्वाधीनभावसै कियाजाय वह स्वतन्त्रतामै समझाजाताहै और जो काम उस्के नियमोंके विपरीति स्वाधीनभावसे कियाजाय वह स्वेच्छाचार और उस्का स्पष्ट दृष्टांत यह है कि शतरंजके खेलमें दोनों खिलाडियों को अपनी मर्जी मूजब चालचलनें की स्वतंत्रता दीगईहै परंतु वह लोग घोड़े को हाथीकी चाल या हाथीको घोडेकी चाल नहीं चलसक्ते और जो वे इसतरह चलें तो उन्का चलना शतरंजके खेलसे अलग होकर स्वेच्छाचार समझाजायगा यह स्वेच्छाचार अत्यंत दूषित है और इस्का परिणाम महा भयंकर होताहै इसलिये बर्तमान समयके अनुसार सबके फायदे की बातोंपर सत् शास्त्र और शिष्टाचार की एकतासे बरताव करना सच्ची स्वतंत्रताहै और बड़े लोगोंनें स्वतंत्रता ी यह हद बांध दीहै. मनुमहाराज कहते हैं " बिना सताए काहुके धीरे धर्म बेटार॥

जों मृत्तिका दीमक हरत क्रम क्रमसों चहुंओर ॥ * " महाभारत कर्णपर्वमें युधिष्टिर और अर्जुन का बिगाड़ हुआ उससमय श्रीकृष्णनें अर्जुनसे कहाहै कि " धर्म्म ज्ञान अनुमानते अतिशय कठिन लखाय ॥ एक धर्म्महै बेद यह भाषत जनसमुदाय ॥ १ तामें कछु सशयनहीं पर लखधर्म अपार ॥ स्पष्टकरन हित कहुं कहूं पंडित करत बिचार ॥ २ जहां न पीडित होय कोउ सोसुधर्म्म निरधार॥हिसक हिंसा हरनहित भयो सुधर्म्म मचार ३ † माणिनकों धारण करे ताते कहियत धर्म्म ॥ जासों जन रक्षित रहे सो निश्चय शुभकर्म ॥ ४ जे जनपर संतोष हित करें पाप शुभजान ॥ तिनसों कबहुं न बोलिये श्रुति बिरुद्ध पहिचान ॥ ५ " + इसलिये दूसरेकी मसन्नताके हेतु अधर्म्म करनेंका किसीको अधिकार नहींहै इसीतरह अपनें या औरोंके लाभके लिये दूसरेके वाजबी हकोंमें अंतर डालनेंका भी किसीको अधिकार नहींहै जिस्समय महाराज रामचंद्रजीनें निर्दोष जनक नंदनीका परित्यागकिया जानकीजीको कुछ थोड़ा दुःखथा? परंतु वह गर्भनाशके भयसे अपना शरीर नछोड़सकीं हां जिस्तरह उन्नें अकारण अत्यंत दुःख पानें परभी कभी रघुनाथजीके दोष नहीं बिचारेथे इसतरह सब माणियों को अपनें विषयमें अपराधीके अपराध क्षमा करनेंका पूरा अधिकार है और इसतरह अपनें निजके अपराधोंका क्षमा करना मनुष्यमात्र के लिये अच्छे से अच्छा गुण समझाजाताहै परंतु औरोंको किसी तरह की अनुचित हानिहो वहां यह रीति काममें नहीं लाई जासक्ती "

" मैंतो यह समझताहूं कि मुझसे एक मनुष्यका भी कुछ उपकार होसके तो मेरा जन्म सफल है " लालामदनमोहननें कहा.

" जिसमें नामवरी आदि स्वार्थका कुछ अंशहो वह परोपकार नहीं और परोपकार करनेंमे भी किसी खास मनुष्यका पक्ष कियाजाय तो बहुधा उस्के पक्षपातसे औरोंकी हानि होनेंका डररहताहै इसलिये अशक्त अपाहजोंका पालन पोषण करना, इन्साफ़का साथ देना और हर तरहका स्वार्थ छोड़कर सर्बसाधारणके हितमें तत्पर रहना मेरेजान सच्चा परोपकारहै " लालाब्रजकिशोरनें जवाबदिया.

---

* धर्म्मं शनस्सं चिनुयाद्वल्मीक मिव पुत्तिका ॥ परलोक सहायार्थं सर्वं भूतान्य पीडयन् ॥

† दुष्करं परमं ज्ञानं तर्केणानु व्यवस्यति ॥ श्रुतेर्धर्म इतिह्येके वदंति बहवोजनाः ॥ १
तत्तेन मत्यसूयामि नचसर्वं विधीयते ॥ मभवार्थाय भूतानां धर्मं मवचनं कृतं ॥ २
यत्स्याद हिंसा संयुक्तं सधर्मइति निश्चयः ॥ अहिंसार्थाय हिंस्राणां धर्मं मवचनं कृतं ॥ ३

\+ धारणाद्धर्म मित्याहु धर्मो धारयते मजाः ॥ यत्स्या द्धारण संयुक्तं सधर्मइति निश्चयः ॥ ४
येन्यायेन जिहीर्षंतो धर्म्ममिच्छंति कहिंचित ॥ अकूजनेन मोक्षं वा नानुकूजेत् कथचन ॥ ५

प्रकरण १८

क्षमा.

नरको भूषण रूपहै रूपहुको गुणजान ।
गुणको भूषण ज्ञानहै क्षमा ज्ञान को मान ॥ १ ॥*

सुभाषित रत्नाकरे.

आप चाहे स्वार्थ समझें चाहे पक्षपात समझें हरकिशोरनें तो मुझे ऐसा चिड़ाया
 उस्से बदला लिये बिना कभी नहीं रहूंगा " लालामदनमोहननें गुस्से से कहा.
उस्का कसूर क्या है ? हरेक मनुष्यसै तीन तरहकी हानि होसक्ती हैं एक अप-
के दूसेर के यश मे धब्बा लगाना, दूसेर शरीर की चोट, तीसरे मालका नुक्सान
न्मैं हरकिशोरनें आपकी कौन्सी हानि की? " लाला ब्रजकिशोरनें कहा.
लामदनमोहन के मनमैं यह बात निश्चय समारही थी कि हरकिशोरनें कोई बड़ा
पराध किया है परन्तु ब्रजकिशोरनें तीन तरह के अपराध बताकर हरकिशोर
राध पूछा तब वह कुछ न बतासके क्योंकि मदनमोहन की वाक़फियत में ऐसा
पराध हरकिशोर का न था. मदनमोहन को लोगोंनें आस्मानपर चढ़ा रक्खा
लिये केवल हरकिशोरके जवाब देनेंसे उस्के मनमैं इतना गुस्सा भर रहाथा.
उस्नें बड़ी ढिटाई की वह अपनें रुपे तत्काल मांगनें लगा और रुपया लिये बिना
साफ़ इन्कार किया " लाला मदनमोहननें बड़ी देर सोच बिचार कर कहा.
बस उस्का यही अपराधहै ? इस्मैं तो उस्नें आपकी कुछ हानि नहीं की मनुष्य
नासा जी सबका समझाना चाहिये. आपका किसी पर रुपया लेना हो और
ो रुपे की ज़रुरत हो अथवा उस्की तरफ़से आपके जीमै किसी तरह का शक
 अथवा आपके और उस्के दिलमैं किसी तरह का अंतर आजाय तो क्या
उस्से व्यवहार बंद करनें के लिये अपनें रुपेका तक़ाज़ा न करेंगे ? जब ऐसी
में आपको अपनें रुपेके लिये औरों पर तक़ाज़ा करनें का अधिकार है तो
ी आप पर तक़ाज़ा करनेंका अधिकार क्यों न होगा ? आपतो बेसबब ज़रा,
 बातोंपर मुंह बनाएं, वाजबी राहसै ज़रासी बात दुलख देनेंपर उस्को अपना
नसमझनें लगें और दूसरेको वाजबी बात कहनें का भी अधिकार नहो ! " लालाब्र-
ारनें ज़ोरदेकर कहा.
साहब ! उस्नें लाला साहबको तंग करनें की नीयतमै एसा तक़ाज़ा कियाथा "
चुन्नीलाल बोले.

---

* नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः ॥ गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥

" लाला साहब को उस्का स्वभाव पहचान्कर उस्से व्यवहार डालना चाहियेथा अथवा उस्का रुपया बाक़ी न रखना चाहियेथा. जब उस्का रुपया बाक़ी है तो उस्को तक़ाज़ा करनें का निस्संदेह अधिकार है और उसें कड़ा तक़ाज़ा करनें में कुछ अपराधभी कियाहो तो उस्के पहले कामों का संबंध मिलना चाहिये " लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. " प्रल्हादजीनें राजा बलिसे कहा है " पहलो उपकारी करे जो कहुं अतिशय हान ॥ तौहू ताकों छोड़िये पहले गुण अनुमान ॥ १ ॥ बिन समझे आश्रित करै सोऊ क्षमिये तात ॥ सब पुरुषनमें सहजनहिं चतुराई की बात ॥ २ ॥ " + यह सचहै कि छोटे आदमी पहले उपकार करके पीछे उस्का बदला बहुधा अनुचित रीतिसे लिया चाहतेहैं परंतु यहां तो कुछ ऐसा भी नहीं हुआ. "

" उपकार हो या न हो ऐसे आदमियोंको उन्की करनी का दंडतो अवश्य मिलना चाहिये " मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे. " जो उन्को उन्की करनीका दंड न मिलेगा तो उन्की देखादेखी और लोग बिगड़ते चले जायंगे और भय बिना किसी बातका प्रबंध नरहसकेगा सुधरे हुए लोगों का यह नियम है कि किसी को कोई नाहक न सतावे और सतावे तो दंड पावे. दंड का प्रयोजन किसी अपराधी से बदला लेनेंका नहींहै बल्कि आगेकेलिये और अपराधों से लोगों को बचानें का है "

" इसी वास्ते मैं चाहताहूं कि मेरा चाहे जितना नुक्सान होजाय परंतु हरकिशोर के पल्ले फूटी कौड़ी न पड़नें पावे " लाला मदनमोहन दांत पीसकर कहनें लगे.

" अच्छा ! लाला साहबनें कहा इसरीति से क्या मास्टर साहबके कहनें का मतलब निकल आवेगा ? " लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे. " आप जान्ते हैं कि दंड दो तरह का है एक तो उचित रीति से अपराधी को दंड दिवाकर औरोंके मनमें अपराधकी अरुचि अथवा भय पैदा करना, दूसरे अपराधी से अपना बैर लेना और अपनें जी का गुस्सा निकालना. जिस्सें झूंटी निंदा करके मेरी इज्जत ली उस्को उचित रीतिसे दंड करानेंमें मैं अपनें देशकी सेवा करताहूं परंतु मैं यह मार्ग छोड़कर केवल उस्की बरबादी का बिचार करूं अथवा उस्का बैर उस्के निर्दोष संबंधियों से लिया चाहूं, आधीरात के समय चुपके से उस्के घर में आग लगादूं और लोगों को दिखानें के लिये हाथमें पानी लेकर आगबुझानें जाऊं तो मेरी बराबर नीच कौन होगा ? बिदुरजीनें कहाहै " सिद्ध होत बिनहूजतन मिथ्या मिश्रित काज ॥ अकर्तव्यनें स्वनह मननधरो

+ पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधगरीयसि ॥ उपकारेण तत्तस्य क्षन्तव्यमपराधिनः ॥ अबुद्धिमाश्रितानां तु क्षन्तव्यमपराधिनां ॥ नहि सर्वत्र पांडित्यं सुलभं पुरुषेण वै

॥ १ " ऐसी कारखाई करनें वाला अपनें मनमें प्रसन्न होता है कि मैंनें अपनें
ःखीकिया परंतु वह आप महापापी बन्ताहै और देशका पूरा नुक्सान करताहै
जनें कहाहै " दुखितहोय भाखे न तो मर्म विभेदक बैन ॥ द्रोह भाव राखे
रैं न परहि अचैन ॥ २ "
अपराध केवल मन को सतानें वाले हों और प्रगट में साबित न होसकें तो
दला दूसरे से कैसे लिया जाय ? " लाला मदनमोहननें पूछा.
थमतो ऐसा अपराध होही नहीं सक्ता और थोड़ा बहुत होभी तो वह खयाल
यक् नहीं है क्योंकि संदेहका लाभ सदा अपराधी को मिलता है इस्के सिवाय
ई अपराधी सच्चे मनसे अपनें अपराधका पछतावा करले तो वहभी क्षमा
ग्य होजाताहै और उस्सेभी दंड देनेंके बराबर ही नतीजा निकल आताहै "
र एक अपराधी पर इतनी दया करनी क्या जरूर है ? " लाला मदनमोहननें
से पूछा.
जब हम लोग सर्व शक्तिमान परमेश्वर के अत्यंत अपराधी होकर उस्से क्षमा
की आशा रखतेहैं तो क्या हमको अपनें निजके कामोंके लिये, अपनें अधि-
कामोंके लिये, आगे की राह दुरुस्त हुए पीछे, अपराधीके मनमें शिक्षाकी बराबर
ा हुए पीछे, क्षमा करना अनुचित है ? यदि मनुष्यके मनमें क्षमा और दयाका
नहो तो उसमें और एक हिंसक जतु में क्या अंतरहै ? पोप कहताहै " भूल
मनुष्य का स्वभाव है परन्तु उस्को क्षमा करना ईश्वर का गुण है" + एक अप
पना कर्तव्य भूलजाय तो क्या उस्की देखा देखी हमको भी अपना कर्तव्य
ना चाहिये सादीनें कहाहै " होत हुमा याही लिये सब पक्षिन को राय ॥ अस्थि
सै तनहि काहू कों न सताय ॥" * दूसरे का उपकार याद रखना वाजवी बातहै
अपकार याद रखनें में या यों कहो कि अपनें कलेजे का घाव हरा रखनें में
तारीफ़ है! जो दैव योग से किसी अपराधी को औरों के फ़ायदे के लिये दंड
की ज़रूरत हो तो भी अपनें मनमें उस्की तरफ़ दया औरकरुणा ही रखनी चाहिये"
ये सब बातें हँसी खुशी में याद आती हैं क्रोध में बदला लिये बिना किसी तरह
को सन्तोष नहीं होता" लाला मदनमोहन नें कहा.
बदला लेनें का तो इस्से अच्छा दूसरा रस्ता ही नहीं है कि वह अपकार करे

स्योपिनानि कर्माणि सिद्धमपुर्याति भारत ॥ अनुपायमयुक्तानि मारम तेषु मनः कृथाः ॥
न्तुदः स्यादार्तोपि न परद्रोहकर्म्मधीः ॥ ययास्योद्विजते वाचा नालोक्यांतामुदीरयेत् ॥
To err is human, to forgive divine.
माय मासेर मुर्गी अज़ां शरफ़ दारद ॥ किउस्तुख्वां खुरदी तायरे नयाज़ारद ॥

और उस्के बदले आप उपकार करो" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " जब वह अपनें अपराधों के बदले आप की महेरबानी देखेगा तो आप लज्जित होगा और उसका मन ही उस्को धिःकारनें लगेगा. बैरी के लिये इस्से कठोर दंड दूसरा नहीं है परन्तु यह बात हर किसी से नहीं होसक्ती. तरह तरह का दुःख, नुक्सान और निन्दा सहनें के लिये जितनें साहस, धैर्य और गंभीरता की जरूरत है बैरी से बैर लेंने के लिये उन्की कुछभी ज़रुरत नहीं होती. यह काम बहुत थोड़े आदमियों से बन पड़ताहै पर जिनसै बन पड़ताहै वही सच्चे धर्मात्मा हैः-

"जिस्समय साइराक्यूज़वालों नें एथेन्स को जीत लिया साइराक्यूज़ की कौन्सिल में एथीनियन्स को सजा देंनें की बाबत बिवाद होनें लगा इतनें मै निकोलास नामी एक प्रसिद्ध गृहस्थ बुढ़ापेके कारण नौकरों के कंधेपर बैठकर वहां आया और कौनसिलको समझाकर कहनें लगा " भाइयो ! मेरी ओर दृष्टि करो मै वह अभागा बाप हूं जिस्की निस्बत ज्यादः नुक्सान इस लड़ाई में शायदही किसी को हुआ होगा मेरे दो जवान बेटे इस लड़ाई मे देशोपकार के लिये मारे गए उन्से मानों मेरे सहारे की लकड़ी छिन गई, मेरे हाथ पांव टूट गए. जिन एथेन्सवालोंनें यह लडाई की उन्को मैं अपनें पुत्रों के प्राणघातक समझ कर थोड़ा नहीं धिक्कारता तथापि मुझको अपनें निज के हानि लाभ के बदले अपनें देश की प्रतिष्ठा अधिक प्यारीहै. बैरियों से बदला लेंनें के लिये जो कठोर सलाह इस्समय हुईहै वह अपनें देश के यश को सदा सर्वदा के लिये कलंकित कर देगी. क्या अपनें बैरियों को परमेश्वरकी ओर से कठिन दण्ड नहीं मिला? क्या उन्को युद्ध मे इस तरह हारनें से अपना बदला नहीं भुगता ? क्या शत्रुओं नें अपनें प्राणरक्षा के भरोसे पर तुमको हथियार नहीं सोंपे ? और अब तुम उन्से अपना बचन तोड़ोगे तो क्या तुम बिश्वासघाती न होगे ? जीतनें से अबिनाशी यश नहीं मिल सक्ता परन्तु जीते हुए शत्रुओं पर दया करनें से सदा सर्वदा के लिये यश मिलता है" साइराक्यूज़ की कौन्सिल के चित्त पर निकोलास के कहनें का ऐसा असर हुआ कि सब एथीनियन्स तत्काल छोड़दिये गए"

"आप जान्ते हैं कि शरीर के घाव औषधि से रुज जाते हैं परन्तु दुखती बातों का घाव कलेजे पर से किसी तरह नहीं मिटता" मुनशी चुन्नीलाल नें कहा.

"क्षमाशील के कलेजे पर ऐसा घाव क्यों होनें लगा है ? वह अपनें मनमें समझता है कि जो किसीनें मेरा सच्चा दोष कहा तो बुरे माननें की कौन्सी बात हुई ? और मेरा मतलब को बिना पहुंचे कहा तो नादान के कहनें से बुरा माननें की कौन्सी बात रही और जान बूझ कर मेरा जी दुखानें के वास्ते मेरी झूंटी निन्दा की तो मैं उचित रीति से उस्को झूंटा डाल सक्ताहूं सज़ा दिवा सक्ताहूं फिर मनमें द्वेष और प्रगट में गाली

नें की क्या ज़रूरतहै? आप बुराहो और लोग अच्छा कहें इस्की निस्बत आप और लोग बुरा कहें यह बहुत अच्छाहै" लाला ब्रजकिशोरने जवाब दिया.

प्रकरण १९

स्वतंत्रता

स्तुति निन्दा कोऊ करहि लक्ष्मी रहहि कि जाय
मरे कि जिये न धीरजन धरे कुमारग पाय ॥ *

प्रसंगरत्नावली.

व तो यहहै कि आज लाला ब्रजकिशोर साहबनें बहुत अच्छी तरह भाई- ाया इन्की बात चीत मै यह बड़ी तारीफ़है कि जैसा काम किया चाहते सर सब के चित्त पर पैदा कर देते है" मास्टर शिभूदयालनें मुस्करा कर कह गिज़ नहीं हरगिज़ नहीं, मै इन्साफ के मामले में भाईचारे को पास न जिस रीति से बरतनें के लिये मैं और लोगों को सलाह देता हूं उस रीति अपनें ऊपर फ़र्ज़ समझताहूं. कहना कुछ और, करना कुछ और नालायक हे और सचाई की अमिट दलीलों को दलील करनेंवाले पर झूंटा दोषारो ा देनेंवाले और होते है" लाला ब्रजकिशोरनें शेर की तरह गरज कर क के मारे उन्की आंखें लाल होगईं.

ब्रजकिशोर अभी मदनमोहन को क्षमा करनें के लिये सलाह देरहे थे इत क शिभूदयाल की ज़रासी बात पर गुस्से मैं कैसे भर गए? शिभूदयाल नें त प्रगट मे ब्रजकिशोर के अप्रसन्न होनें लायक़ नहीं कही थी? निरसन्दे हीं कही परन्तु भीतर से ब्रजकिशोरका ह्रदय बिदीर्ण करनें के लिये य बचन सबसे अधिक कठोर था. ब्रजकिशोर और सब बातों मे निरभिमानी नी ईमानदारी का अभिमान रखते थे इस लिये जब शिभूदयालनें उन्की ईमा वट्टा लगाया तब उन्को क्रोध आए बिना न रहा. ईमानदार मनुष्य को इतन किसी बातसे नहीं होता जितना उस्को बेईमान बतानें से होताहै.

ाप क्रोध न करें. आप को यहां की बातों मे अपना कुछ स्वार्थ नहीं है त क बात पर इतना ज़ोर क्यों देते हैं? क्या आप की ये सब बातें किसी के सक्ती हैं? और शुभचिन्तकी के बिचार से हानि लाभ जतानें के लिये क्य रा काफ़ी नहीं है?" मुनशी चुन्नीलालनें मास्टर शिभूदयाल की तरफ़दार हा.

---

* न्दन्तु नीतिनिपुणा यदिवा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥
व या मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

"मैंनें अबतक लाला साहब से जो स्वार्थ की बात की होगी वह लाला साह
और तुम लोग जान्ते होगे. जो इशारे में काम होसक्ता तो मुझको इतनें बढ़ा कर कह
से क्या लाभ था ? मैंनें कही हैं वह सब बातें निस्सन्देह याद नहीं रहसक्तीं परन्तु म
लगा कर सुन्नें से बहुधा उन्का मतलब याद रहसक्ता है और उससमय याद न भी र
तो समय पर याद आजाताहै. मनुष्य के जन्म से लेकर बर्तमान समय तक जिस, जि
हाल्त में वह रहताहै उन सबका असर बिना जाने उस्की तबियत में बना रहता
इस वास्ते मैंनें ये बातें जुदे, जुदे अबसर पर यह समझ कर कह दीं थीं कि अब कु
फायदा न होगातो आगे चल कर किसी समय काम आवेंगी" लाला ब्रज किशोर
जवाब दिया.

"अपनी बातों को आप अपनें ही पास रहनें दिजिये क्योंकि यहां इन्का को
गाहक नहीं है" लाला मदनमोहन कहनें लगे "आपके कहनें का आशय यह मालू
होताहै कि आपके सिवाय सब लोग अनसमझ और स्वार्थ पर हैं."

"मैं सबके लिये कुछ नहीं कहता परंतु आपके पास रहनें वालों में तो निस्सन्दे
बहुत लोग नालायक और स्वार्थ पर हैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "ये लो
दिनरात आपके पास बैठे रहतेहैं, हरबात में आपकी बड़ाई किया करतेहैं, हर काम
अपनी जान हथेली पर लिये फिरतेहैं पर यह आपके नहीं; आपके रुपे के दोस्त
परमेश्वर नकरे जिस दिन आपके रुपे जाते रहेंगे इन्का कोसों पता न लगेगा ज
इज्जत दौलत, और अधिकारके कारण मिल्ती है वह उस मनुष्य की नहीं होती. जो
लोग रुपेके कारण आपको झुक, झुक कर सलाम करते हैं वही अपनें घर बैठक
आपकी बुद्धिमानी का ठट्ठा उड़ातेहैं ! कोई काम पूरा नहीं होता जबतक उसमें अनेक
प्रकारके नुकसान होनेंकी संभावना रहती है पूरे होनें की उम्मेद पर दस काम उठा
जाते हैं जिन्में मुश्किल से दो पूरे पड़ते हैं परंतु आपके पास वाले खाली उम्मेद प
बल्कि भीतरकी नाउम्मेदी परभी आपको नफे का मब्ज़ बाग़ दिखा कर बहुतस
रुपया खर्च करादेतेहैं ! मैं पहले कहचुकाहूं कि आदमी की पहचान ज़ाहिरी बातों
नहीं होती उस्के बरतावसे होतीहै. इन्में आपका सच्चा शुभचिन्तक कौनहै ? आपके
हानि लाभका दरसानेंवाला कौनहै ? आपके हानिलाभ का विचार करनें वाला कौनहै
क्या आपकी हांमेंहां मिलानें में सब होगया ! मुझको तो आपके मुसाहिबोंमें मिजा
मसल्हतसनके और किसी बातकी लियाकत नहीं मालूमहोती कोई पचलियां कहक
इनाम पाताहै, कोई छेड़ छाड़कर गालियें खाता है, कोई गानें बजानें का ढंग ज्माता
है, कोई भोलपनें लड़कर, हँसना हँसाताहै पर ऐसे आदमियोंमें किसी तरह की उम्मे
नहीं होसक्ती"

ी दिल्लगी की आदतहै मुझसे तो हँसी दिल्लगी बिना रोती सूरत बना
र नहीं रहाजाता परंतु इन बातोंसे कामकी बातोंमें कुछ अंतर आयाहो तो
लाला मदनमोहननें पूछा.

के पिताका परलोक हुआ जबसे आपकी पूंजीमें क्या घटाबढ़ी हुई? कितनी
हुई? कितनी अहँड हुई कितनी गलत हुई, कितनी खर्च हुई इनबातोंका
विचार कियाहै? आमदनी से अधिक खर्च करनेंका क्या परिणामहै? कौन्सा
बीहै, कौन्सा गैरवाजबीहै, मामूली खर्चके बराबर बंधी आमदनी कैसे होसक्ती
तोंपर कोई दृष्टि पहुंचाताहै? मामूली आमदनीपर किसीकी निगाहहै? आमदनी
मामूली खर्चके वास्ते हरेक सीगेका अंदाजा पहलेसे कभी कियागयाहै, गैरमामूली
वास्ते मामूली तौरपर सीगेवार कुछ रकम हरसाल अलग रक्खी जातीहै?
नुक्सान, खर्च और आमदनी कमहोनें के लिये कुछ रकम हरसाल बचाकर
रक्खी जातीहै? पैदावार बढ़ानें के लिये बर्तमान समयके अनुसार अपनें
वालों की काररवाई, देशदेशांतर का वृत्तान्त और होनहार बातों पर निगाह
र अपनें रोज़गार धंदेकी बातोंमें कुछ उन्नत्ति की जातीहै? व्यापारके तत्व
थोड़े खर्च, थोड़ी महनत और थोड़े समयमैं चीज तैयार होनेंसे कितना फ़ायदा
इन बातोंपर किसी नें मन लगायाहै? उगाहीमें कितनें रुपे लेनेंहैं, पटनें की
रतहै, देनदारों की कैसी दशाहै, मयादके कितनें दिन बाक़ीहैं इनबातोंपर कोई
ताहै? व्योपार सीगाके मालपर कितनी रकम लगतीहै, माल कितना मोजूदहै
थ बेचनेंमें फ़ायदा होगा इन बातोंपर कोई निगाह दोड़ाताहै? खर्चसीगाके
कभी विध मिलाई जातीहै? उसकी कमाबेशीके लिये कोई जिम्मेदारहै?
कितनेंहैं, तनख्वाह क्या पातेहैं, काम क्या करतेहैं, उन्की लियाकत कैसीहै,
कैसीहै, काररवाई कैसीहै, उन्की सेवाका आप पर क्या हक़है, उन्के रखनें न
आपका क्या नफ़ा नुक्सानहै इनबातों कोकभी आपनें मन लगाकर सोचाहै?"

मैं पहलेही जान्ताथा कि आप फिर फिरकर मेरे पासके आदमियोंपर चोट करेंगे
ब मुझको यह बात असह्यहै. मैं आपना नफ़ा नुक्सान समझताहूं आप इस
अधिक परिश्रम नकरें" लाला मदनमोहननें रोककर कहा.

मैं क्या कहूंगा पहलेसे बुद्धिमान कहते चलेआएहैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें
वलियम कूपर कहताहै. :-

"जिननृपनको शिशुकालसे सेवहिं छली तनमन दिये॥
तिनकी दशा अविलोक करुणाहोत अति मेरे हिये॥
आजन्मसों अभिषेकलों मिथ्या प्रशंसा जनकरें॥

बहु भांत अस्तुति गाय, गाय सराहि सिर स्हेरा धरें ॥
शिशुकालते सीखत सदा सजधज दिखावन लोकमें ॥
तिनको जगावत मृत्यु बहुतिक दिनगए इहलोकमें ॥
मिथ्या प्रशंसी बैठ घुटनन, जोड़कर, मुस्कावहीं ॥
छलकी सुहाती बातकहि पापहि धरम दरसावहीं ॥
छबिशालिनी, मृदुहासिनी अरुधनिक नितघेरे रहैं ॥
झूंठी झलक दरसाय मनहि लुभाय कछु दिनमें लहैं ॥
जे हेम चित्रित रथन चढ़, चंचल तुरंग भजावहीं ॥
सेना निरख अभिमानकर, यों व्यर्थ दिवस गमावहीं ॥
'तिनकी दशा अविलोक' भाखत फेरहूं मनदुख लिये ॥
नृपकी अधमगति देख 'करुणा होत अतिमेरे हिये' ॥ " ×

"लाला साहब अपनें सरल स्वभाव सै कुछ नहीं कहते इस वास्ते आप चाहे जो कहते चले जाँय परन्तु कोई तेज़ स्वभाव का मनुष्य होता तो आप इस तरह हरगिज़ न कहनें पाते " मास्टर शिंभूदयाल नें अपनी जात दिखाई.

× I pity kings, whom worship waits upon
Obsequious from the cradle to the throne,
Before whose infant eyes the flatterer bows,
And binds a wreath about their baby brows,
Whom education stiffens into state,
And death awakens from that dream too late.
Oh ! if servility with supple knees,
Whose trade it is to smile, to crouch, to please;
If smooth dissimulation, skill'd to grace
A devil's purpose with an angel's face,
If smiling peeresses, and simp'ring peers,
Encompassing his throne a few short years;
If the gilt carriage, and the pamper'd steed,
That wants no driving, and disdains the lead,
If guards, mechanically form'd in ranks,
Playing, at beat of drum, their martial pranks,
Shouldr'ing and standing as if stuck to stone,
While condescending majesty looks on—
If monarchy consist in such base things,
Sighing I say again, I pity kings, !

William Cowper.

बहु भांत अस्तुति गाय, गाय सराहि सिर स्हेरा धरैं ॥
शिशुकालतें सीखत सदा सजधज दिखावन लोकमैं ॥
तिनको जगावत मृत्यु बहुतिक दिनगए इहलोकमैं ॥
मिथ्या प्रशंसी बैठ घुटनन, जोड़कर, मुस्कावहीं ॥
छलको सुहातो बातकहि पापहि धरम दरसावहीं ॥
छबिशालिनी, मृदुहासिनी अरुधनिक नितघेरे रहैं ॥
झूंटी झलक दरसाय मनहि लुभाय कछु दिनमैं लहैं ॥
जे हेम चित्रित रथन चढ़, चंचल तुरंग भजावहीं ॥
सेना निरख अभिमानकर, यों व्यर्थ दिवस गमावहीं ॥
'तिनकी दशा अविलोक' भाखत फेरहूं मनदुख लिये ॥
नृपकी अधमगति देख 'करुणा होत अतिमेरे हिये' ॥ " ›

ला साहब अपनें सरल स्वभाव सै कुछ नहीं कहते इस वास्ते अ
े जैंय परन्तु कोई तेज़ स्वभाव का मनुष्य होता तो आप इस
ाते " मास्टर शिंभूदयाल नें अपनी ज़ात दिखाई.

" सचहै ! बिदुरजी कहते हैं " दयावन्त लज्जा सहित मृदु अरु सरल सुभाइ ॥ ता
र को असमर्थ गिन लेत कुबुद्धि दबाइ ॥ + " इस लिये इन गुणों के साथ सावधानी
ी बहुत जरूरत है सादगी और सीधेपन से रहनें में मनुष्य की सच्ची अशराफ़त मालूम
ोतीहै मनुष्य की उन्नति का यह सीधा मार्ग है परन्तु चालाक आदमियों की चालाकी
बचनें के लिये हर तरह की वाक़फ़ियत भी जरूर होनी चाहिये " लाला ब्रजकिशोर
ने जवाब दिया.

" दोषदर्शी मनुष्यों के लिये सब बातों में दोष मिलसक्ते हैं क्योंकि लाला साहब के
सरल स्वभाव की बड़ाई सब संसार में हो रही है परन्तु लाला ब्रजकिशोर को उसमें भी
दोष ही दिखाई दिया ! " पंडित पुरुषोत्तमदास बोले.

" द्रव्य के लालचियों की बड़ाई पर मैं क्या बिश्वास करूं ? बिदुरजी कहते हैं कि
" जाहि सराहत हैं सब ज्वारी। जाहि सराहत चंचल नारी ॥ जाहि सराहत भाट बृथारी।
मानहु सो नर जीवत नाहीं ॥ ‡ लाला ब्रज किशोरनें जवाब दिया.

" मैं अच्छा हुं या बुराहूं आपका क्या लेता हुं ? आप क्यों हात धोकर मेरे पीछे
पड़े हैं ? आपको मेरी रीति भांति अच्छी नहीं लगती तो आप मेरे पास न आंय " लाला
मदनमोहननें बिगड़ कर कहा.

" मैं आपका शत्रु नहीं ; मित्रहुं परन्तु आप को ऐसाही जचताहै तो अबमें भी
आपको अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता मेरी इतनी ही लालसाहै कि आपके यहां
की बदौलत मैंनें जो कुछ पायाहै वह मैं आपकी भेट करता जाऊं " लाला
लायकी में कहनें लगे " मैंनें आपके यहां की कृपासें विद्या धन पायाहै
हिस्सा मैं आपके सन्मुख रख चुका तथापि जो कुछ बाकी रहाहै उसको
करके और अंगीकार करलें. मैं चाहता हूं कि मुझसे आप भलेही अप्रसन्
हर्गिज़ अपनें पास न रक्खें परन्तु आपका मंगल हो. यदि इस बिगाड़ से
मंगल होजाय तो मैं इसे ईश्वर की कृपा समझूंगा. आप मेरे दोषों को
मेरी भली बातों में जो कुछ गुण निकलता हो उसे ग्रहण करें. हज़रत सा
" [illegible] उपदेशनु [illegible] ॥ सादर ग्रहण कीजिये सोऊ ॥ + " इस
[illegible] और [illegible] का बिचार छोड़ कर गुण संग्रह करनें पर दृष्टि रक्खें
[illegible] अच्छा होगा तो मैं क्या हूं ? यदि, बड़े लायक आदमी आपके
[illegible] आपका [illegible] अच्छा न हुआ तो जो होंगे वह भी

[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥

एक छोटेसे पखेरू की क्या है ? जहां रात होजाय वहीं उस्का रैन बसेरा होसक्ता है परन्तु वह फलदार बृक्ष सदा हरा भरा रहना चाहिये जिस्के आश्रय बहुत से पक्षी जीते हों "

" बहुत कहनें से क्याहै ? आपको हमसे संबन्ध रखना हो तो हमारी मर्ज़ी के मूजिब बरताव रक्खो नहीं तो अपना रस्ता लो हमसे अब आपके तानें नहीं सहे जाते लाला मदनमोहननें ब्रजकिशोरको नरम देख कर ज्याद· " दबानें की तजवीज़ की.

" बहुत अच्छा ! मैं जाताहूं बहुत लोग जाहरी इज्जत बनानें के लिऐ भीतरी इज्जत खोबैठतेहैं परंतु मैं उन्मैंकानही हू तुलसीकृतरामायण में रघुनाथजीनें कहा है " जोहम निदरहि बिप्रबद्ध सत्यसुनहु भृगुनाथ ॥ तो अस को जग सुभटतिहिं भय बस नावहिं मांथ ॥ " सोई प्रसंग इससमय मेरे लिये बर्तमान है. एथेन्समें जिन दिनों तीस अन्याइ· योंकी कोनसिल का अधिकारथा एकबार कौनसिलनें सेक्रिटीज़ को बुलाकर हुक्मदिया कि " तुम लिओं नामी धनवान को पकड़लाओ जिस्से उस्का माल ज़प्त कियाजाय " सेक्रिटीज़नें जवाबदियाकि " एक अनुचित काममें मैं अपनी प्रसन्नतासे कभी सहायता न करुंगा " कौनसिलके प्रेसिडन्टनें धमकी दी कि " तुम को आज्ञा उल्लंघन करनेके कारण कठोर दंड मिलेगा " सेक्रिटीज़नें कहा कि " यह तौमैं पहले हीसे जान्ताहूं परंतु मेरे निकट अनुचित काम करनेंके बराबर कोई कठोर दंड नहीं है " लाला ब्रजकिशोर बोले.

" जब आप हमको छोड़नेंहीका पक्का बिचार करचुके तो फिर इतना बादाबिवाद करनें से क्या लाभहै ? हमारे प्रारब्धमें होगा वह हम भुगतलेंगे, आप अधिक परिश्रम नकरें " लाला मदनमोहननें त्योंरी बदलकर कहा.

" अबमैं जाताहूं ईश्वर आपका मंगल करे. बहुत दिन पास रहनेंके कारण जानें बिना जानें अबतक जो अपराध हुए हों वह क्षमा करना " यह कह कर लाला ब्रज किशोर तत्काल अपनें मकानको चले गए.

लाला ब्रजकिशोरके गए पीछे मदनमोहनके जीमें कुछ, कुछ पछतावासा हुआ वह समझे कि " मैं अपनें हटसे आज एक लायक़आदमी को खोबैठा परंतु अब क्या ? अबतो जो होनाथा होचुका. इससमय हारमान्नेंसे सबके आगे लज्जित होनापड़ेगा और इससमय ब्रजकिशोरके बिना कुछ हर्ज भी नहीं हां ! ब्रजकिशोरनें हरकिशोरको सहाय ..तादी तो कैसी होगी ? क्या करें ? हमको लज्जित होना न पड़े और सफ़ाई की कोई राह ..नै तो अच्छा हो " लाला मदनमोहन इसी सोच बिचार में बड़ी देर बैठे रहे ..ौ निर्बलता से कोई बात निश्चय न करसके.

Sighing I say . . .

प्रकरण २०.

कृतज्ञता

तृणहु उतारे जनगनत कोटि मुहर उपकार
प्राण दियेहू दुष्टजन करत वैर व्यवहार +

भोजप्रबंधसार

लाला ब्रजकिशोर मदनमोहनके पास से उठकर घरको जानें लगे उससमय उन्का
मन मदनमोहनकी दशा देखकर दुःखसे विकल हुआ जाताथा वह बारम्बार सोचतेथे
कि मदनमोहननें केवल अपना ही नुकसान नहीं किया, अपनें बाल बच्चोंका हकभी
खोदिया मदनमोहननें केवल अपनी पूंजीही नहीं खोई अपनें ऊपर कर्जभी करलिया
भला ! लाला मदनमोहन को कर्ज करनें को क्या ज़रूरतथी ? जोयह पहलेहीसे
प्रबंध करनें की रीति जान्कर तत्काल अपनें आमद खर्च का बंदोबस्त करते
इन्को क्या ? इन्के बेटे पोतोंको भी तंगी उठानें की कुछ ज़रूरत नथी. मैं आप
कीफ़से रहनें को, निर्लज्जता से रहनेंको, बदइन्तज़ामी से रहनेंको, अथवा किसी के
के हक़में कमी करनें को पसंद नहीं करता, परंतु इन्को तो इन बातोंके लिये
करनें की भी कुछ जरूरत नथी यहतो अपनी आमदनी का बंदोबस्त करके
लपूंजी के हाथ लगाए बिना अमीरी ठाठसे उमरभर चैन करसक्तेथे. विदुरजीनें
है " फल अपक जो वृक्षते तोरलेत नरकोय ॥ फलको रसपावै नहीं नासबीज को
नासबीज को होय यहै निज चित्त विचारै ॥ पके, पके फललेइ समय परिपाक नि
पके, पके फललेइ स्वाद रस लहै बुद्धिबल ॥ फलते पावै बीज, बीज ते होइ ब
फल ॥ † " यह उपदेश सब नीतिका सारहै परंतु जहां मालिक को अनुभव नहीं,
दवर्ती स्वार्थ पर हों वहां यह बात कैसे होसक्ती है ? " जैसे माली बाग़ को
हितचित चाहि ॥ तैसे जो कोला करत कहा दरदहै ताहि ? ॥ "

लाला मदनमोहन अबतक कर्जदारी की दुर्दशा का बृत्तान्त नहीं जान्ते.

जिस्समय कर्ज़दार वादे पर रुपया नहीं देसक्ता उसी समय से लेनदार को
कर्जके अनुसार कर्ज़दारकी जायदाद और स्वतंत्रता पर अधिकार होजाताहै.
कर्ज़दारको कठोरसे कठोर वाक्य "बेईमान " कह सक्ताहै, रस्ता चल्तेमें उस्का

\+ सन्त स्तृणोत्तारणमुतमांगात् सुवर्णकोट्यर्पणभा मनंति ॥
प्राणव्ययेनापि कृतोपका ॥

† वनस्पतेरपक्कानि फलानिप्रचिनोति यः चास्य विनश्यति
पक्कमपादत्ते काले परिणतं बलं फलं पुनः ॥

पकड़ सक्ताहै. यह कैसी लज्जा की बातहै कि एक मनुष्य को देखतेही डरके मारे छाती धड़कनें लगे और शर्मके मारे आंखें नीची होजायें, सब लोग लालामदनमोहन की तरह फ़िजूलखर्ची और झूंठी टसक दिखानेंमें बरबाद नहीं होते सौ मे दो, एक समझवार भी किसी का काम बिगड़ जानेंसे, या किसी की ज़ामनी करदेनेंसे या किसी और उचित कारणसे इस आफ़त मे फंसजातेहैं परंतु बहुधा लोग अमोरों कीसी टसक दिखानेंमें और अपनें बूतेसे बढ़कर चलनेंमें कर्जदार होतेहैं.

क़र्ज़दारीमें सबसे बड़ा दोष यहहै कि जो मनुष्य धर्मात्मा होताहै वहभी कर्ज मे फंसकर लाचारीसे अधर्म्म की राह चलनें लगताहै जबसे कर्ज लेनेंकी इच्छा होती तबही से कर्ज देनेंवालेको ललचानें, और अपनी साहूकारी दिखानेंके लिये तरह, तरह की बनावट की जातीहै. एकबार क़र्ज लिये पीछे क़र्ज़लेनेंका चस्का पड़ जाताहै. औ समयपर क़र्ज़नहीं चुकसक्ता तब लेनदार को धीर्य देनें और उस्की दृष्टि में साहूका दीखनेंके लिये ज्यादः ज्यादः कर्ज में जकड़ताजाताहै और लेनदार का कड़ा तकाज़ हुआ तो उस्का क़र्ज़चुकानें के लिये अधर्म्म करनेंकी भी रुचि होजाती है. कर्ज़दा झूंट बोलनेंसे नहीं डरता और झूंट बोले पीछे उस्की साख नहीं रहती वह अप बालबच्चोंके हक़में दुश्मनसे अधिकबुराई करताहै, मित्रोंको तरह, तरहकी जोखोंमें फंस ता है अपनी घड़ीभरकी मौजके लिये आप जन्मभरके बंधनमे पड़ताहै और अपनीअनु चित इच्छाको सजीवन करनेंके लिये आप मरमिटता है

बहुतसे अबिचारी लोग क़र्ज़ चुकानें की अपेक्षा उदारता को अधिक समझते इस्का कारण यह है कि उदारता से यश मिल्ताहै, लोग जगह, जगह उदार मनु की बड़ाइ करते फिरतेहैं परंतु कर्ज़ चुकाना केवल इन्साफहै इसलिये उस्की तारी कोई नहीं करता इन्साफ़ को लोग साधारण नेकी समझतेहैं इसकारण उस्की निस्ब उदारताकी ज्यादः कदर करतेहैं जो बहुधा स्वभावकी तेज़ी और अभिमान से भग होती है परंतु बुद्धिमानी से कुछ संबंध नहीं रखती किसी उदार मनुष्यसे उस नौकर जाकर कहै कि फ़लाना लेनदार अपनें रुपेका तकाजा करनें आयाहै औ आपके फ़लानें ग़रीब मित्र अपनें निर्वाहके लिये आपकी सहायता चाहतेहैं तो व उदार मनुष्य तत्काल कहदेगा कि लेनदार को टालदो और उस ग़रीब को रुपे देदो क कि लेनदार कावया? वहतो अपनें लेनें लेता इसके देनें से वाह वाह होगी.

परंतु इन्साफ़का अर्थ लोग अच्छी तरह नहीं समझते क्योंकि जिस्के लिये करना चाहिये वह करना इन्साफ़ है इसलिये इन्साफ़में सब नेकियें आगई इन्साफ़ काम वह है जिस्मे ईश्वर की तरफ़का कर्तव्य, संसारकी तरफ़का कर्तव्य, और अप आत्मा की तरफ़का कर्तव्य अच्छी तरह संपन्न होताहो. इन्साफ़ सब ने

ड़हे और सब नेकियां उस्की शाख़ा मशाखाहैं इन्साफ़की सहायता बिना कोई बात ध्यम भाव से न होगी तो सरलता अविवेक, बहादरी दुराग्रह, परोपकार अनसमझी और उदारता फिजूलखर्ची होजायँगीं.

कोई स्वार्थ रहित काम इन्साफ़के साथ न कियाजाय तो उस्की सूरतही बदल जातीहै और उस्का परिणाम बहुधा भयंकर होताहै. सिवायकी रकम में से अच्छे कामोंमें लगाए पीछे कुछ रुपया बचे और वो निर्दोष दिल्लगी की बातों में खर्च किया- जाय तो उस्को कोई अनुचित नहीं बतासक्ता परंतु कर्तव्य कामोंको अटका कर दिल्लगी की बातों में रुपया या समय खर्च करना कभी अच्छा नहीं होसक्ता. अपनें ते मूजब उचित रीतिसे औरोंकी सहायता करनी मनुष्य का फ़र्ज़ है परंतु इस्का ह अर्थ नहींहै कि अपनें मनकी अनुचित इच्छाओंको पूरी करनें का उपाय रे अथवा ऐसी उदारता पर कमर बांधे कि आगे को अपना कर्तव्य संपादन करनेंके लये और किसी अच्छे काममें खर्च करनें के लिये अपनें पास फूटी कौड़ी लिक सिवाय में क़र्ज़ होजाय.

अफ़सोस! लाला मदनमोहन की इस्समय ऐसीही दशा होरहीहै. इन्पर रफ़ से आफ़त के बादल उमड़े चले आते हैं परन्तु इन्हें कुछ खबर नहीं है कि सच कहाहै:—

" बुद्धिभ्रंशते लहत बिनासहि ॥ ताहि अनीति नीतिसी भासहि ॥ + "

इस तरह से अनेक प्रकार के सोच विचार में डूबे हुए लाला ब्रजकिशोर कान पर पहुंचे परन्तु उन्के चित्त को किसी बात से ज़रा भी धैर्य न हुआ.

लाला ब्रजकिशोर कठिन से कठिन समय में अपनें मनको स्थिर रख सक्ते थे स्समय उन्का चित्त ठिकानें न था उन्हें यह काम अच्छा किया कि बुरा किया तका निश्चय वह आप नहीं कर सक्ते थे वह कहते थे कि इस दशामे मदनमें का काम बहुत दिन नहीं चलेगा और उस्समय ये सब रुपे के मित्र मदनमोहन छोड़कर अपनें, अपनें रस्ते लगेंगे परन्तु में क्या करूं? मुझको कोई रस्ता नहीं दि ता और इस्समय मुझसे मदनमोहनकी कुछ सहायता न होसकी तो मैंनें संस न्म लेकर क्या किया?

फ्रान्सके चौथे हेनरी नें डी ला ट्रेमाइल्को देशनिकाला दियाथा और काउन्ट डी आवि स्से मेल रखता था इसपर एक दिन चौथे हेनरी नें डी आविग्नी से कहा कि ' तब तक डी ला ट्रेमाइल की मित्रता कैसे नहीं छोड़ते '? डी आविग्नी नें जवाब दि

+ बुद्धौ कलुषभूतायां विनाशे प्रत्युपस्थिते ॥ अनयो नयसंकाशो हृदयान्नापसर्पति ॥

कि मैं ऐसी हालत मे उस्की मित्रता नहीं छोडसक्ता क्योंकि मेरी मित्रता के उपयोग करनेंका काम तो उस्को अभी पड़ाहै.'

पृथ्वीराज महोबेकी लड़ाई में बहुत घायल होकर मुर्दों के शामिल पड़ेथे और संजमराय भी उन्के बराबर उसी दशा में पडाथा. उससमय एक गिद्ध आके पृथ्वीराज की आंख निकालनें लगा पृथ्वीराज को उसके रोकनें की सामर्थ्य न थी इस पर संजमराय पृथ्वीराज को बचानें के लिये अपनें शरीर का मांस काट,काट कर गिद्धके आगे फैंकनेंलगा जिससे पृथ्वीराजकी आंखें बच गई और थोडी देरमें चन्द वगैरे आ पहुंचे.

हेनरी रिचमन्ड चौथके भयसे ब्रीटनी छोड कर फ्रान्सको भागनें लगा उससमय उसके सेवक सीमारनें उस्के वस्त्र पहन कर उस्की जोखों अपनें सिर ली और उसको साफ निकाल दिया.

क्या इसतरहसे मैं मदनमोहन की कुछ सहायता इससमय नहीं कर सक्ता! यदि इस काममें मेरी जान भी जाती रहे तो कुछ चिन्ता नहीं जब मैं उन्को अनसमझ जान कर उन्के कहनें से उन्हें छोड आया तो मैंनें कौनसी बुद्धिमानी की? पर मैं रह कर क्या करता? हां में हां मिला कर रहना रोगी को कुपथ्य देनें से कम न था और ऐसे अवसर पर उन्का नुकसान देख कर चुप हो रहना भी स्वार्थ परता से क्या कम था? मेरा विचार सदैव से यह रहता है कि काम करना तो विधी पूर्वक करना. न होसके तो चुप होरहना, बेगार तक को बेगार न समझना परन्तु वहां तो मेरे वाजबी कहनें से उल्टा असर होता था और दिन पर दिन जिद बढती जाती थी मैंनें बहुत धैर्य से उन्को राह पर लानें के अनेक उपाय किये पर उन्नें किसी हालत मे अपनी हद से आगे बढ़ना मंज़ुर न किया

असल तो यो है कि अब मदनमोहन बच्चे नहीं रहे उन्की उम्र पक गई, किसीका दबाव उनपर नहीं रहा लोगोंनें हां मे हां मिला कर उन्की भूलों को और दृढ कर दिया ऐस के कारण उन्को अपनी भूलों का फल न मिला और संसारके दुःख सुखका अनुभव भी न होने पाया बस रंग पक्का होगया विदुरजी कहते हैं कि " सन्त असन्त तपस्वी चोर। पापी सुकृती हृदय कठोर॥ जैसो होय बसै जिहि संग। तैसो होत बसन जिह रंग॥ " +

यदि यह सावधान हों तो अंगद हनुमान की तरह उन्की आज्ञा पालन करनें मे सब कर्तव्य संपादन होजाते हैं परन्तु जहां ऐसा नहीं होता वहां बडी कठिनाई पडती है. जबतक नशे मे हाथी नहीं चलता तब महावत कुछ चाहता है कुछ करता है कि

\+ यदि सन्तं सेवति यद्यसन्तं तपस्विनं यदि वा स्तेनमेव ॥
वासो यथा रंगवशं प्रयाति तथा स तेषां वशमभ्युपैति ॥

" ताकों त्यों समझाइये जो समझे जिहिं बानि ॥ बैन कहत मग अन्धकों अरु बहेरेको पानि ॥ " जिस तरह सुग्रीव भोग बिलास में फस गया तब रघुनाथजी केवल उस्को धमकी देकर राह पर ले आए थे इसतरह लाला मदनमोहन के लिये क्या कोई उपाय नहीं होसक्ता ? हे जगदीश ! इस कठिन काम में तूं मेरी सहायता कर.

लाला ब्रजकिशोर इन्बातों के बिचार मैं ऐसे डूबे हुए थे कि उन्को अपना देहानुसन्धान न था एक बार वह सहसा कलम उठा कर कुछ लिखनें लगे और किसी जगह को पूरा महसूल देकर एक जरुरी तार तत्काल भेजदिया. परंतु फिर उन्हीं बातों के सोच बिचार में मग्न होगए. इस्समय उन्के मुखसे अनायास कोई, कोई शब्द बेजोड़ निकल जाते थे जिन्का अर्थ कुछ समझ मे नहीं आता था. एक बार उन्नें कहा " तुलसीदासजी सच कहते हैं " षट् रस बहुप्रकार व्यंजन कोउ दिन अरु रैन बखानें ॥ बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ " थोड़ी देर पीछे कहा " मुझको इस्समय इस बचन पर बरताव रखना पड़ेगा (बृन्द) झूंठहु ऐसो बोलिये सांच बराबर होय ॥ जों अंगुरी सों भीत पर चन्द्र दिखावे कोए ॥ " परन्तु पानी जैसा दूध से मिल जाता है तेल से नहीं मिल्ता. बिक्रमोर्वशी नाटक में उर्वशी के मुख से सच्ची प्रीति के कारण पुरुषोत्तम की जगह पुरुरवा का नाम निकल गयाथा इसी तरह मेरे मुख से कुछका कुछ निकल गया तो क्या होगा ? थोड़ी देर पीछे कहा " लोक निन्दा से डरना तो वृथा है जब वह लोग जगत जननी जनक नन्दिनी की झूंठी निन्दा कि बिना नहीं रहे! श्रीकृष्णचन्द्र को जाति वालों के अपवाद का उपाय नारदजी से पू पड़ा ! तो हम जैसे तुच्छ मनुष्यों की क्या गिन्ती है ? सादीनें लिखाहे " एक बिद्वान पूछा गया था कि कोई मनुष्य ऐसा होगा जो किसी रुपवान सुन्दरी के साथ एकां बैठा हो दरवाजा बन्द हो, पहरे वाला सोता हो मन ललचा रहा हो काम प्रबल हो और वह अपनें शम दम के बलसे निर्दोष बच सके ? " उसनें कहा कि " हां वह वान सुन्दरी से बच सक्ताहै परन्तु निन्दकों की निन्दासे नहीं बच सक्ता " फिर निन्दा के भय से अपना कर्तब्य न करना बड़ी भूल है धर्म्म औरों के लिये नहीं अ लिये, और अपनें लिये भी फल की इच्छा से नहीं. अपना कर्तब्य पूरा करनें के करना चाहिये परन्तु धर्म्म करते अधर्म्म होजाय, नेकी करते बुराई पल्ले पड़े, अ को निकालनों बार आप गोता खानें लगें तो कैसी हो ? रुपेका लालच बड़ा प्रबल और निर्धनोंको तो उन्के काम निकालनें की चाबी होनें के कारण बहुतही ललचाता थोड़ी देर पीछे कहा ' [illegible] में कहा है " बिन काटे मुख नहि परास को ... है ॥ बिन बूंद न समुद्र याहु मुक्ता पाई है ॥ " इसी तरह गोल्ड स्मिथ कहताहै साहस किये बिना [illegible] नहीं [illegible] सक्ती " इसलिये ऐसे साहसी कामें

अपनी नीयत अच्छी रखनी चाहिये यदि अपनी नीयत अच्छी होगी तो ईश्वर अवश्य सहायता करैगा और डूब भी जाँयगे तो अपनी स्वरुप हानि न होगी."

प्रकरण २१

पतिव्रता

पतिके सँग जीवन मरण पति हर्ष हर्षाय
स्नेहमई कुलनारि की उपमा लखी न जाय १

शार्ङ्गधरे.

लाला व्रजकिशोर न जानें कब तक इसी भँवर जाल मैं फसे रहते परन्तु मदनमोहन की पतिव्रता स्त्री के पास सै उस्के दो नन्हे, नन्हे बच्चों को लेकर एक बुढ़िया आ पहुंची इस्से व्रजकिशोर का ध्यान बट गया.

उन बाल्कों की आंखों में नींद घुलरही थी उन्को आतेही व्रजकिशोरनें बड़े प्यार सै अपनी गोद मै बिठा लिया और बुढिया सै कहा "इन्को इस्समय क्यों हैरान किया? देख इन्की आंखों मैंनींद घुल रहीहै जिस्सै ऐसा मालूम होता है कि मानो यह भी अपनें बाप के काम काज की निर्बल अवस्था देख कर उदास होरहेहे" उन्को छाती सै लगा कर कहा "शाबास! बेटे शाबास! तुम अपनें बाप की भूल नहीं समझते तोभी उदास मालूम होते हो परन्तु वह सब कुछ समझता है तो भी तुम्हारी हानि लाभ का कुछ बिचार नहीं करता झूंटी ज़िद अथवा हठधर्मी सै तुम्हारा वाजबी हक़ खोए देता है तुम्हारे बाप को लोग बड़ा उदार और दयालु बताते हैं परन्तु वह कैसा कठोर चित्तहै कि अपनें गुलाब जैसे कोमल, और गंगाजल जैसे निर्मल बाल्कों के साथ बिश्वासघात करके उन्को जन्म भरके लिये दरिद्री बनाए देताहै वह नहीं जान्ता कि एक हकदार का हक़ छीन कर मुफ्तखोरों को लुटा देनें मै कितना पाप है! कहो अब तुम्हारे वास्ते क्या मंगवायँ?"

"खिनोनें"(खिलौनें) छोटेनें कहा"बफ्फी"(बर्फी) बड़े बोले और दोनों व्रजकिशोरकी मूंछें पकड़ कर खेंचनें लगे. व्रजकिशोरनें बड़े प्यार सै उन्के गुलाबी गालों पर एक, एक मीठी चूमी लेली और नोकरों को आवाज़ देकर खिलौनें और बरफी लानें का हुक्म दिया.

"जी! इन्की मानें ये बच्चे आपके पास भेजेहैं" बुढ़िया बोली "और कह दिया हैकि इन्को आपके पांओं मै डाल कर कहदेना कि मुझको आपके क्रोधित होकर चले जानें का हाल सुन्कर बड़ी चिन्ता होरही है मुझको अपनें दुःख सुख का कुछ बिचार नहीं

---

१ जीवति जीवति नाथे मृतेमृता या मुदायुता मुदिते ॥
सहजस्नेहरसाला कुलवनिता केन तुल्यास्यात् ॥

मैंतो उन्के साथ रहनें में सब तरह प्रसन्न हूं परन्तु इन छोटे, छोटे बच्चों की क्या द होगी? इन्को बिद्या कौन पढ़ायगा? नीति कौन सिखायगा? इन्की उमर वे कटेगी? मैं नहीं जान्ती कि आपको इस कठिन समय में अपना मन मार कर उन्क बुद्धि सुधारनी चाहिये थी अथवा उन्को अधर धार में लटका कर घर चले जाना च हिये था? खैर! आप उन्पर नहींतो अपनें कर्तव्य पर दृष्टि करें, अपनें कर्तव्य पर न तो इन छोटे, बच्चों पर दया करें ये अपनी रक्षा आप नहीं कर सक्ते इन्का बो आपके सिरहै आप इन्की खबर न लेंगे तो संसार में इन्का कहीं पता न लगेगा अ ये बिचारे योंहीं झुर, झुर कर मरजायँगे!"

यह बात सुन कर ब्रजकिशोर की आंखें भर आई थोड़ी देर कुछ नहीं बोला ग फिर चित्त स्थिर करके कहनें लगा "तुम बहन से कहदेना कि मुझको अपना कर्तव अच्छी तरह याद है परन्तु क्या करूं? मैं बिबस हूं काल की कुटिल गति से मुझक अपनें मनोर्थ के विपरीति आचरण (बरताव) करना पड़ता है तथापि वह चिन्ता करे. ईश्वर का कोई काम भलाई से ख़ाली नहीं होता उस्ने इस्में भी अपना कुछ कुछ हित ही सोचा होगा" लड़कों की तरफ़ देख कर कहा "बेटे! तुम कुछ उदास मत हो जिसतरह सूर्य चन्द्रमा को ग्रहणलग जाता है इसी तरह निर्दोष मनुष्यों प भी कभी, कभी अनायास बिपत्ति आपडती है परन्तु उस समय उन्हें अपनी निर्दोषत का बिचार करके मनमैं धैर्य रखना चाहिये"

उन अनसमझ बच्चों को इन बातों की कुछ परवा न थी बरफ़ी और खिलोनों के लालच से उन्की नींद उड गई थी इस वास्ते वह तो हरेक चीज़ को उठाया धरी मैं लग रहे थे और ब्रजकिशोर पर तक़ाजा जारी था.

थोड़ी देर में बरफ़ी और खिलोनें भी आपहुचे इससमय उन्की खुशी की हद न रही. ब्रजकिशोर दोनों को बरफ़ी बांटा चाहते थे इतनें में छोटा हाथ मार कर सब ले भागा और बड़ा उस्से छीन्नें लगा तो सब की सब एक बार मुंह मैं रख गया. मुह छोटा था इसलिये वह मुंह में नहीं समाती थी परन्तु यह खुशी भी कुछ थोडी न थी कनअ- खियोंसे बड़े की तरफ़ देखकर मुस्कराता जाता था और नाचता जाता था वह भोली भोली सूरत, ठुमक, ठुमक कर नाचना, छिप, छिप कर बड़े की तरफ़ देखना, सैन मा- रना. उस्के मुस्करानें में दूधके छोटे, छोटे दातों की मोती की सी झलक देख कर थोड़ी देर के लिये ब्रजकिशोर अपनें सब धारा बिचार भूल गए परन्तु इस्को नाचता देख कर अब बडा मचल पडा उस्नें सब खिलोनें अपनें कब्जे में कर लिये र ठिनक, ठिनक कर रोनें लगा. ब्रजकिशोर उस्को बहुत समझाते थे कि "वह तुह्मारा छोटा भाई है तुह्मारे हिस्से की बरफ़ी खाली तो क्या हुआ? तुमही

जानेंदो " परन्तु वहां इन्बातों की कुछ सुनाई न थी इधर छोटे खिलोनों की छीना झपटी में लग रहे थे ! निदान ब्रजकिशोर को बड़े के वास्ते बरफ़ी और छोटे के वास्ते खिलोनें फिर मगानें पडे. जब दोनों की रज़ामन्दी होगई तो ब्रजकिशोरनें बड़े प्यार से दोनों की एक, एक मिठी (मीठी चूमी) लेकर उन्हें बिदा किया और जाती बार बुढिया को समझा दिया कि " बहन को अच्छी तरह समझा देना वह कुछ चिन्ता न करे."

परन्तु बुढिया मकान पर पहुंची जितनें वहां की तो रंगतही बदल गई थी मदनमोहन के साले जगजीवनदास अपनी बहन को लिवा लेजानें के लिये मेरठ से आए थे वह अपनी मा अर्थात् (मदनमोहन की सास) की तबियत अच्छी नहीं बताते थे और आज ही रात की रेल में अपनी बहन को मेरठ लिवा लेजानें की तैयारी करा रहे थे मदनमोहन की स्त्री के मनमें इससमय मदनमोहन को अकेले छोड कर जानें की बिल्कुल न थी परन्तु एक तो वह अपनें भाई से लज्जा के मारे कुछ नहीं कह सक्ती थी दूसरे मा की मांदगी का मामला था तीसरे मदनमोहन हुक्म देचुके थे इस लिये लाचार होकर उसे दो, एक दिन के वास्ते जानें की तैयारी की थी.

मदनमोहन की स्त्री अपनें पतिकी सच्ची प्रीतिमान, शुभचिंतक, दुःख सुखकी साथन, और आज्ञामें रहनें वालीथी और मदनमोहन भी प्रारंभमें उस्से बहुत ही प्रीति रखताथा परंतु जबसे वह चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आदि नए मित्रोंकी संगतिमें बैठनेंलगा नाचरंग की धुनलगी, बेश्याओंके झूठे हावभाव देखकर लोट पोट होगया ; "अय ! सुभानअल्लाह ! क्या जोबन खिलरहाहै ! " "बल्लाह ! क्या बहार आरहीहै ! " " चश्म बद्दूर क्या भोली, भोली सूरतहै ! " " अय ! परे हटो ! " " मैंसदके ! मैंकुर्बान मुझे न छेड़ो ! " " खुदाकी कसम ! मेरी तरफ तिरछी नज़रसे न देखो ! " बस यह चोचलेकी बातें चित्तमें चुभगई किसी बातका अनुभवतो था ही नहीं तरुणाई की तरंग शिंभूदयाल और चुन्नीलाल आदिकी संगति, द्रव्य और अधिकारके नशेमें ऐसा चकचूर हुआ कि लोक परलोक की कुछ खबर नरही.

यह बिचारी सीधी सादी सुयोग्य स्त्री अब गंवारी मालूम होनें लगी पहले, पहले कुछ दिन यह बात छिपीरही परंतु प्रीतिके फूलमें कीड़ा लगे पीछे वह रस कहां रह सक्ताहै ! उससमय परस्परके मिलाप मैं किसी का जी नहीं भरताथा, बातोंकी गुत्थी कभी सुलझनें नहीं पातीथी, आधी बात मुखमें और आधी होठोंहीमें रह जातीथी, आंखसे आंख मिलतेही दोनोंको अपनें आप हंसी आजातीथी केवल हंसी नहीं उस हंसीमें धूपछाया की तरह आधी प्रीति और आधी लज्जाकी झलक दिखाई देतीथी और सच्ची प्रीतिके कारण संसारकी कोई वस्तु इंद्रतामें उस्से अधिक नहीं मालूम

होती थी. एककी गुप्त दृष्टि सदा दूसरे की ताक झाकमें लगी रहतीथी क्या चित्र देखनें में, क्या रमणीक स्थानों की सैर करनें में, क्या हँसी दिल्लगी की बातों में कोई मौका नोक झोक से खाली नहीं जाताथा और संसार के सब सुख अपनें प्राण जीवन बिना उन्को फीके लगतेथे परंतु अब वह बातें कहांहैं ? उस्की स्त्री अबतक सब बातों में वैसीही दृढ़है बल्कि अज्ञान अवस्थाकी अपेक्षा अब अधिक प्रीति रखती है परंतु मदनमोहन का चित्त वह नरहा वह उस बिचारी से कोसों भागता है उस्को आफत समझता है क्या इन् बातोंसे अनसमझ तरुणों की प्रीति केवल आंखोंमे नहीं मालूम होती ? क्या यह उन्की बेक़दरी और झूंटी हिर्सका सबसे अधिक प्रमाण नहीं है ? क्या यह जानें पीछे कोई बुद्धिमान ऐसे अनसमझ आदमियों की प्रतिज्ञाओंका बिश्वास कर सक्ताहै ? क्या ऐसी पवित्र प्रीतिके जोड़ेमें अंतर डालनें वालोंको बाल्मीकि ऋषि का शाप + भस्म नकरेगा ? क्या एक हक़दार की सच्ची प्रीतिके ऐसे चोरों को परमेश्वरके यहांसे कठिन दंड नहोगा ?

मदनमोहनकी पतिव्रता स्त्री अपनें पतिपर क्रोध करना तो सीखीही नहीं है मदनमोहन उस्की दृष्टिमें एक देवता है वह अपनें ऊपर के सब दुःखों को मदनमोहन की सूरत देखतेही भूलजाती है और मदनमोहनके बडेसे बड़े अपराधों को सदा जाना नजाना करती रहतीहै मदनमोहन महीनों उस्की याद नहीं करता परंतु वह केवल मदनमोहन को देखकर जीतीहै वह अपना जीवन अपनें लिये नहीं; अपनें प्राणपतिके लिये समझती है जब वह मदनमोहन को कुछ उदास देखती है तो उस्के शरीरका रुधिर सूख जाताहै जब उस्को मदनमोहनके शरीरमें कुछ पीड़ा मालूम होतीहै तो वह उस्की चिंतासे बावली बनजाती है मदनमोहनकी चिंतासे उस्का शरीर सूखकर कांटा होगया है उस्को अपनें खानें पीनेंकी बिल्कुल लालसा नहीहै परंतु वह मदनमोहनके खानें पीनें की सबसे अधिक चिंता रखतीहै वह सदा मदनमोहनकी बड़ाई करती रहतीहै और जो लोग मदनमोहन की ज़राभी निंदा करतेहै वह उन्की शत्रु बन जाती है वह सदा मदनमोहनको प्रसन्न रखनेंके लिये उपाय करती है उस्के सन्मुख प्रसन्न रहतीहै अपना दुःख उस्को नहीं जताती और सच्ची प्रीतिसे बड़प्पन का बिचार रखकर भय और सावधानी के साथ सदा उस्की आज्ञा प्रतिपालन करती रहतीहै.

थोड़े ख़र्च में घरका प्रबंध ऐसी अच्छी तरह कर रक्खाहै कि मदनमोहन को घरके कामोंमें ज़रा परिश्रम नहीं करना पड़ता जिस्पर फ़ुर्सतके समय खाली बैठकर और लोगों की पंचायत और स्त्रियोंके गहनें गांठेकी थोथी बातोंके बदले कुछ, कुछ लिखनें पढ़नें, कसीदा काढ़नें और चित्रादि बनानें का अभ्यास रखती है बचे बहुत

+ मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः ॥ यत्क्रौंच मिथुना देकमवधीः काममोहितम्॥

छोटेहैं परंतु उन्को खेलही खेलमैं अभीसे नीतिके तत्व समझाए जातेहैं और बेमालूम रीतिसे धीरे, धीरे हरेक बस्तुका ज्ञान बढ़ाकर ज्ञान बढ़ानें की उन्की स्वाभाविक रुचिको उत्तेजन दियाजाताहै परंतु उन्के मनपर किसी तरह का बोझ नहीं डाला जाता उन्के निर्दोष खेलकूद और हँसनें बोलनेंकी स्वतंत्रतामैं किसी तरह की बाधा नहीं होनें पाती.

मदनमोहन की स्त्री अपनें पतिको किसी समय मोकेसे नेकसलाह भी देतीहै परंतु बडोंकी तरह दबाकर नहीं; बराबर वालों की तरह झगडकर नहीं, छोटों की तरह अपनें पतीकी पदवीका बिचार करके, उन्के चित्त दुःखित होनेंका बिचार करके, अपनी अज्ञानता प्रगट करके, स्त्रिओंकी ओछी समझ जताकर धीरजसे अपना भाव प्रगट करतीहै परन्तु कभी लोटकर जवाब नहीं देती, बिबाद नहीं करती वह बुद्धिमती चुन्नीलाल और शिंभूदयाल इत्यादि की स्वार्थपरतासे अच्छी तरह भेदी है परन्तु पतिकी ताबेदारी करना अपना कर्तब्य समझ कर समयकी बाट देखरही है और ब्रजकिशोर को मदनमोहनका सच्चा शुभचिंतक जान्कर केवल उसी से मदनमोहनकी भलाईकी आशा रखती है. वह कभी ब्रजकिशोर से सन्मुख होकर नहीं मिली परन्तु उस्को धर्म्मका भाई मान्ती है और केवल अपनें पतिकी भलाईके लिये जो कुछ नया वृतान्त कहलनें के लायक मालूम होताहै वह गुपचुप उस्से कहला भेजती है. ब्रजकिशोर भी उस्को धर्म्म की बहन समझताहै इस्कारण आज ब्रजकिशोरके अनायास क्रोधकरके चले जानेंपर उस्नें मदनमोहनके हकमैं ब्रजकिशोरकी दया उत्पन्न करनें के लिये इस समय अपनें नन्हें, नन्हें बच्चों को टहलनीके साथ ब्रजकिशोरके पास भेजदियाथा परन्तु वह लोटकर आए जितनें अपनी ही मेरठ जानें की तैयारी होगई और रातों रात वहां जाना पड़ा.

प्रकरण २२

संशय

अज्ञपुरुष श्रद्धा रहित संशय युत बिनशाय ॥
बिनश्रद्धा दुहुं लोकमें ताकों सुख न लखाय ॥ +
श्रीमद्भगवद्गीता ॥

लाला ब्रजकिशोर उठकर कपड़े नहीं उतारनें पाएथे इतनेंमैं हरकिशोर आपहुंचा.

"क्यों! भाई! आज तुम अपनें पुरानें मित्रसे कैसे लड़ आए?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"इस्से आपको क्या? आपके हां तो घीकेदिए जलगए होंगे" हरकिशोरनें जवाब दिया.

+ अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा बिनश्यती ॥ नायंलोको ऽस्तिनपरो नसुखं संशयात्मनः ॥

" मेरे हां घीके दिये जलनें की इस्में कौनसी बातथी ?"
" आप हमारी मित्रता देखकर सदैव जलाकरतेथे आज
" क्या तुह्मारे मनमें अबतक यह झूंटा वहम समारहाहे ?
"इस्में कुछ संदेहनहीं" हरकिशोर हुज्जत करनें लगा.
कि आप मुझको देखकर जल्तेहैं मेरी और मदनमोहनकी
छातीपर सांप लोटताहे. आपनें हमारा परस्पर बिगाड़ करानेंके
किये ? मदनमोहनके पिताको थोड़ा भड़काया ? जिस दिन मेरे
रके सब प्रतिष्ठित मनुष्य आएथे उन्को देखकर आपके जीमें
शहरके सब प्रतिष्ठित मनुष्योंसे मेरा मेल देखकर आप नहीं कु
सुन्कर कभी अपनें मनमें प्रसन्न हुए ? आपनें किसी काममें
मैनें अपनें लड़के के बिवाहमें मजलिस की थी आपनें मजलिस
लोगोंके आगे मुझको बावला नहीं बताया ? बहुत कहनें से
हनका मेरा बिगाड़ सुन्कर कचहरीसे वहां झटपट दोड़गए और
उस्को अपनी इच्छानुसार पट्टी पढ़ादी परंतु मुझको इन बातोंक
और वह दोनों मिल्कर मेरा क्या करसक्ते हो ? मैं सब समझलूं

लाला ब्रजकिशोर ये बातें सुन, सुनकर मुस्कराते जातेथे.
" भाई ! तुम वृथा वहम का भूतबनाकर इतना डरतेहो. इस व
तुम तत्काल इन बातोंकी सफ़ाई करते चलेजाते तो मनमें इत
रहता. क्या स्वच्छ अंतःकरण का यही अर्थहे ? मुझको जलन
तुम अपना सब काम छोड़कर दिनभर लोगोंकी हाजरी साधते
करोगे, उन्को तोहफ़ा तहायफ़ दोगे ? दस, दस बार प्रमाल
जाओगे तो वह क्यों न आवेंगे ? अपनें गांठ की दौलत खर्च क
ओगे तो वह क्यों न तारीफ़ करेंगे ? परंतु यह तारीफ़ कितनी देर
देरकी ? कभी तुमपर आफ़त आपड़ेगी तो इन्मेंसे कोई तुह्मारी स
इस खर्चसे देशका कुछ भला हुआ ? तुह्मारा कुछ भला हुआ
कुछ भला हुआ ? यदि इस फ़िजूल ख़र्चीके बदले लड़के के
रुपया लगायजाता, अथवा किसी देश हितकारी काममें खर्च हो
की बातथी परंतु मैं इस्में क्या तारीफ़ करता, क्या प्रसन्न होता
मुझको तुह्मारी भोली, भोली बातोंपर बड़ा आश्चर्यथा इसीवास्ते मैं

अनुचित हरेक बातका पक्षपात करना चाहिये? इन्साफ़ अपनें वास्ते नहीं केवल औरोंके वास्तेहै? क्या हाथ में डिमडिमी लेकर सब जगह डोंडी पीटे बिना सच्ची प्रीति नहीं मालूम होती? इन सब बातोंमें कोई बात तुह्मारी बडाईके लायक़हो तो घर फूंक तमाशा देखनाहै. इसी तरह इन सबबातोंमें कोई बात मेरे प्रसन्न होनें लायक़हो तो तुमको प्रसन्न देखकर प्रसन्न होनाहै मैं यह नहीं कहता कि मनुष्य ऐसे कुछ काम नकरे समय, समयपर अपनें बूते मूजिब सबकाम करनें योग्यहैं परंतु यह मामूली काररवाई है जितना वैभव अधिक होताहै उतनीही धूमधाम बढ़जातीहै इसलिये इस्मे कोई ख़ास बात नहीं पाईजाती. मैं चाहताहूं कि तुमसे कोई देशहितैषी ऐसा काम बनें जिस्में मैं अपनें मनकी उमंग निकालसकूं मनुष्य को जलन उसमौक़ेपर हुआकरती है जब वह आप उस लायक़ नहो परंतु तुमको जो बड़ाई बड़े परिश्रम से मिली है वह ईश्वर की कृपासे मुझको बेमहनत मिलरहीहै फिर मुझको जलन क्यों हो? तुम्हारी तरह खुशामद करके मदनमोहनसे मेल किया चाहता तोमें सहजमें करलेता परंतु मैंनें आप यह चाल पसद नकी तो अपनी इच्छासे छोड़ी हुई बातोंके लिये मुझको जलन क्यों हो? जलनकी वृत्ति परमेश्वरनें मनुष्यको इसलिये दीहै कि वह अपनें से ऊंची पदवीके लोगों को देखकर उचितरीतिसे अपनी उन्नतिका उद्योग करे परंतु जो लोग जलनके मारे औरोंका नुक्सान करके उन्हें अपनी बराबर का बनाया चाहतेहैं वह मनुष्यके नामको धब्बा लगातेहैं मुझको तुमसे केवल यह शिकायतथी और इसी विषयमें तुम्हारे विपरीत चर्चा करनी पड़ीथी कि तुमनें मदनमोहनसे मित्रता करके मित्रके करनें का काम नकिया तुमको मदनमोहन के सुधारनेंका उपाय करना चाहियेथा परंतु मैंनें तुम्हारे बिगाडकी कोई बात नहीं की. हां इसवहमका क्या ठिकाना है? खाते, पीते, बैठते, उठते, बिनाजानें ऐसी सैंकडों बातें बनजाती है कि जिन्का विचार किया करें तो एकदिनमें बावलेबनजायें. आएतो आए क्यों, गएतो गए क्यों, बैठेतो बैठे क्यों, हंसेतो हंसे क्यों, फ़लानें से क्या बात की फ़लानें से क्यों मिले? ऐसी निरर्थक बातों का विचार कियाकरें तो एक दिन काम न चले. लुटभैये सैंकडों बातें बीचकी बीचमें बनाकर नित्य लड़ाई करादिया करें पर नहीं अपनें मनको सदैव दृढ रखना चाहिये निर्बल मनके मनुष्य जिस तरह की ज़रा ज़रासी बातों में बिगड़ खड़े होते हैं दृढमनके मनुष्यों को वैसी बातोंकी खबरभी नहीं होती इसलिये छोटी, छोटी बातों पर विशेष विचार करना कुछ तारीफ़की बात नहींहै और निश्चय किए बिना किसीकी निंदित बातों पर विश्वास न करना चाहिये. किसी बातमें संदेह पड़जाय तो स्वच्छ मनसे कह सुनकर उस्की तत्काल सफ़ाई करलेनी

अच्छीहै क्योंकि ऐसे झूटे, झूंटे वहम संदेह और मनःकल्पित बातोंसे अ
घर बिगड़ चुकेहैं. ”

“ खैर ! और बातों में आप चाहै जो कहैं परंतु इतनी बात तो आ
करतेहैं कि मदनमोहनकी और मेरी मित्रताके विषयमें आपनें मेरे वि
बस इतना प्रमाण मेरे कहनेंकी सचाई प्रगट करनेंके लिये बहुतहै ” ह
लगा “ आपका यह बरताव केवल मेरे संग नहीं है बल्कि सब संसार
सबकी नुक्तेचीनी किया करतेहैं ”

“ अबतो तुम अपनी बातको सब संसारके साथ मिलानें लगे परं
से यह बात अंगीकार नहीं होसक्ती जो मनुष्य आप जैसा होता है वैस
को समझता है मैंनें अपना कर्तव्य समझकर अपनें मनके सच्चे, सच्चे
कहदिए अब उन्को मानों या न मानों तुह्में अधिकार है ” लाला
स्वतंत्रता से कहा.

“ आप सच्ची बात के प्रगट होनें से कुछ संकोच न करें सम्बन्धी
गाना हो जिस्सै अपनी स्वार्थ हानि होती है उस्सै मनमें अन्तर तो प
हरकिशोर कहनें लगा “ स्यमन्तक मणि के सन्देह पर श्रीकृष्ण बलदे
में भी मन चाल पड़ गई ब्रह्मसभा में अपमान होनें पर दक्ष और महादेव
के बीच भी विरोध हुए बिना न रहा. ”

“ तो यों साफ़ क्यों नहीं कहते कि मेरी तरफ़ से अबतक तुह्मारे
चार मन रहे हैं मुझको कहना था वह कहचुका अब तुह्मारे मनमें
झते रहो ” लाला ब्रजकिशोरनें बेपरवाई से कहा.

“ चालाक आदमियों की यह तो रीतिही होती है कि वह जैसी
वैसी बात करते हैं. अब तक मदनमोहन से आपकी अनबन रहती थी
का समय आतेही मेल होगया ! अब तक आप मदनमोहन से मेरी मित्र
उपाय करते थे अब मुझको मित्रता रखनें के लिये समझानें लगे ! स्व
मनुष्य जो करना होताहै वही करता है परन्तु औरों का ओलंभा मिटानें
सिर मुफ्त का छप्पर जरूर धर देता है. अच्छा ! आपको लाला मदन
मित्रता के लिये बधाई है और आपके मनोर्थ सफल करनें का उपाय
रहे हैं ” हरकिशोरनें भरमा भरमी कहा.

“ यह तुम क्या कहते हो मेरा मनोर्थ क्या है ? और मैंनें क्या देख
न सकी ! ” लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे “ जैसे नाव में बैठनें वाले
चलते दिखाई देते हैं इसी प्रकार तुम्हारी चाल बदल जानें से तुम

में अन्तर मालूम पड़ता है. तुह्मारी तबियत को जाचनें के लिये तुमनें पहले से कुछ नियम स्थिर कर रक्खे होते तो तुमको ऐसी भ्रान्ति कभी न होती मैं ठेठ से जिस्तरह मदनमोहन को चाहता था, जिस्तरह तुमको चाहता था, जिस्तरह तुम दोनों की परस्पर प्रीति चाहता था उसी तरह अब भी चाहता हूं परन्तु तुह्मारी तबियत ठिकानें नहीं है इस्सै तुमको बारबार मेरी चाल पर सन्देह होताहै सो खैर ! मुझे तो चाहे जैसा समझते रहो परन्तु मदनमोहन के साथ बैर भाव मत रक्खो तुच्छ बातों पर कलह करना अनुचित है और बैरी से भी बैर बढ़ानें के बदले उस्के अपराध क्षमा करनें मैं बड़ाई मिल्ती है. "

"जी हां ! पृथ्वीराजनें शहाबुद्दीन गोरी को क्षमा करके जैसी बड़ाई पाई थी वह सब को प्रगट है " हरकिशोरनें कहा.

"आगे की हानि का सन्देह मिटे पीछे पहले के अपराध क्षमा करनें चाहियें परन्तु पृथ्वीराजनें ऐसा नहीं किया था इसी से धोका खाया और—"

"बस, बस यहीं रहनें दीजिये. मेरा मतलब निकल आया आप अपनें मुख से ऐसी दशा मैं क्षमा करना अनुचित बता चुके इस्सै आगे सुन्कर मैं क्या करूंगा ?" यह कह कर हरकिशोर, ब्रजकिशोर के बुलाते, बुलाते उठ कर चला गया.

और ब्रजकिशोर भी इनही बातों के सोच बिचार मैं वहां से उठ कर पलंगपर जा लेटे.

प्रकरण २३.

प्रामाणिकता

"एक प्रामाणिक मनुष्य परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना है " *

पोप.

ब्रजकिशोर कौन है ? मदनमोहन की क्यों इतनी महानुभूति (हमदर्दी) करते हैं ?

अच्छा ! अब थोड़ी देर और कुछ काम नहीं है जितनें थोड़ा सा हाल इन्का सुनिये.

लाला ब्रजकिशोर गरीब मा बाप के पुत्र हैं परन्तु प्रामाणिक, सावधान, विद्वान और सरल स्वभाव हैं इन्की अवस्था छोटी है तथापि अनुभव बहुत है वह जो कहते हैं उसी के अनुसार चलते हैं इन्की बहुत सी बातें अब तक इस पुस्तक में आचुकी हैं इस लिये कुछ विशेष लिखनें की जरूरत नहीं है तथापि इतना कहे बिना नहीं रह

---

* An honest man's the noblest work of God.

[illegible]

जाता कि यह परमेश्वर की सृष्टि का एक उत्तम पदार्थ हैं यह वकील हैं परन्
तरफ़ के मुक़द्दमेवालों का झूंटा पक्षपात नहीं करते झूंटे मुकद्दमे नहीं लेते बूते
काम नहीं उठाते, परन्तु जो मुक़द्दमे लेते हैं उन्की पैरवी वाजबी तौर पर बहुत
तरह करते हैं. और बहुधा अन्याय से सताए हुए ग़रीबों के मुक़द्दमो में बे
लिये पैरवी किया करते हैं हाकिम और नगरनिवासियों को इन्की बात
बिश्वास है. यह स्वतंत्र मनुष्य हैं परन्तु स्वेच्छाचारी और अहंकारी नहीं
स्वतंत्रता को उचित मर्यादा से आगे नहीं बढ़नें देते परमेश्वर और स्वध
बिश्वास रखते हैं. बात सच कहते हैं परन्तु ऐसी चतुराई से कहते हैं
कहना किसी को बुरा नहीं लगता और किसी की हक़ तल्फ़ी भी नहीं ह
यह थोथी बातों पर बिवाद नहीं करते और इन्के कर्तव्य में अन्तर न आ
ये दूसरे की प्रसन्नता के लिये अकारण भी चुप हो रहते हैं अथवा केव
सा करदेते हैं. जहां तक औरों के हक़ में अन्तर न आय; ये अपनें उ
उठा कर भी परोपकार करते हैं बैरी से सावधान रहते हैं परंतु अपनें मन
तरफ़ का बैर भाव नहीं रखते. अपनी ठसक किसी को नहीं दिखलाया चा
मध्यम भाव से रहनें को पसन्द करते हैं और इन्की भलमनसात से सब लोग
परन्तु मदनमोहन को इन्की बातें अच्छी नहीं लगतीं और लोगों से यह केव
बात करते हैं जिस्में वह प्रसन्न रहैं और इन्हें झूंट न बोलनी पड़े परन्तु म
से ऐसा सम्बन्ध नहीं है. उस्की हानि लाभ को यह अपनी हानि लाभ से अधिक
हैं इसी वास्ते इन्की उस्से नहीं बन्ती. यह कहते हैं कि " जब तक कुछ का
अपने पल्ले में किसी तरह का दाग लगाए बिना हर तरह के आदमी से अच्
मित्रता निभ सक्ती है परन्तु काम पडे पर उचित रीति बिना काम नहीं चलत

यह अपनी भूल जान्ते ही प्रसन्नतासे उस्को अंगीकार करके उस्के सुध
उद्योग करते हैं इसी तरह जो बात नहीं जान्ते उस्में अपनी झूंटी निपुणता दि
काम पड़नें पर उस्का अभ्यास करके जेम्सवाट की तरह अपनी सच्ची साव
लोगों को आश्चर्य में डालते हैं.

(बहुधा लोग जान्ते होंगे कि जेम्सवाट कलों के काम में एक प्रसिद्ध
गया है उस्के समान काल में उस्की अपेक्षा बहुत लोग अधिक विद्वान् थे पर
ज्ञान को काम में लानें के वास्ते जेम्सवाटनें जितनी महनत की उतनी और
नहीं की. उस्नें हरेक पदार्थ की बारीकियों पर दृष्टि पहुंचनें के लिये खूब अ
गया. वह बढ़ई का पुत्र था जब यह बालक था तब ही अपनें खिलोनों में
[illegible] निकाल्ता था. उस्के बाप की दुकान में गृहों के देखनें की कलें र

जिस्सै उस्को प्रकाश और जोतिष बिद्या का ब्यसन हुआ. उस्के शरीर मैं रोग उत्पन्न होनें से उस्को बैद्यक सीखनें की रुचि हुई. और बाहर गांव मैं एकान्त फिरनें की आदत से उस्नें बनस्पति बिद्या और इतिहास का अभ्यास किया. गणित शास्त्र के औजार बनाते, बनाते उस्को एक आर्गन बाजा बनानें की फ़र्मायश हुई परन्तु उस्को उससमय तक गाना नहीं आता था इस लिये उस्नें प्रथम संगीत बिद्या का अभ्यास करके पीछे से एक आर्गन बाजा बहुत अच्छा बना दिया. इसी तरह एक बाफ़ की कल उस्की कान पर सुधरनें आई तब उस्नें गर्मी और बाफ़ विषयक बृतान्त सीखनें पर मन गाया और किसी तरह की आशा अथवा किसी के उत्तेजन बिना इस काम मैं दस रस परिश्रम करके बाफ़ की एक नई कल ढूंड निकाली जिस्सै उस्का नाम सदा के ऱ्ये अमर होगया.)

लाला ब्रजकिशोर को संसारी सुख भोगनें की तृष्णा नहीं है और द्रब्य की आवश्यता यह केवल सांसारिक कार्य निर्बाह के लिये समझते हैं इस्वास्तै संसारी कामों की ज़रुरत के लायक़ परिश्रम और धर्म्म सै रुपया पैदा किये पीछे बाक़ी का समय यह बेद्याभ्यास और देशोपकारी बातों मैं लगाते हैं.

इन्के निकट उन ग़रीबों की सहायता करनें मैं सच्चा पुन्य है जो सच मुच अपना नर्बाह आप नहीं कर सक्तै, या जिन रोगियों के पास इलाज करानें के लिये रुपया अथवा सेवा करनें के लिये कोई आदमी नहीं होता. ये उन अनसमझ बच्चों को पढ़ानें लिखानें मैं, अथवा कारीगरी इत्यादि सिखा कर कमानें खानें के लायक़ बनानें मैं, सच्चा धर्म समझते हैं जिन्के मा बाप दरिद्रता अथवा मूर्खता सै कुछ नहीं कर सक्तै. ये अपनें देश मैं उपयोगी बिद्याओं की चर्चा फैलानें, अच्छी, अच्छी पुस्तकों का और भाषाओं सै अनुवाद करवा कर अथवा नई बनवा कर अपनें देश मैं प्रचार करनें, और देश के सच्चे शुभचिन्तक और योग्य पुरुषों को उत्तेजन देनें, और कलों की अथवा खेती आदि की सच्ची देश हितकारी बातों के प्रचलित करनें मैं सच्चा धर्म्म समझते हैं. परन्तु शर्त यह है कि इन सब बातों मैं अपना कुछ स्वार्थ न हो, अपनी नामवरी का लालच न हो, किसी पर उपकार करनें का बोझ न डाला जाय बल्कि किसी को ख़बरही न होनें पाय.

इन्नें थोड़ी आमद मैं अपनें घर का प्रबन्ध बहुत अच्छा बांध रक्खा है इन्की आमदनी मामूली नहीं है तथापि जितनी आमदनी आती है उसमैं ख़र्च कम किया जाता है और उसी ख़र्च मैं भावी बिवाह आदि का ख़र्च समझ कर उन्के वास्तै क्रम, क्रम से सौगेवार रक़म जमा होती जाती है बिवाहादि के ख़र्चों का मामूल बंध रहा है उस्मैं फ़िज़ूलख़र्ची सर्बथा नहीं होनें पाती परन्तु वाजबी बातोंमैं कसर भी नहीं रहती.

इन्के सिवाय जो कुछ थोड़ा बहुत बचताहै वह बिना विचारे खर्च और नुकसानादि के लिए अमानत रक्खा जाता है और विश्वास योग्य फायदे के कामों में लगाने से इसकी वृद्धि भी की जाती है.

इन्के दो छोटे भाइयों के पढ़ानें लिखानें का बोझ इन्के सिर है इस लिये ये उन्को प्रचलित विद्याभ्यास की रुढ़ी के सिवाय उन्के मानसिक विचारों के सुधारनें पर सबसे अधिक दृष्टि रखते हैं. ये कहते हैं कि "मनुष्य के मनके विचार न सुधरे तो पढ़ने लिखनें से क्या लाभ हुआ?" इनूनें इतिहास और वर्तमान काल की दशा दिखा, दिखा कर भले बुरे कामों के परिणाम और उन्की बारीकी उन्के मन पर अच्छी तरह बैठा दी है तथापि ये अपनी दूर दृष्टि से अपनी सम्हाल में गफ़लत नहीं करते उन्हें कुसंगति में नहीं बैठनें देते. यह उन्के संग ऐसी युक्ति से बरतते हैं जिस्मे न वो उद्धत होकर ढिठाई करनें योग्य होनें पावें न भय से उचित बात करनें में संकोच करें. ये जान्ते हैं कि बच्चों के मनमें गुरु के उपदेश से इतना असर नहीं होता जितना अपने बड़ों का आचरण देखनें से होता है इस लिये ये उन्को मुखसे उपदेश देकर उतनी बातें नहीं सिखाते जितनी अपनी चाल चलन से उनूके मन पर बैठाते हैं.

ब्रजकिशोर को सच्ची सावधानी से हरेक काममें सहायता मिल्ती है. सच्ची सावधानी मानों परमेश्वरकी तरफ़से इनूको हरेक कामकी राह बतानेंवाली उपदेष्टा है परंतु लोग सच्ची सावधानी और चालाकीका भेद नहीं समझते. क्या सच्ची सावधानी और चालाकी एक है. ?

मनुष्य की प्रकृतिमें बहुतसी उत्तमोत्तम वृत्ति मोजूद हैं परंतु सावधानीके बराबर कोई हितकारी नहीं है. सावधान मनुष्य केवल अपनी तबियत परही नहीं औरोंकी तबियत पर भी अधिकार रखसक्ता है वह दूसरेसे बात करतेही उसका स्वभाव पहचान जाताहै और उससे काम निकालनें का ढंग जान्ता है. यदि मनुष्यमें और गुण साधारण हों और सावधानी अधिक हो तो वह अच्छी तरह काम चला सक्ता है परंतु सावधानी बिना और गुणोंसे कामनिकलना बहुत कठिन है.

जिस्तरह सावधानी उत्तम पुरुषोंके स्वभावमें होती है इसीतरह चालाकी तुच्छ और कमीने आदमियोंकी तबियतमें पाई जाती है. सावधानी हमको उत्तमोत्तम बातें बताती है और उन्के प्राप्त करनेंके लिए उचितमार्ग दिखाती है वह हर कामके परिणाम पर दृष्टि पहुंचाती है और आगे कुछ बिगाड़की सूरत मालूम हो तो झूंटे लालचके कामों को प्रारंभ से पहलेही अटका देती है परंतु चालाकी अपने आसपास की छोटी छोटी चीजों को देखसक्ती है और केवल वर्तमान समयके फ़ायदोंका बिचार रखती है सदा अपनें स्वार्थ की तरफ झुकती है और जिस्तरह होसके, अपनें काम निकाल

लेनेंपर दृष्टि रखती है. सावधानी आदमी की दृढ बुद्धिको कहतेहैं और वह जों, जों लोगोंमें प्रगट होती जाती है, सावधान मनुष्यकी प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है परंतु चालाकी प्रगट हुए पीछे उसकी बातका असर नहीं रहता. चालाकी होशियारीकी नक़लहै और वह बहुधा जान्वरोंमे अथवा जान्वरोंकीसी प्रकृतिके मनुष्योंमें पाईजाती है इस लिये उसमें मनुष्यजन्मको भूषित करनेंके लायक़ कोई बात नहीं है वह अज्ञानियोंके निकट ऐसी समझी जाती है जैसे ठट्ठेबाजी, चतुराई और भारी भरकम पना बुद्धिमानी समझे जायँ.

लाला ब्रजकिशोर सच्ची सावधानी के कारण किसीके उपकार का बोझ अपने ऊपर नहीं उठाया चाहते, किसी से सिफ़ारश आदिकी सहायता नहीं लिया चाहते कोई काम अपनें आग्रहसे नहीं कराया चाहते, किसीको कच्ची सलाह नहीं देते, ईश्वरके सिवाय किसीके भरोसे पर काम नहीं उठाते, अपनें अधिकारसें बढ़कर किसी काममें दस्तंदाज़ी नहीं करते. औरोंकी मारफ़त मामला करनेंके बदले रोबरू बातचीत करनें को अधिक पसंद करते हैं वह लेनदेनमें बड़े खरेहैं परंतु ईश्वरके नियमानुसार कोई मनुष्य सब के उपकारोंसे अनृणीय नहीं होसक्ता. ईश्वर, गुरु और मातापितादि के उपकारोंका बदला किसी तरह नहीं दिया जासक्ता परंतु ब्रजकिशोर पर केवल इन्हींके उपकारका बोझ नहीं है वह इन्से सिवाय एक और मनुष्य के उपकार में भी बँधरहेहैं

ब्रजकिशोर का पिता अत्यंत दरिद्रीथा अपनें पाससे फ़ीस देकर ब्रजकिशोर को मदरसे में पढ़ानेंकी उस्की सामर्थ्य नथी और न वह इतनें दिन खाली रखकर ब्रजकिशोर को विद्यामें निपुण किया चाहताथा परंतु मदनमोहनके पितानें ब्रजकिशोर की बुद्धि और आचरण देखकर उसे अपनी तरफ़से ऊंचेदर्जे तक विद्या पढ़ाई थी उस्की फ़ीस अपनें पाससे दीथी उस्की पुस्तकें अपनें पाससे लेदींथीं बल्कि उस्के घरका खर्च तक अपनें पाससे दियाथा और यह सब बातें ऐसी गुप्त रीति से हुईं कि इन्का हाल रुप रीतिसे मदनमोहनको भी मालूम नहोनें पायाथा ब्रजकिशोर उसी उपकारके बंधन से इससमय मदनमोहनके लिए इतनी कोशिश करतेहैं.

प्रकरण २४

{हाथमें पैदा करनें वाले}
{और पोतड़ों के अमीर}

अमिल द्रव्यहू यत्नते मिलै सु अवसर पाय ।
संचितहू रक्षाबिना स्वतः नष्ट होजाय ॥+

हितोपदेशे.

+ अलब्ध मिच्छतोर्थं योगादर्थस्य प्राप्तिरेव ॥ लब्धस्या प्यरक्षितस्य निधेरपि स्वयं विनाशः ॥

मदनमोहनका पिता पुरानी चालका आदमी था वह अपना बूता देखकर करताथा और जो करताथा वह कहता नहीं फिरता था उस्नें केवल हिंदी पढ़ी बहुत सीधा सादा मनुष्य था परंतु व्यापार में बडा निपुणथा साहूकारे में उस्की साखथी. वह लोगोंकी देखा देखी नहीं; अपनी बुद्धिसै व्यापार करताथा उस्नें व्यापारमैं अपनी सावधानी सै बहुत दौलत पैदा कीथी इससमय जिसतरह बहुधा ‍ष्य तरह, तरह की बनावट और अन्यायसै औरोंकी जमा मारकर साहूकार बन सोनें चांदीके जगमगाहटके नीचे अपनें घोरपापों को छिपाकर सज्जन बन्नेंका करतेहैं धनको अपनी पाप बासना पूरी करनेंका एक साधन समझतेहैं ऐसा उस् कियाथा. वह व्यापारमैं किसी को कसर नहीं देताथा पर आप भी किसी सै नहीं खाताथा. उन दिनों कुछ तो मार्ग की कठिनाई आदिके कारण हरेक धुने को व्यापार करनें का साहस नहोताथा इसलिये व्यापारमैं अच्छा नफ़ाथा दूर बर्तमान दशा और होनहार बातोंका मसग समझकर अपनी सामर्थ्य मूजिब नए रोज़गारपर दृष्टि पहुंचाया करताथा इसलिये मक्खन उस्के हाथ लगजा छाछ मैं और रहजातेथे. कहतेहैं कि एकबार नई खानके पन्नेंकी खड़ बाज़ारमैं आई परंतु लोग उस्की असलियतको न पहचानसके और उसै खरीद कर बनवानें का किसीको हौसला नहुआ परंतु उस्की निपुणाईसै उस्की दृष्टिमैं यह जचगयाथा इसलिये उस्नें बहुत थोड़े दामोंमैं खरीद लिया और उस्के नगीनें बन भली भांत लाभ उठाया उसी समयसै उस्की जडजमी और पीछै वह उसै और, व्यापारमैं बढ़ाता गया. परंतु वह आप कभी बढ़कर न चला. वह कुछ तकल नहीं रहताथा परंतु लोगोंको झूंटी भड़क दिखानेंके लिये फ़िज़ूलखर्ची भी नहीं कर उस्की सवारीमैं नागोरी बैलोंका एक सुशोभित तांगाथा और वह खासे मल बढ़कर कभी बस्त्रनहीं पहनता था वह अपनें स्थान को झाड़ पोंछकर स्वच्छ रख परंतु झाड़फ़ानूस आदिको फ़िज़ूलखर्ची मैं समझताथा उस्के हां मकान और दुक बहुत थोड़े आदमी नोकरथे परंतु हरेक मनुष्य का काम बट रहाथा इसलिये सुगमतासै सब काम अपनें अपनें समयपर होता चला जाताथा. वह अपनें धर्म दृढथा ईश्वर मै बड़ी भक्तिरखताथा. प्रतिदिन प्रातःकाल घंटा डेढ़ घंटा कथा सुन और दरिद्री, दुखिया, अपाहजोंकी सहायता करनें मैं बड़ी अभिरुचि रखताथा वह अपनी उदारता किसी को प्रगट नहीं होनें देताथा. वह अपनें काम धंदे मैं रहताथा इसलिये हाकिमों और रईसों से मिलनें का उसै समय नहीं मिलसक परन्तु वह वाजबी राहसै चलताथा इसलिये उसै बहुधा उन्से मिलनेंकी कुछ आव ‍भी नथी क्योंकि देशोन्नतिका भार पुरानी रुढीके अनुसार केवल राजपुरुषों

समझाजाता था. वह महनती था इसलिये तन्दुरुस्त था वह अपनें कामका बोझ हर गिज़ औरोंके सिर नहीं डाल्ता था; हां यथाशक्ति वाजवी बातों में औरोंकी सहायत करनें को तैयार रहताथा.

परन्तु अब समय बदल गया इससमय मदनमोहनके बिचार और ही होरहे हैं, जह ो; अमीरी ठाठ, अमीरी कारखानें, बाग़की सजावट का कुछ हाल हम पहले लि केहैं. मकानमें कुछ उस्से अधिक चमत्कार दिखाई देताहै, बैठकका मकान अंग्रेज ल्का बनवायागयाहै उस्में बहुमूल्य शीशे बरतनके सिवाय तरह, तरह का उम् उम्दा सामान मिसलसे लगाहुआ है. सहन इत्यादिमें चीनीकी ईंटोंका सुशोभित फ़ मीरके गुलेचोंको मात करताहै. तबेले में अच्छी से अच्छी बिलायती गाड़ियें औ रबी, केप, वेलर, आदिकी उम्दा, उम्दा जोड़ियें अथवा जीनसवारीके घोड़े बहुता से मौजूदहैं. साहब लोगोंकी चिठियें नित्य आती जातीहैं. अंग्रेजी तथा देसी अखब ार मासिकपत्र बहुतसे लिये जातेहैं और उन्मेंसे ख़बरें अथवा आर्टिकलोंको को खे या न देखे परन्तु सौदागरोंके इश्तहार अवश्य देखे जातेहैं, नई फ़ेशनकी चीजें अ श्य मंगाई जाती हैं, मित्रोंका जल्सा सदैव बना रहताहै और कभी कभी तो अंग्रे े भी बाल दियाजाताहै, मित्रों के सत्कार करनेंमें यहां किसी तरह की कसर न हती और जो लोग अधिक दुनियादार होतेहैं उन्की तो पूजा बहुतही विश्वा ंक की जातीहै! मदनमोहनकी अवस्था पचीस. तीस बरससे अधिक नहोगी. ग ट में बड़ा विवेकी और विचारवान मालूम होताहै नए आदमियोंसे बड़ी अच्छी तर मल्ताहै उस्के मुखपर अमीरी झल्कतीहै वह बस्त्र सादे परंतु बहुमूल्य पहनताहै उस ेता को व्यापारी लोगोंके सिवाय कोई नहीं जान्ताथा परंतु उस्की प्रशंसा अख़बारों हुधा किसी न किसी बहानें छपती रहतीहै और वह लोग अपनी योग्यता से प्रतिष्ठि होनेंका मान उसे देतेहैं.

अच्छा! मदनमोहन नें उन्नति की अथवा अवनति की इस बिषय में हम इसस बिशेष कुछ नहीं कहा चाहते परन्तु मदनमोहन नें यह पदवी कैसे पाई? पिता पु के स्वभाव में इतना अन्तर कैसे होगया? इस्का कारण इससमय दिखाया चाहते हैं

मदनमोहन का पिता आपतो हरेक बात को बहुत अच्छी तरह समझता परन्तु अपनें बिचारों को दूसरे के मनमें (उस्का स्वभाव पहिचा न कर) बैठानें सामर्थ्य उसे न थी उसनें मदनमोहन को बचपन में हिन्दी, फ़ारसी, और अंग्रेजी भा सिखानें के लिये अच्छे, अच्छे उस्ताद नौकर रख दिये थे परन्तु वह क्या जान्ता कि भाषा ज्ञान विद्या नहीं; बिद्या का दरवाजा है बिद्या का लाभ तो साधारण री से बुद्धि के तीक्ष्ण होनें पर और मुख्य करके बिचारों के सुधरनें पर मिल्ता है.

उस्को यह भेद प्रगट हुआ उसैं मदनमोहन को धमका कर राह पर लानें की युक्ति बिचारी परन्तु वह नहीं जान्ता था कि आदमी धमकानें से आंख और मुख बन्द कर सक्ता है, हाथ जोड़ सक्ता है, पैरों में पड़ सक्ता है, कहो जैसे कह सक्ता है, परन्तु चित्त पर असर हुए बिना चित्त नहीं बदलता और सत्संग बिना चित्त पर असर नहीं होता जब तक अपनें चित्त में अपनी हालत सुधारनें की अभिलाषा न हो औरों के उपदेश से क्या लाभ होसक्ता है? मदनमोहन का पिता मदनमोहन को धमका कर उस्के चित्त का असर देखनें के लिये कुछ दिन चुप होजाता था परन्तु मदनमोहन के मन दुखनें के बिचार से आप प्रबन्ध न करता था और इस देरदार का असर उल्टा होता था. हरकिशोर, शिभूदयाल, चुन्नीलाल, वगैरे मदनमोहन की बाल्यावस्था को इसी झमेल में निकाला चाहतेथे क्योंकि एक तो इस अवकाश में उन लोगों के संग का असर मदनमोहन के चित्त पर दृढ होता जाता था दूसरे मदनमोहन की अवस्था के संग उस्की स्वतन्त्रता बढ़ती जाती थी इसलिये मदनमोहन के सुधरनें का यह रस्ता न था. मदनमोहन के बिचार प्रति दिन दृढ़ होते जाते थे परन्तु वह अपनें पिता के भय से उन्हें प्रगट न करता था. खुलासा यह है कि मदनमोहन के पितानें अपनी प्रीति अथवा मदनमोहन की प्रसन्नता के बिचार से मदनमोहन के बचपन में अपनें रक्षक भाव पर अच्छी तरह बरताव नहीं किया अथवा यों कहो कि अपना कुदरती हक़ छोड़ दिया इसलिये इन्के स्वभाव में अन्तर पड़नें का मुख्य ये ही कारण हुआ.

ब्रजकिशोर ठेठ से मदनमोहन के विरुद्ध समझा जाता था. ब्रजकिशोर को वह लोग कपटी, चुगल, द्वेषी और अभिमानी बताते थे उन्के निकट मदनमोहन के पिता का मन बिगाड़नें वाला वह था. चुन्नीलाल और शिभूदयाल उस्की सावधानी से डर कर मदनमोहन का मन उस्की तरफ़ से बिगाड़ते रहते थे और मदनमोहन भी उस्पर पिता की कृपा देख कर भीतर से जलता था हरकिशोर जैसे मुंह फट तो कुछ, कुछ भरमा भरमी उस्को सुना भी दिया करते थे परन्तु वह उचित जवाब देकर चुप होजाता था और अपनी निर्दोष चाल के भरोसे निश्चिन्त रहता था हां उस्को इन्की चाल अच्छी नहीं लगती थी और इन्के मन का पाप भी मालूम था इस लिये वह इन्से अलग रहता था इन्का बृत्तान्त जान्नें से जान बूझ कर बेपरवाई करता था उसैं मदनमोहन के पिता से इस विषय में बात चीत करना बिल्कुल बन्द कर दिया था मदनमोहन के पिताका परलोक हुए पीछे निस्सन्देह उस्को मदनमोहन के सुधारनें की चटपटी लगी उसैं मदनमोहन को राह पर लानें के लिये समझानेंमें कोई बात बाकी नहीं छोड़ी परन्तु उस्का सब श्रम व्यर्थ गया उस्के समझाने से कुछ काम न निकला.

अब आज हरकिशोर और ब्रजकिशोर दोनों इज्जत खोकर मदनमोहन के पास से हैं इन्में से आगे चल कर देखें कौन् कैसा बरताव करता है?

प्रकरण २५

साहसी पुरुष

सानुबन्ध कारज करे सब अनुबन्ध निहार
करे न साहस, बुद्धि बल पंडित करे बिचार [1]

बिदुरप्रजागरे.

हम प्रथम लिख चुके हैं कि हरकिशोर साहसी पुरुष था और दूर के सम्बन्ध में ब्रजकिशोर का भाई लगता था जब तक उसके काम उसकी इच्छानुसार हुए जाते थे वह सब कामों में बड़ा उद्योगी और दृढ़ दिखाई देता था उस्का मन बढ़ता जाता था और वह लड़ाई झगड़े वगैरे के भयंकर और साहसिक कामों मे बड़ी कारगुजारी दिख लाया करता था. वह हरेक काम के अंग प्रत्यंग पर दृष्टि डालनें या सोच विचार के कामों मे माथा खाली करनें और परिणाम सोचनें या कागज़ी और हिसाबी मामलों में मन लगानें के बदले ऊपर, ऊपर से इन्को देख भाल कर केवल बड़े, बड़े कामों में अपनें तांई लगाये रखनें और बड़े आदमियों मे प्रतिष्ठा पानें की बिशेष रुचि रखता था उसनें हरेक अमीर के हां अपनी आवा जाई कर ली थी और वह सब से मेल रखता था. उस्के स्वभाव में जल्दी होनें के कारण वह निर्मूल बातों पर सहसा बिश्वास कर लेता था और झट पट उन्का उपाय करनें लगता था उस्के बिना बिचारे कामों से जिस तरह बिना बिचारा नुकसान होजाता था इसी तरह बिना बिचारे फ़ायदे भी इतनें होजाते थे जो बिचार कर करनें से किसी प्रकार संभव न थे. जब तक उस्के काम अच्छी तरह सम्पन्न हुए जाते थे, उस्को प्रति दिन अपनी उन्नति दिखाई देती थी, सब लोग उस्की बात मान्ते थे, उस्का मन बढ़ता जाता था और वो अपना काम सम्पन्न करने के लिये अधिक, अधिक परिश्रम करता था परन्तु जहां किसी बात में उस्का मन रुका उस्की इच्छानुसार काम न हुआ किसी नें उस्की बात दुलख दी अथवा उस्को था[ह] पाती न मिली वहां वह तत्काल आग होजाता था हरेक काम को बुरी निगाह से देखने लगता था उस्की कारगुजारी मे फ़र्क आजाता था और वह नुक्सान से दुखी होने लगता था इसलिये उस्को चित्त का भय से खाली न थी

कोई साहसी पुरुष स्वार्थ छोड़ कर संसार के हितकारी कामों में प्रवृत्त हो तो को लम्बस की तरह बहुत उपयोगी होसक्ता है और अब तक संसार की बहुत कुछ उ न्नति ऐसे ही लोगों से हुई है इस लिये साहसी पुरुष तिरस्कार करनें के लायक नहीं है परन्तु युक्ति से काम लेनें के लायक है हां ! ऐसे मनुष्यों से काम लेनें में उन्का मन बराबर बढ़ाते रहो नहीं तो आगे चल कर बाद से बाहर होजानें का भय रहता है इ

---

[1] अनुबन्धानवेक्षेत सानुबन्धेषु कर्मसु । संप्रधार्य च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत् ॥

उस्को यह भेद प्रगट हुआ उसनें मदनमोहन को धमका कर राह पर लानें की युक्ति बिचारी परन्तु वह नहीं जान्ता था कि आदमी धमकानें से आंख और मुख बन्द कर सक्ता है, हाथ जोड़ सक्ता है, पैरों में पड़ सक्ता है, कहो जैसे कह सक्ता है, परन्तु चित्त पर असर हुए बिना चित्त नहीं बदलता और सत्संग बिना चित्त पर असर नहीं होता जब तक अपनें चित्त में अपनी हालत सुधारनें की अभिलाषा न हो औरों के उपदेश से क्या लाभ होसक्ता है? मदनमोहन का पिता मदनमोहन को धमका कर उस्के चित्त का असर देखनें के लिये कुछ दिन चुप होजाता था परन्तु मदनमोहन के मन दुखनें के बिचार से आप प्रबन्ध न करता था और इस देरदार का असर उल्टा होता था. हरकिशोर, शिभूदयाल, चुन्नीलाल, वगैरे मदनमोहन को बाल्यावस्था को इसी झमेल में निकाला चाहतेथे क्योंकि एक तो इस अवकाश में उन लोगों के संग का असर मदनमोहन के चित्त पर दृढ होता जाता था दूसरे मदनमोहन की अवस्था के संग उस्की स्वतन्त्रता बढ़ती जाती थी इसलिये मदनमोहन के सुधरनें का यह रस्ता न था. मदनमोहन के बिचार प्रति दिन दृढ़ होते जाते थे परन्तु वह अपनें पिता के भय से उन्हें प्रगट न करता था. खुलासा यह है कि मदनमोहन के पितानें अपनी प्रीति अथवा मदनमोहन की प्रसन्नता के बिचार से मदनमोहन के बचपन में अपनें रक्षक भाव पर अच्छी तरह बरताव नहीं किया अथवा यों कहो कि अपना कुदरती हक़ छोड़ दिया इसलिये इन्के स्वभाव मै अन्तर पड़नें का मुख्य ये ही कारण हुआ.

ब्रजकिशोर ठेठ से मदनमोहन के विरुद्ध समझा जाता था. ब्रजकिशोर को वह लोग कपटी, चुग़ल, द्वेषी और अभिमानी बताते थे उन्के निकट मदनमोहन के पिता का मन बिगाड़नें वाला वह था. चुन्नीलाल और शिभूदयाल उस्की सावधानी से डर कर मदनमोहन का मन उस्की तरफ़ से बिगाड़ते रहते थे और मदनमोहन भी उसपर पिता की कृपा देख कर भीतर से जलता था हरकिशोर जैसे मुंह फट तो कुछ, कुछ भरमा भरमी उस्को सुना भी दिया करते थे परन्तु वह उचित जवाब देकर चुप होजाता था और अपनी निर्दोष चाल के भरोसे निश्चिन्त रहता था हां उस्को इन्की चाल अच्छी नहीं लगती थी और इन्के मन का पाप भी मालूम था इस लिये वह इन्से अलग रहता था इन्का बृत्तान्त जान्नें से जान बूझ कर बेपरवाई करता था उसनें मदनमोहन के पिता से इस विषय में बात चीत करना बिल्कुल बन्द कर दिया था मदनमोहन के पिताका परलोक हुए पीछे निरसन्देह उस्को मदनमोहन के सुधारनें की पटी लगी उसनें मदनमोहन को राह पर लानें के लिये समझानेंमें कोई बात बाकी न छोड़ी परन्तु उस्का सब श्रम व्यर्थ गया उस्के समझाने से कुछ काम न निकला.

अब आज हरकिशोर और ब्रजकिशोर दोनों इज्जत खोकर मदनमोहन के पा

प्रकरण २५

साहसी पुरुष

सानुबन्ध कारज करे सब अनुबन्ध निहार
करे न साहस, बुद्धि बल पंडित करे बिचार ।
बिदुरप्रजागरे.

हम प्रथम लिख चुके हैं कि हरकिशोर साहसी पुरुष था और दूर के सम्बन्
ाजकिशोर का भाई लगता था जब तक उस्के काम उस्की इच्छानुसार हुए जा
ाह सब कामों में बडा उद्योगी और दृढ़ दिखाई देता था उस्का मन बढ़ता जाता
ौर वह लड़ाई झगडे वगैरे के भयंकर और साहसिक कामों में बड़ी कारगुजारी
ाया करता था. वह हरेक काम के अंग प्रत्यंग पर दृष्टि डालनें या सोच बिच
ामों में माथा खाली करनें और परिणाम सोचनें या कागज़ी और हिसाबी म
में मन लगानें के बदले ऊपर, ऊपर से इन्की देख भाल कर केवल बड़े, बड़े का
अपनें तांई लगाये रखनें और बडे आदमियों में प्रतिष्ठा पानें की बिशेष रुचि रखत
उसनें हरेक अमीर के हां अपनी आवा जाई कर ली थी और वह सब से मेल
था. उस्के स्वभाव में जल्दी होनें के कारण वह निर्मूल बातों पर सहसा बिश्वा
लेता था और झट पट उन्का उपाय करनें लगता था उस्के बिना बिचारे कामों
तरह बिना बिचारा नुक्सान होजाता था इसी तरह बिना बिचारे फायदे भी इतनें
थे जो बिचार कर करनें से किसी प्रकार संभव न थे. जब तक उस्के काम
तरह सम्पन्न हुए जाते थे, उस्को प्रति दिन अपनी उन्नति दिखाई देती थी, स
उस्की बात मान्ते थे, उस्का मन बढ़ता जाता था और वो अपना काम सम्पन्न
के लिये अधिक, अधिक परिश्रम करता था परन्तु जहां किसी बात में उस्का म
उस्की इच्छानुसार काम न हुआ किसी नें उस्की बात दुलख दी अथवा उस्
बासी न मिली वहां वह तत्काल आग होजाता था हरेक काम को बुरी निगाह से
लगता था उस्की कारगुजारी में फर्क आजाता था और वह नुक्सान से खु
लगता था इसलिये उस्की मित्रता भय से खाली न थी.

कोई साहसी पुरुष स्वार्थ छोड़ कर संसार के हितकारी कामों में प्रवृत्त हो
लम्बस की तरह बहुत उपयोगी होसक्ता है और अब तक संसार की बहुत
न्नति ऐसे ही लोगों से हुई है इस लिये साहसी पुरुष परित्याग करनें के लायक
परन्तु युक्ति से काम लेनें के लायक हैं हां ! ऐसे मनुष्यों से काम लेनें में उन
बराबर बढ़ाते जांय तो आगे चल कर काबू से बाहर होजानें का भय रहता

लिये कोई बुद्धिमान तो उन्का मन ऐसी रीति से घटाते बढ़ाते रहते हैं कि न उन्का मन बिगड़नें पावै न हद्द से आगे बढ़नें पावै कोई अनुभवी मध्यम प्रकृति के मनुष्यों को बीच मैं रखते हैं कि वह उन्को वाजबी राह बताते रहें. परन्तु लाला मदनमोहन के यहां ऐसा कुछ प्रबन्ध न था दूसरे उस्के बिचार मूजिब मदनमोहन नें अपनें झूंटे अभिमान से भलाई के बदले जान बूझ कर उस्की इज्जत ली थी इस्कारण हरकिशोर इस्समय क्रोध के आवेश मैं लाल होरहा था और बदला लेनें के लिये उसके मनमें तरंगें उठती थीं. उसनें मदनमोहन के मकान से निकलते ही अपनें जी का गुबार निकालना आरम्भ किया.

पहले उस्को निहालचन्द मोदी मिला उसनें पूछा " आज कितनें की बिक्री की ?"

" खरीदारी की तो यहां कुछ हद ही नहींहै परन्तु माल बेचकर दाम किससे लें जिस्को बहुत नफ़े का लालच हो वह भलेही बेचै मुझको तो अपनी रक़म डबोनी मंज़ूर नहीं " हरकिशोर नें जवाब दिया.

" हैं ! यह क्या कहते हो ? लाला साहब की रक़म मैं कुछ धोकाहै ?"

" धोके का हाल थोड़े दिन मैं खुल जायगा मेरे जान तो होना था वह होचुका."

" तुम यह बात क्या समझकर कहते हो ?" मोदी नें घबराकर पूछा " कम सै कम लाख, पचास हज़ार का तो शीशा बर्तन इस्समय इन्के मकान मैं होगा "

" समय पर शीशे बर्तन को कोई नहीं पूछता उस्की लागत मैं रुपे के दो आनें नहीं उठते इन्ही चीजों की खरीदारी मै तो सब दौलत जाती रही मैंने निश्चय सुना है कि इन चीजों की क़ीमत बाबत पचास हजार रुपे तो ब्राइट साहब के देनें हैं और कल एक अंग्रेज दस हज़ार रुपे मागनें आया था न जानें उसके लेनें थे कि कर्ज मांगता था परंतु लाला साहब नें किसी से उधार मगा कर देनें का क़रार किया है ! फिर जहां उधार के भरोसे सब काम भुगतनें लगा वहां बाकी क्या रहा ? मैंनें अपनी रक़म के लिये अभी बहुत तक़ाज़ा किया पर वे फूटी कौड़ी नहीं देते इसलिये मैं तो अपनें रुपों की नालिश अभी दायर करता हूं तुह्मारी तुम जानों. "

यह बात सुन्ते ही मोदी के होश उड़ गए वह बोला " मेरे भी पांच हज़ार लेनें हैं मैंनें कई बार तगादा किया पर कुछ सुनाई न हुई मैं अभी जाकर अपनी रक़म मांगता हूं जो सूधी तरह देदेंगे तो ठीकहै नहीं तो मैं भी नालिश कर दूंगा. ब्योहार मैं मुलाहिज़ा क्या ?

इस्तरह बतला कर दोनों अपनें, अपनें रस्ते लगे. आगे चल कर हरकिशोर को मिस्टर ब्राइट का मुन्शी मिला वह अपनें घर भोजन करनें जाता था उसे देख कर हरकिशोर अपनें आप कहने लगा " मुझे क्या है ? मेरे तो थोड़ेसे रुपे हैं मैं तो अभी

नालिश करके पटा लूंगा. मुश्किल तो पचास, पचास हजार वालों की है देखें वह क्या करते हैं ? "

" लाला हरकिशोर किस्पर नालिश की तैयारी कर रहे हैं ? " मुन्शीनें पूछा.

" कुछ नहीं साहब ! मैं आप से कुछ नहीं कहता. मैं तो बिचारे मदनमोहन का बिचार कर रहा हूं हा ! उस्की सब दौलत थोड़े दिन में लुट गई अब उस्के काम में हल चल होरही है लोग नालिश करनें को तैयार हैं मैंनें भी कम्बख्ती के मारे हजार रोपक का कपड़ा दे दिया था इसलिये मैं भी अपनें रुपे पटानें की राह सोच रहा हूं. बिचारा मदनमोहन कैसा सीधा आदमी था ? "

"क्या सचमुच उस्पर तक़ाज़ा होगया ? उस्पर तो हमारे साहबके भी पचास हजार रुपे लेनेंहैं आज सवेरेतो लाला मदनमोहन की तरफ़से बड़े कांचों की एक जोड़ी खरीदनें के लिये मास्टर शिंभूदयाल हमारे साहबके पास गएथे फिर इतनी देर में क्या होगया ? तुमनें यह बात किस्से सुनी ? "

" मैं आप वहांसे आताहूं कल्से गड़बड़ होरही है कल एक साहब दसहज़ार रुपे मांगनें आएथे इस्पर मदनमोहन नें स्पष्ट कहदिया कि मेरे पास कुछ नहीं है मैं कहीं से उधार लेकर दो एक दिनमें आपका बंदोबस्त करदूंगा. मैंनें अपनें रुपेके लिये बहुत ताकीदकी पर मुझको भी कोरा जवाबही मिला अबमैं नालिश करनें जाताहूं और निहालचंद मोदी अभी पांचहज़ार के लिये पेट पकडे गयाहै वह कहताथा कि मेरे रुपे इससमय नदेंगे तो मैं भी अभी नालिश करदूंगा जिसकी नालिश पहलै होगी उसको पूरे रुपे मिलेंगे. "

" तो मैं भी जाकर साहब से यह हाल कहदूं तुम्हारी रक़म तो थोरीजहै परंतु साहबका कर्ज़ा बहुत बड़ाहै जो साहबकी इस रकम में कुछ धोका हुआ तो साहब का काम चलना कठिन होजायगा. " ये कह कर मिस्टर ब्राइटका मुनशी घरजानें के बदले साहबके पास दौड़गया.

लाला हरकिशोर आगे बढ़े तो मार्ग में लाला मदनमोहन की पचपनसो की खरीद के तीन घोड़े लिये हुए आगाहसनजान लाला मदनमोहन के मकान की तरफ़ जाता मिला उसको देखकर हर किशोर कहनें लगे " येही घोड़े लाला मदनमोहननें कल खरीदेथे माल तो बेढ़ बापदेसे चिका पर दाम चटजायें तब जानिये. "

" दामोंकी क्याहै ? हमारा हजारों रुपे का काम पड़ताहै. पड़चुकाहै " आगाहसनजाननें जवाब दिया और मनमें कहा " हमारी रक़म तो अपनें लालचसे चुन्नीलाल और शिंभूदयाल पर बी पहुंचा जायेंगे "

" बहुत दिन गए आज लाला मदनमोहनका काम बिगड़रहा रहा है. उसके ऊपर

लोगों का तगादा जारी है जो तुम किसी के भरोसे रहोगे तो धो
करो; अच्छी तरह सोच समझकर करना."

"कल आपको तो लाला साहबनें हमारे यहां आकर ये थो
इतनी देरमें क्या होगया ?"

जब तेल चुकजाताहै तो दिये बुझनें में क्या देर लगती है ? :
सब तेल चाटगए ऐसे चूहों की घात लगे पीछे भला क्या बाकी र

"मैं जानताहूं कि लाला साहब का बहुतसा रुपया लोग खा
बिगड़नें की बात मेरे मनमें अबतक नहीं बैठती तुमनें यह हाल कि

"मैं आप यहां से आयाहूं मुझको झूंट बोलनें से क्या फायद
कर नालिश करताहूं निहालचंद मोदी नालिश करनें को तैयारहै अ
अभी सब हकीकत निश्चय करके साहब के पास दौड़ागया है तुम
संदेह न मानो तुम न मानोगे इसमें मेरी क्या हानि होगी" यह क
वहांसे चल दिया."

पर अब मदनमोहन की तरफ़से आग़ाहसनजान को धैर्य न र
लालच उसको पीछे हटाताथा और नफेका लालच आगे बढ़ाताथा
से तबियत और भी घबराई जाती थी निदान यह राह ठैरी कि इस
ऐबलो मदनमोहन का काम बना रहेगा तो पहले रुपे वसूल हुए पी
देंगे नहीं तो कुछ काम नहीं."

इधर हरकिशोर को मार्ग में जो मिलताथा उसी वह मदनमोहन
हाल बराबर कहता चलाजाता था और यह सब बातें बाज़ार में
एकसे कहनें में पांच और सुन लेतेथे और उन पांचके मुखसे पचास
तत्काल मालूम होजाताथा फिर पचाससे पांचसो में और पांचसो से
फैलते क्या देर लगती थी ? और अधिक आश्चर्य की बात यह थी
अपनी तरफ़ से भी कुछ, न कुछ नोंन मिर्च लगाही देताथा जिसको
भरोसा न आया दोके कहनें से आगया, दोके कहनें से न आया
आगया मदनमोहनके चाल चलनसे अनुभवी मनुष्य तो यह पहि
समझरहेथे जिसपर मास्टर शिंभूदयाल नें मदनमोहन की तरफ़से एक
लेनें की बात चीत की थी इसलिये इस चर्चा में किसी को संदेह नरहा
थी बत्ती दिखातेही तत्काल भभक उठी.

परन्तु लाला मदनमोहन या ब्रजकिशोर वगैरे को

प्रकरण २९.

दिवाला.

कीजे समझ, न कीजिए बिन बिचार ब्यवहार ॥
आय रहत जानत नहीं ? सिरको पायन भार ॥

बृंद.

लालामदनमोहन प्रातःकाल उठतेही कुतब जानें की तैयारी कर रहेथे. साथ जानें वाले अपनें, अपनें कपड़े लेकर आते जाते थे इतनें में निहालचंद मोदी कई तक़ाजगीरों को साथ लेकर आ पहुंचा.

इस्नें हरकिशोरसे मदनमोहनके दिवाले का हाल सुनाथा उसी समयसै इस्को तलामली लगरही थी कल कई बार यह मदनमोहनके मकानपर आया पर किसीनें इस्को मदनमोहनके पास तक न जानें दिया और न इस्के आनेंकी इत्तला की. संध्या समय मदनमोहनके सवार होनेंके भरोसे वह दरवाजे पर बैठा रहा परंतु मदनमोहन सवार न हुए इस्सै इस्का संदेह और भी दृढ़ होगया. शहरमें तरह, तरह की हजारों बातें सुनाई देती थीं इस्सै वह आज सवेरे ही कई लेनदारोंको साथ लेकर एकदम मदनमोहनके मकानमें घुस आया और पहुचतेही कहनें लगा " साहब! अपना हिसाब करके जितनें रुपे हमारे बाकी निकलें हमको इसी समय देदीजिये हमें आपका लेन देन रखना मंजूर नहीं है कल्सै हम कई बार यहां आए परंतु पहरे वालोंनें आपके पास तक नहीं पहुंचनें दिया."

" हमारा रुपया खर्च करके हमारे तक़ाजेसै बचनेंके लिये यहतो अच्छी युक्ति निकाली!" एक दूसरे लेनदारनें कहा " परंतु इसतरह रक़म नहीं पचसक्ती नालिश करके दमभरमें रुपया धरालिया जायगा."

" बाहर पहरे चोकी का बंदोबस्त करके भीतर आप अस्बाब बांधरहेहैं!" तीसरे मनुष्यनें कहा " जो दो, चार घड़ी हम लोग और न आते तो दरवाजेपर पहराही पहरा रहजाता लाला साहबका पता भी न लगता."

" इसमें क्या संदेहहै? कल रातही को लाला साहब अपनें बालबच्चोंको तो मेरठ भेजचुकेहैं" चोथेनें कहा " इन्सालवन्सीके सहारेसै लोगों की जमा मारनें का इनदिनों बहुत होसला होगया है"

" क्या इस जमाने में रुपया पैदा करनें का लोगों नें यही ढंग समझ रक्खाहै?" एक और मनुष्य कहनें लगा " पहले अपनी साहूकारी, मातबरी, और रसाई दिखाकर लोगोंके चित्त में बिश्वास बैठाना, और अंतमें उन्की रक़म मारकर एक किनारे हो बैठना"

प्रथम तो निहालचंद कलसे अपनें मनमें घबराहट होनें का हाल आप कह चुका था, दूसरे हरकिशोर की तरफ़ से नालिश दायर होकर सम्मन आगया, तीसरे चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के स्वभाव को अच्छी तरह जान्ता था इस्लिये उसके मनमें ब्रजकिशोर की तरफ़ से ज़रा भी संदेह न था परंतु वह हरकिशोर की अपेक्षा ब्रजकिशोर से अधिक डरता था इसलिये उसें ब्रजकिशोर ही को अपराधी ठैरानें का बिचार किया अफ़सोस! जो दुराचारी अपनें किसी तरह के स्वार्थ से निर्दोष और धर्मात्मा मनुष्यों पर झूंटा दोष लगाते हैं अथवा अपना क़सूर उन्पर बरसाते हैं उन्के बराबर पापी संसार में और कौन होगा ?

लाला मदनमोहन के मनमें चुन्नीलाल के कहनें का पूरा बिश्वास होगया उसें कहा " कि मैं अपनें मित्रों को रुपे की सहायता के लिये चिठी लिखताहूं मुझको बिश्वासहै कि उन्की तरफ़ से पूरी सहायता मिलेगी परंतु सबसे पहले ब्रजकिशोर के नाम चिठी लिखूंगा कि अब वह मुझको अपना काला मुंह जन्म भर न दिखलाय " यह कह कर लाला मदनमोहन चिठीयां लिखनें लगे.

प्रकरण २७

लोक चर्चा (अफ़वाह)

निन्दा, चुगली, झूंट अरु पर दुखदायक बात ।
जे न करांहि तिन पर द्रवांहि सर्बेश्वर बहुभांत ॥ +
विष्णुपुराणे.

उस तरफ़ लाला ब्रजकिशोरनें प्रातःकाल उठ कर नित्य नियम से निश्चिन्त होतेही मुनशी हीरालाल को बुलानें के लिये आदमी भेजा.

हीरालाल मुनशी चुन्नीलाल का भाई है यह पहले बंदोबस्त के महकमे मैं नौकर था जब से वह काम पूरा हुआ ; इस्की नौकरी कहीं नहीं लगी थी.

" तुमनें इतनें दिनसे आकर सूरत तक नहीं दिखाई घर बैठे क्या किया करते हो ? " हीरालाल को आते ही ब्रजकिशोर कहनें लगे " दफ्तर में जाते थे जब तक तो ख़ैर अवकाश ही न था परंतु अब क्यों नहीं आते ? "

" हुज़ूर ! मैं तो हरवक्त हाजिर हूं परंतु बेकाम आनें मैं शर्म आती थी आज आपनें याद किया तो हाजिर हुआ फ़रमाइये क्या हुक्म है ? " हीरालाल नें कहा.

" तुम ख़ाली बैठे हो इस्की मुझे बड़ी चिन्ता है तुमारे बिचार सुधरे हुए हैं इस्से तुमको पुरानें हक़ का कुछ ख़याल हो या न हो (!) परंतु मैं तो नहीं भूल सक्ता तुम्हारे

+ परापवादपैशुन्य मनृतं च न भाषते । अन्योद्वेगकरं चापि तोष्यते तेन केशवः ॥

भाई जवानी की तरंग में आकर नौकरी छोड़ गया परन्तु मैं तो तुझें नहीं छोड़ सक्ता. मेरे यहां इन दिनों एक मुहर्रिर की चाह थी सब से पहले मुझको तुह्मारी याद आई (मुस्करा कर) तुह्मारे भाई को दस रुपे महीना मिलता था परन्तु तुम उस्से बडे हो इसलिये तुम को उस्से दूनी तनख्वाह मिलेगी "

"जी हां! फिर आपकी चिन्ता न होगी तो और किस्को होगी? आप के सिवाय हमारा सहायक कौन है? चुन्नीलाल नें निस्संदेह मूर्खता की परन्तु फिर भी तो जो कुछ हुआ आप ही के प्रताप से हुआ."

"नहीं मुझको चुन्नीलाल की मूर्खता का कुछ बिचार नहीं है मैं तो यही चाहता हूं कि वह जहां रहै प्रसन्न रहै. हां मेरी उपदेश की कोई, कोई बात उस्को बुरी लगती होगी परन्तु मैं क्या करूं? जो अपना होताहै उस्का दर्द आता ही है "

"इस्में क्या सन्देह है? जो आप को हमारा दर्द न होता तो आप इस समय मुझको घर से बुलाकर क्यों इतनी कृपा करते? आपका उपकार मान्नें के लिये मुझ को कोई शब्द नहीं मिल्ते परन्तु मुझको चुन्नीलाल की समझ पर बड़ा अफ़सोस आता है की उस्नें आप जैसे प्रतिपालक के छोड़ जानें की ढिठाई की. अब वह अपनें किये का फल पावेगा तब उस्की आंखें खुलेंगी "

"मैं उस्के किसी, किसी काम को निस्सन्देह नापसन्द करता हूं परन्तु यह सर्वथा नहीं चाहता कि उस्को किसी तरह का दुःख हो "

"यह आप की दयालुता है परन्तु कार्य कारण के सम्बन्ध को आप कभी रोक सक्ते हैं? आज लाला मदनमोहन पर तकाज़ा होगया. जो ये लोग आप का उपदेश मान्ते तो ऐसा क्यों होता?"

"हाय! हाय! तुम यह क्या कहते हो? मदनमोहन पर तकाज़ा होगया! तुमनें यह बात किस्से सुनी? मैं चाहता हूं कि परमेश्वर करे यह बात झूंट निकले " लाला ब्रजकिशोर इतनी बात कह कर दुःख सागर मैं डूब गए उन्के शरीर मैं बिजली का सा एक झटका लगा, आखों मैं आंसू भर आए, हाथ पांव शिथिल होगए. मदनमोहन के आचरण से बडे दुःखके साथ वह यह परिणाम पहले ही समझ रहे थे इस लिये उन्को उस्का जितना दुःख होना चाहिये पहले होचुका था तथापि उन्को ऐसी जल्दी इस दुखदाई खबर के सुन्नें की सर्वथा आशा न थी इस लिये यह खबर सुन्ते ही उन्का जी एक साथ उमड़ आया परन्तु वह थोड़ी देरमै अपनें चित्तका समाधान करके कहनें लगे -

"हा! कल क्या था! आज क्या होगया!!! शृंगाररसका हूबहू नमूना एकाएक करुणा से बदलगया! बेल्जियमकी राजधानी ब्रसेल्स पर नेपोलियननें चढ़ाई की थी उससमय की दुर्दशा इससमय याद आती है, लार्डबायरन लिखताहै:-

" निशि मैं बरसेलस गाजिरह्यो ॥ बल, रूप बढाय बिराजिरह्यो
अतिरुपवती युवती दरसैं ॥ बलवान सुजान जवान लसैं
सब के मुख दीपनसों दमकैं ॥ सब के हिय आनँद सों धमकैं
बहुभांति बिनोद प्रमोद करैं ॥ मधुरे सुर गाय उमंग भरैं
जब रागन की मृदु तान उडैं ॥ प्रियप्रीतम नैनन सैन जुडैं
चहुंओर सुखी सुख छायरह्यो ॥ जनु व्याहन घंट निनाद भयो
पर मौनगहो! अबिलोक इतै!॥ यह होत भयानक शब्द कितै?
डरपौ जिन चंचल बायु बहै ॥ अथवा रथ दौरत आवतहै
प्रिय! नाचहु, नाचहु ना ठहरो ॥ अपनें सुखकी अवधी न करो
जब जोबन और उमंग मिलैं ॥ सुख लूटन को दुहु दौरचलैं
तब नींद कहूं निशआवतहै? ॥ कुछ औरहु बात सुहावतहै?
पर कान लगा; अब फेर सुनो ॥ वह शब्द भयानक है दुगनो!
घनघोरघटा गरजी अबही ॥ तिहँ गूंज मनो दुहराय रही
यह तोप दनादन आवतहैं ॥ ढिंग आवत भूमि कँपावतहैं
"सब शस्त्रसजो, सब शस्त्रसजो" ॥ घबराट बढो सुख दूर भजो
दुखसों बिलपैं कलपैं सबही ॥ तिनकी करुणा नहिं जायकही
निज कोमलता सुनि लाजगए ॥ सुकपोल ततक्षण पीत भए
दुखपाय कराहि बियोगलहैं ॥ जनु प्राण बियोग शरीर सहैं
किहिभांति करों अनुमान यहू ॥ प्रिय प्रीतम नैन मिलैं कबहू?
जब वा सुख चैनहि रात गई ॥ इहिं भांत भयंकर प्रात भई!!! " ×

हां यह खबर तुमनें किस्से सुनी?"

× There was a sound of revelry by night,
And Belgium's capital had gathered then
Her Beauty and her Chivalry, and bright
The lamps shone o'er fair women and brave men;
A thousand hearts beat happily, and when
Music arose with its voluptuous swell,
Soft eyes look'd love to eyes which spake again,
And all went merry as a marriage bell;
But, hush! hark! a deep sound strikes like a rising knell!
Did ye not hear it? - No; 't was but the wind,
Or the car rattling o'er the stony street;
On with the dance! let joy be unconfined,
No sleep till morn, when Youth and Pleasure meet

" चुन्नीलाल अभी घर भोजन करनें आया था वह कहता था "

" वह अबतक घरहो तो उसे एक बार मेरे पास भेजदेना हम लोग खुशी मसन्नतामें चाहे जितनें लड़ते झगड़ते रहें परन्तु दुःख दर्द मे सब एक हैं. तुम चुन्नीलाल, से कहदेना कि मेरे पास आनें मे कुछ संकोच न करे मैं उससे ज़राभी अप्रसन्न नहीं हूं "

" राम, राम! यह हजूर क्या फरमाते हैं ? आप की अप्रसन्नता का बिचार कैसे होसक्ताहै ? आप तो हमारे प्रतिपालक है. मैं जाकर अभी चुन्नीलाल को भेजताहूं वह आकर अपना अपराध क्षमा करायगा और चला गया होगा तो शामको हाजिर होगा " हीरालालनें उठते उठते कहा.

" अच्छा ! तुम कितनी देर मे आओगे ? "

" मैं अभी भोजन करके हाजिर होताहूं " यह कह कर हीरालाल रुखसत हुआ.

लाला ब्रजकिशोर अपनें मनमें बिचारनें लगे कि " अब चुन्नीलाल से सहज में मेल होजायगा परन्तु यह तक़ाज़ा कैसे हुआ ? कल हरकिशोर क्रोधमें भररहा था इस्से शायद उसीनें यह अफ़वा फैलाई हो उसनें ऐसा किया तो उस्के क्रोधनें बडा अनुचित मार्ग लिया और लोगोंनें उस्के कहनें में आकर बडा धोका खाया.

" अफ़वा वह भयंकर बस्तु है जिस्से बहुत से निर्दोष दूषित बनजाते हैं. बहुत लोगोंके जीमें रंज पडजाते है बहुत लोगों के घर बिगडजाते हैं. हिंदुस्थानियोंमें अबतक बिद्याका व्यसन नहीं है समय की क़दर नहीं है भले बुरे कामों की पूरी पहचान नहीं है इसी से यहांके निवासी अपना बहुत समय औरों के निज की बातों पर हाशिया लगानें में और इधर उधर की ज़टल्ल हांकनें मे खो देते हैं जिस्सें तरह, तरह की

To chase the glowing hours with flying feet -
But hark ! - that heavy sound breaks in once more,
As if the clouds its echo would repeat;
And nearer, clearer, deadlier, than before!
Arm ! arm ! it is- it is - the cannon's opening roar!
Ah ! then and there was hurrying to and fro,
And gathering tears and tremblings of distress,
And cheeks all pale, which but an hour ago
Blush'd at the praise of their own loveliness,
And there were sudden partings, such as press
The life from out young hearts, and choking sighs
Which ne'er might be repeated who would guess
If ever more should meet those mutual eyes,
Since upon night so sweet such awful morn should rise!

Lord Byron

अफ़वाएँ पैदा होती हैं और भले मानसों की झूंटी निंदा अफ़वाकी जहरी पवन मैं मिल्कर उन्के सुयश को धुंधला करती है इन अफ़वा फैलानें वालों में कोई, कोई दुर्जन खानें कमानें वाले हैं कोई कोई दुष्ट बैर और जलन से औरों की निंदा करनें वाले हैं और कोई पापी ऐसे भी हैं जो आप किसी तरह की योग्यता नहीं रखते इस लिये अपना भरम बढानें को बड़े बड़े योग्य मनुष्यों की साधारण भूलों पर टीका करके आप उन्के बराबर के बना चाहते हैं अथवा अपना दोष छिपानें के लिये दूसरे के दोष ढुंडते फिरते हैं या किसी की निंदित चर्चा सुन्कर आप उस्से जुदे बननेंके लिये उस्की चर्चा फैलानें मैं शामिल होजाते हैं या किसी लाभदायक बस्तु से केवल अपना लाभ स्थिर रखनेंके लिये औरों के आगे उस्की निंदा किया करते हैं पर बहुतसे लोग अपना मन बहलानें के लिये औरों की पंचायत ले बैठते हैं बहुतसे अनसमझ भोले भाले वसे बात का मर्म जानें बिना लोगों की बनावट मैं आकर धोका खाते हैं. जो लोग औरों की निंदा सुन्कर कांपतें हैं वह आप भी अपनें अजानपनें मैं औरोंकी निंदा करते हैं जो लोग निर्दोष मनुष्योंकी निंदा सुन्कर उन्पर दया करते हैं वह आप भी धरे हैं कान मैं झुककर, औरों से कहनें के वास्ते मनै करकर, औरोंकी निंदा करते हैं! जिन लोगोंके मुख से यह वाक्य सुनाई देते हैं कि "बड़े खेद की बात है" "बड़ी बात है" "बड़ी लज्जा की बात है" "यह बात मान्नें योग्य नहीं" "इस्में बहुत संदेह है" "इन्बातों से हाथ उठाओ" वह आप भी औरों की निंदा करते हैं! आप भी अफ़वाह फैलानें वालों की बात पर थोड़ा बहुत बिश्वास रखते हैं! झूंटी अफ़वासे केवल भोले आदमियों के चित्त परही बुरा असर नहीं होता वह सावधान सावधान मनुष्यों को भी ठगती है. उस्का एक, एक शब्द भले मानसों की इज्जत ताहै कल्पद्रुम में कहा है "होत चुगल संसर्ग ते सज्जन मनहुं बिकार ॥ कमल वाही गलिन धूर उड़ावत ब्यार ॥ १ *" जो लोग असली बात निश्चय किये बिना केवल अफ़वाके भरोसे किसी के लिये मत बांध लेते हैं वह उस्के हक़ मैं बड़ी बे न्साफी करते हैं. अफ़वा के कारण अबतक हमारे देशको बहुत कुछ नुकसान हो काहे नादिरशाहसे हारमान्कर मुहम्मदशाह उसै दिल्ली में लिवालाया तब नगर निवा योंनें यह झूंटी अफ़वा उड़ादी की नादिरशाह मरगया. नादिरशाह नें इस झूंटी अफ़ को रोकनें के लिये बहुत उपाय किये परंतु अफ़वा फैले पीछे कब रुकसक्ती लाचार होकर नादिरशाहनें बिजन बोल दिया. दोपहरके भीतर भीतर लाख मनु से अधिक मारे गए! तथापि हिन्दुस्थानियों की आंख न खुली.

* सुजमाना मपि ह्रदयं पिशुनपरिष्वंगलिन मिह भवति ।
पवनः परागवाही रथ्यामुवहन् रजस्वलो भवति ॥

"हिन्दुस्थानियों को आज कल हर बात में अंग्रेजों की नक़ल करनें का चस्का पड़ रहाहै तो वह भोजन वस्त्रादि निरर्थक बातों की नक़ल करनें के बदले उन्के सच्चे सद्गुणों की नक़ल क्यों नहीं करते? देशोपकार, कारीगरी और व्यापारादि मे उन्की सी उन्नति क्यों नहीं करते? अपना स्वभाव स्थिर रखनें में उन्का दृष्टांत क्यों नहीं लेते? अंग्रेजों की बात चीत में किसी की निजकी बातों का चर्चा करना अत्यंत दूषित समझा जाता है. किसीको तन्ख्वाह या किसी की आमदनी, किसी का अधिकार या किसीका रोजगार, किसीकी सन्तान या किसी के घर का बृतान्त पूछनें में, पूछा होय तो कहनें में, कहा होय तो सुन्नें में वह लोग आनाकानी करते हैं और किसी समय तो किसी का नाम, पता और उम्र पूछना भी ढिटाई समझा जाता है अपनें निज के सम्बन्धियों की निज की बातों से भी अजान रहना वह लोग बहुधा पसंद करते हैं रेल में, जहाज़ में खानें पीनें के जल्सों में, पास बैठनें मे और बात चीत करनें में जान पहचान नहीं समझी जाती. वह लोग किराए के मकान में बहुत दिन पास रहनें पर बल्कि दुःख दर्द में साधारण रीति से सहायता करनें पर भी दूसरे की निज की बातों से अजान रहते हैं. जब तक जान पहचान स्थिर रखनें के लिये दूसरे की तरफ़ से सवाल न हो, अथवा किसी तीसरे मनुष्य नें जान पहचान न कराई हो, नित्य की मिला भेटी और साधारण रीति से बात चीत होनें पर भी जान पहचान नहीं समझी जाती और जान पहचान हुए पीछे भी मित्रता होनें में बड़ी देर लगती है क्योंकि वह लोग स्वभाव पहचानें बिना मित्रता नहीं करते पर मित्रता हुए पीछे भी दूसरे की निज की बातों से अजान रहना अधिक पसन्द करते हैं. उन्के यहां निज की बातों के पूछनें की रीति नहीं है उन्को देश सम्बंधी बातें करनें का इतना अभ्यास होता है कि निज के बृतान्त पूछनें का अवकाश ही नहीं मिल्ता परंतु निज की बातों से अजान रहनें के कारण उन्की प्रीति में कुछ अंतर नहीं आता. मनुष्य का दुराचार साबित होनें पर वह उसे तत्काल छोड़ देते हैं परंतु केवल अफ़वा पर वह कुछ ख़याल नहीं करते बल्कि उस्का अपराध साबित न हो जब तक वह उसको अपना बचाव करनें के लिये पूरा अवकाश देते हैं और उचित रीति से उस्का पक्ष करते हैं."

प्रकरण २८.

फूटका काला मुंह.

फूटगए हीरा की बिकानी कनी हाट, हाट काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल कों लयो ॥
टूटगई लंका फूट मिल्यो जो विभीषण है रावन समेत बंस आसमान कों गयो ॥
कहै कविगंग दुर्योधन सो छत्रधारी तनक के फूटे गुमान वाको नै गयो ॥

फूटते नई उठ जात बाजी चौपर की आपस के फूट कहु कौन को भलो भयो ?॥
गंग.

थोड़ी देर पीछे मुनशी चुन्नीलाल आ पहुंचा परंतु उस्के चहरे का रंग उड़ रहा था लाज से उस्की आंख ऊंची नहीं होती थी प्रथम तो उस्की सलाह से मदनमोहन का काम बिगड़ा दूसरे उस्की कृतघ्नता पर ब्रजकिशोर नें उस्के साथ ऐसा उपकार किया इसलिये वह संकोच के मारे धरती में समाया जाता था.

"तुम इतनें क्यों लजाते हो ? मैं तुम से ज़रा भी अप्रसन्न नहीं हूं बल्कि किसी किसी बात में तो मुझको अपनी ही भूल मालूम होती है मैं लाला मदनमोहन की हरेक बात पर हदसे ज्यादः ज़िद करनें लगता था परन्तु मेरी वह ज़िद अनुचित थी. हरेक मनुष्य अपनें विचार का आप धनी है मैं चाहता हूं कि आगे को ऐसी सूरत न हो और हम सब एक चित्त होकर रहें परन्तु मैंनें तुम को इससमय इस सलाह के लिये नहीं बुलाया इस विषय में तो जब तुह्मारी तरफ़ से चाहना मालूम होगी देखा जायगा". लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " इससमय तो मुझको तुम से हीरालाल की नौकरी बाबत सलाह करनी है यह बहुत दिन से ख़ाली है और मुझको अपनें यहां इससमय एक मुहर्रिर की जरूरत मालूम होती है तुम कहो तो इन्हें रख लूं ?"

" इसमें मुझसे क्या पूछते हैं ? लिये आप मालिक है " मुनशी चुन्नीलाल कहनें लगा " मेरी तो इतनी ही प्रार्थना है कि आप " मेरी मूर्खता पर दृष्टि न करें अपनें बड़प्पन का विचार रक्खें. पहली बातों के याद करनें से मुझको अत्यन्त लज्जा आती है आपनें इससमय लाला हीरालाल को नौकर रख कर मुझे मात कर दिया."

" मैं तुम को लज्जित करनें के लिये यह बात नहीं कहता मैंनें अपनें मन का निज भाव तुम को इस लिये समझा दिया है कि तुम मुझे अपना शत्रु न समझो" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " हिन्दुस्थान के सत्यानाश की जड आरंभ से यही फूट है इसी के कारण कौरव पांडवों का घोर युद्ध हुआ, इसी के कारण नन्द वंश की जड़ उखड़ी पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट से हिन्दुस्थान में मुसलमानो का राज आया और मुसलमानो का राज भी अन्त मै इसी फूट के कारण गया. सौ सवासौ बरस से ले कर अब तक हिन्दुस्थान मे कुछ ऐसे अप्रबन्ध, फूट और स्वेच्छाचार की हवा चली कि बहुत लोग आपस में कट मरे. साहूजी नें ईस्ट इन्डियन कंपनी को देवी कोटे का किला और ज़िला देकर उस्के द्वारा अपनें भाई प्रताप सिंह से तंजोर का राज छीन लिया. बंगाल के सूबेदार सिराजुद्दौला से अधिकार छीन्नें के लिये उस्के बख़शी मीर जाफ़र और दीवान राय दुल्लभ आदि नें कंपनी को दक्षिण काल्पी तक की ; जमीदारी एक किरोड़ रुपया नक़द और कलकत्ते के अंग्रेजों को पचास लाख, फ़ौज को पचास लाख, ... और लोगों को चालीस लाख अनुमान देनें किये. जब मीर जाफ़र सूबेदार हुआ

तब उस्से अधिकार छीनर्ने के लिये उस्के जँवाई कासमअलीखां नें कंपनी को बर्दवान मेदनीपुर, घट गांव के जिले, पांच लाख रुपे नक़द, और कौन्सिल वालों को बीस लाख रुपे देनें किये. जब कासमअलीखां सूबेदार होगया और महसूल बाबत उस्का कंपनी से बिगाड़ हुआ तब मीर जाफर नें कंपनी को तीस लाख रुपे नक़द और बारह हज़ार सवार और बारह हजार पैदलों का खर्च देकर फिर अपना अधिकार जमा लिया. उधर अवध का सूबेदार शुजाउद्दौला कंपनी को चालीस लाख रुपे नक़द और लड़ाई का खर्च देना करके उस्की फौज रुहेलों पर चढ़ा लेगया. दखन में बालाजी राव पेशवा के मरते ही पेशवाओं के घरानें में फूट पड़ी दो थोक होगए अब तक पंजाब बच रहा था रणजीतसिंह की उन्नति होती जाती थी परन्तु रणजीतसिंह के मरते ही वहां फूटनें ऐसे पांव फैलाए कि पहले सब झगड़ों को मात कर दिया. राजा ध्यानसिंह मंत्री और उस्के बेटे हीरासिंह आदि की स्वार्थपरता, लहनासिंह और अजीतसिंह सिंधां वालों का छल अर्थात् कुंवर शेरसिंह और राजा ध्यानसिंह के जी में एक दूसरे की तरफ से सन्देह डालकर बिरोध बढ़ाना, और अन्त में दोनों के प्राण लेना राजकुमार खड़गसिंह उस्का बेटा नोनिहालसिंह राजकुमार शेरसिंह उस्का बेटा प्रतापसिंह आदिकों अनसमझी से आपस में वह कटमकटा हुई कि पांच बरस के भीतर भीतर उस्के बंशमें सिवाय दिलिपसिंह नामी एक बालक के कोई न रहा और उस्का राज भी कंपनी के राज में मिलगया. किसी नें सच कहा है. " अल्पसारहू बहुत मिल करैं बड़ो सो जोर ॥ जों गजको बंधन करे तृणकी निर्मित डोर ॥ " १ इसलिये में आपसकी फूटको सर्वथा अच्छी नहीं समझता तुम मेरे पास से गए थे इसलिये मुझको तुह्मारे कामों पर बिशेष दृष्टि रखनी पड़ती थी परंतु तुम अपनें जीमें कुछ और ही समझते रहे. चलो खैर! अब इन बातों की चर्चा करनें से क्या लाभहै "

" आप यह क्या कहते हैं ? आप मेरे बड़े हैं में आपका बरताव औरतरह कैसे समझ सक्ता था ? " चुन्नीलाल कहनें लगा " आपनें बचपनसे मेरा पालन किया, मुझको पढ़ा लिखाकर आदमी बनाया इस्से बढ़कर कोई क्या उपकार करेगा ? मैं अच्छी तरह जान्ताहूं कि आपनें मुझसे जो कुछ भला बुरा कहा; मेरी भलाई के लिये कहा. क्या मैं इतना भी नहीं जान्ता कि दंगा करनें से मा अपनें बालक को मारती है दूसरे से कुछ नहीं कहती. यदि आपको हमारे प्रतिपालन की चिन्ता मनसे न होती तो ऐसे कठिन समयमें लाला हीरालाल को घर से बुलाकर क्यों नोकर रखते ? "

" भाई ! अब तो तुमनें वही खुशामद की लच्छेदार बातें छेड़दीं " लाला ब्रजकिशोरनें हँसकर कहा.

---

१ आकारै रिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च ॥ नेत्रवक्त्र विकारैश्च गृह्यतेन्त र्गतंमनः ॥

" आपके जीमें मेरी तरफ का संदेह होरहाहै इस्से आपको ऐसाही भासता होगा परन्तु इन्में से कौन्सी बात आपको खुशामद की मालूम हुई ? "

" मनुस्मृति में कहाहै "आकृति, चेष्टा, भाव, गति, बचन रीति, अनुमान॥नैन सेन, मुखकांति लख मनकी रुचि पहिचान ॥ १ + " लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " तुम कहते हो कि 'आपनें जो कुछ भला बुरा कहा मेरी भलाई के लिये कहा' परंतु उस समय तुम यह सर्वथा नहीं समझते थे तुह्मारे कामों से यह स्पष्ट जाना जाता था कि तुम मेरी बातों से अप्रसन्न हो और तुह्मारा अप्रसन्न होना अनुचित नथा क्योंकि मेरी बातों से तुह्मारा नुक्सान होता था मुझको इस्बातका पीछे बिचार आया मुझको इस समय इन् बातों के जतानें की जरूरत न थी परंतु मैंनें इसलिये जतादी कि मैं भी सच झूंट को पहचान्ताहूं सचाई बिना मुझसे सफाई न होगी "

" आपकी मेरी सफाई क्या ? सफाई और बिगाड बराबर वालों में हुआ करताहै आपतो मेरे प्रतिपालक हैं आप की बराबरी में कैसे कर सक्ता हूं ? " मुन्शी चुन्नीलाल नें गंभीरतासे कहा.

यह तो बहानें साजी की बातें हैं सफाई के ढंग और ही हुआ करतेहैं मुझको तुह्मारे सब भेद मालूम हैं परंतु तुमनें अबतक कौन्सी बात खुल के कही?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं पूछताहूं कि तुमनें मदनमोहन के हांसे सिवाय तनख्वाह के और कुछ नहीं लिया तो तुह्मारे पास आठ दस हजार रुपे कहांसे आगए ? मिस्टर ब्राइट इत्यादिसे तुम जो कमीशन लेते हो उसका हाल मैं उन्के मुखसे सुन चुकाहूं तुह्मारे और शिंभूदयाल की हिस्सा पत्ती का हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है. हरकिशोर और निहालचंद गली, गली तुह्मारी धूल उड़ाते फिरते हैं. मैं नहीं जान्ता कि जब इस्की चर्चा अदालत तक पहुंचेगी तो तुह्मारे लिये क्या परिणाम होगा ? मैंनें केवल तुमसे सलाह करनें के लिये यह चर्चा छेडी थी परंतु तुम इसके छिपानें में अपनी सब अकलमंदी खर्च करनें लगे तो मुझको पूछनें से क्या प्रयोजन है ? जो कुछ होना होगा समय पर अपनें आप हो रहैगा "

" आप क्रोध न करें मैंनें हर काम में आप को अपना मालिक और प्रतिपालक समझ रक्खा है मेरी भूल क्षमा करें और मुझको इस्समय से अपना सच्चा सेवक समझें रहैं " मुनशी चुन्नीलाल नें कुछ, कुछ डरकर कहा " आप जान्ते हैं कि कुन्बे का बड़ा खर्च है इस्के वास्ते मनुष्य को हजार तरहके झूंट सच बोलनें पड़ते हैं (बृन्द) " उदर भरनके कारनें प्राणी करत इलाज ॥ नाचे, बांचे, रणभिरे, राचे काज अकाज ॥ "

"संसारकी यही रीति है. प्रसंग रत्नावली में लिखाहै "ज्ञान बृद्ध तपबृद्ध अरु बयके

+ बहूनामल्प साराणां समवायोहि दुर्जयः ॥ तृणै र्विधीयते रज्जुर्बध्यन्तेदन्तिनस्तया ॥

वृद्ध सुजान ॥ धनवाननके द्वार कों सेवैं भृत्य समान ॥ + ” लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे “तुमको मेरी एकाएक राय पलटनें का आश्चर्य होगा परंतु आश्चर्य न करो. जिस तरह शतरंज मे एक, एक चाल चलनें से बाज़ी का नकशा पलटता जाता है इसी तरह संसारमें हरेक बातसे काम काज की रीति भांति बदलती रहती है मैं अबतक यह समझता था कि मुझको मदनमोहन से अवश्य इन्साफ़ मिलेगा परन्तु वह समय निकल गया अबमें फ़ायदा उठाऊं या न उठाऊं मदनमोहन को फ़ायदा पहुंचाना सहज नहीं. मेरा हाल तुम अच्छी तरह जान्ते हो मैं केवल अपनी हिम्मत के सहारे सब तरह का दुख झेल रहाहूं परंतु मेरे कर्तव्यकाम मुझको ज़राभी नहीं उभरनें देते. कहते हैं कि अत्यंत विपत्तिकाल में महर्षि विश्वामित्रनें भी चंडालके घरसे कुत्तेका मांस चुराया था! फिर मै क्या करूं? क्या नकरूं? कुछ बुद्धि काम नहीं करती”

“समय बीते पीछे आप इन सब बातों की याद करते हैं अबतो जो होनाथा हो चुका यदि आप पहले इन बातों का बिचार करते तो केवल आपको ही नहीं आपके कारण हम लोगों को भी बहुत कुछ फ़ायदा होजाता”

“तुम अपनें फ़ायदेके लिये तो वृथा खेद करते हो!” लाला ब्रजकिशोरनें हंसकर जवाब दिया “अलबत्ता मै मदनमोहनसे साफ़ जवाब पाए बिना कुछ नहीं करसक्ताथा क्योंकि मुझको प्रतिज्ञा भंग करना मंजूर नथा क्या तुमको मेरी तरफ़से अबतक कुछ संदेह है?”

“जी नहीं, आपकी तरफ़का तो मुझको कुछ संदेह नहीं है परंतु इतनाही विचार है कि खलमेंसे तेल आप किसतरह निकालेंगे?” मुनशी चुन्नीलालनें जीमें संदेह करके कहा.

“इसकी चिंता नहीं, ऐसे कामोंके लिये लोग यह समय बहुत अच्छा समझते हैं”

“बहुत अच्छा! अबमें जाताहूं परंतु---” मुनशीचुन्नीलाल कहते, कहते रुकगया.

“परन्तु क्या? स्पष्ट कहो, मै जान्ताहूं कि तुह्मारे मनका संदेह अबतक नहीं गया. तुह्मारी हजार बार राज़ी हो तो तुम सफ़ाई करो नहीं तो न करो अभी कुछ नहीं बिगड़ा मेरा कौन्सा काम अटक रहाहै? तुम अपना नफ़ा नुकसान आप समझ सक्ते हो।”

“आप अप्रसन्न नहों, मुझको आपपर पूरा भरोसा है मै इस कठिन समय मैं केवल आपपर अपनें निस्तारका आधार समझताहूं मेरी लायकी, नालायकी मेरे कामोंमें आपको मालूम होजायगी परन्तु मेरी इतनीही बिनती है कि आपभी अब नाराज़ होके इन्हीं बातोंमें पड़ाया देकर इन्से सब तरह का काम लेसक्ते हैं परंतु इनपर एतबार करनेंसे दह फिर जाते हैं. बल्कि इसीके कारण आपके दगाके का संदेह इन्को आप-

+ वयोवृद्धास्तपोवृद्धा ज्ञानवृद्धा श्रुतेश्वराः ॥ ते सर्वे धनवृद्धस्य द्वारि तिष्ठन्ति किंकराः ॥

हुआ है परंतु अब मैं जातेही मिटादूंगा" मुनशीचुन्नीलालनें बात पलटकर कहा उठ कर जाने लगा.

"तुम किया चाहोगे तो सफ़ाई होनी कौन कठिन है? (वृन्द) प्रेरक ही ते होत रज सिद्ध निदान ॥ चढ़े धनुष हू ना चलै बिना चलाए बान ॥ १ सुजन बीच हुनको हरत कलह रस पूर ॥ करत देहरी दीप ज्यों घर आंगन तम दूर ॥ २" कह कर लाला ब्रजकिशोर ने चुन्नीलाल को रुखसत किया.

चुन्नीलाल के चित्त पर ब्रजकिशोर की कहन और हीरालाल की नौकरी से बड़ा हुआथा परन्तु अब तक ब्रजकिशोर की तरफ से उसका मन पूरा साफ़ न था. बातें ब्रजकिशोर के स्वभाव से इतनी उल्टी थीं कि ब्रजकिशोर के इतनें समझानें भी चुन्नीलाल का मन न भरा. वह सन्देह के झूले में झोटे खारहा था और बड़ा र करके उसें यह युक्ति सोची थी कि "कुछ दिन दोनों को दम में रक्खूं, ब्रजर को मदनमोहन की सफाई की उम्मेद पर ललचाता रहूं और इस काम की ाई दिखा, दिखा कर अपना उपकार जताता रहूं. मदनमोहन को अदालत के मों में ब्रजकिशोर से मदद लेनें की पट्टी पढाऊं पर बेपरवाई जतानें के बहानें से में परस्पर काम की बात खुल कर न होनें दूं जिस्में दोनों का मिलाप होता रहे चित्त को धैर्य मिलनें के लिये सफाई के आसार, शिष्टाचार की बातें दिन, दिन जांय परन्तु चित्त की सफाई न होनें पाए, और दोनों की कुंजी मेरे हाथ रहे."

ब्रजकिशोर चुन्नीलाल की मुखचर्या से उसके मन की धुकड़ पुकड़ पहचान्ता था ये उस्नें जातीबार हीरालाल के भेजनें की ताकीद करदी थी वह जान्ता था कि लाल बेरोज़गारी से तंग है वह अपनें स्वार्थ से चुन्नीलाल को सच्चो सफ़ाई के लिये करेगा और उसकी ज़िद के आगे चुन्नीलाल की कुछ न चलेगी. निदान ऐसाही ... हीरालालनें ब्रजकिशोर की सावधानी दिखाकर चुन्नीलाल को बनावट के र से अलग रक्खा, ब्रजकिशोर की प्रामाणिकता दिखाकर उसे ब्रजकिशोर से रखनेंके वास्तें पक्का किया, मदनमोहनके काम बिगड़नें की सूरत बताकर आगे ब्रजकिशोरका ठिकाना बनानें की सलाहदी और समझाकर कहा कि "एक ठिका बैठे हुए दस ठिकानें हाथ आसक्ते हैं जैसे एक दिया जलता हो तो उससे दस दिये क्ते हैं परंतु जब यह ठिकाना जाता रहैगा तो कहीं ठिकाना न लगेगा" अदालत दनमोहन पर नालिश होनेंसे चुन्नीलालके भेद खुलनें का भय दिखाया और अन्त जकिशोर से चुन्नीलालनें सच्ची सफाई न की तो हीरालालनें आप ब्रजकिशोरके होकर चुन्नीलाल की चोरी साबित करनें की धमकी दी और इनबातों से परवश र चुन्नीलाल को ब्रजकिशोरसे मनकी सफाई रखनेंके लिये दृढ प्रतिज्ञाकरनी पड़ी.

परन्तु आज ब्रजकिशोर की वह सफाई और सचाई कहां है? हरकिशोर का कहना इसमय क्या झूंट है? इसके आचरण से इसको धर्मात्मा कौन बता सक्ता है? और जब ऐसे वर्तल मनुष्य का अन्तमें यह भेद खुला तो संसार में धर्मात्मा किस्को कह सक्ते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह का वेग कौन रोक सक्ता है? परतुं ठेरो! जिस मनुष्य के ज़ाहिरी बरताव पर हम इतना धोका खागए कि सबेरे तक उस्को मदनमोहन का सच्चा मित्र समझते रहे हर जगह उस्की सावधानी, योग्यता, चित्त की सफाई, और धर्मप्रवृत्ति की बडाई करते रहे उस्के चित्त में और कितनी बातें गुप्त होंगी यह बात सिवाय परमेश्वर के और कौन जान सक्ता है? और निश्चय जानें बिना हमलोगों को पक्की राय लगानें का क्या अधिकार है?

प्रकरण २९

बात चीत.

सीख्यो धन धाम सब कामके सुधारिबेको सीख्यो अभिराम बाम राखत हज़ूरमें ॥
सीख्यो सराजाम गढकोटके गिराइबेको सीख्यो समसेर बाँधि काटि अरि ऊरमें ॥
सीख्यो कुल जत्र मंत्र तंत्रहूको बात सीख्यो पिंगल पुरान सीख बह्यौ जात कूरमें ॥
कहे रूपाराम सब सीखबो गयो निकाम एक बोलबो न सीख्यो सीख्यो गयो धूरमें ॥
शृंगार संग्रह

"आज तो मुझसे एक बडी भूल हुई" मुनशी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के पास पहुंचते ही कहा "मैं समझा था कि यह सब बखेड़ा लाला ब्रजकिशोरनें उठाया है परन्तु वह तो इस्से बिल्कुल अलग निकले यह सब करतूत तो हरकिशोर की थी. क्या आपनें लाला ब्रजकिशोर के नाम चिट्ठी भेज दी?"

"हां चिट्ठी तो मैं भेजचुका" मदनमोहननें जवाब दिया.

"यह बडी बुरी बात हुई. जब एक निरपराधी को अपराधी समझ कर दंड दिया जायगा तो उस्के चित्त को कितना दुःख होगा" मुनशी चुन्नीलालनें दया करके कहा.(!)

"फिर क्या करें? जो तीर हाथ से छुटचुका वह लौट कर नहीं आसक्ता" लाला मदनमोहननें जवाब दिया.

"निस्सन्देह नहीं आसक्ता परन्तु जहांतक होसके उस्का बदला देना चाहिये" मुनशी चुन्नीलाल कहनें लगा "कहते हैं कि महाराज दशरथनें धोके से श्रवणके तीर मारा परतु अपनी भूल जान्ते ही बडे पछतावेके साथ उस्से अपना अपराध क्षमा कराया उसे उठाकर उस्के माता पिता के पास पहुंचाया उन्को सब तरह धैर्य दिया और उन्का शाप प्रसन्नता से अपनें सिर चढा लिया"

ब्रजकिशोर की यह भूल हो या न हो परन्तु उस्नें पहले जो ढिटाई की है वह म नहीं है. गई बला को फिर घरमें बुलाना अच्छा नहीं मालूम होता जो आ सो हुआ चलो अब चुप होरहो " मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

इस्समय ब्रजकिशोर से मेल करना केवल उस्की प्रसन्नताके लिये नहीं है बल्कि अदालत में बहुत काम निकलनें की उम्मेद की जाती है " मुनशी चुन्नीलाल मोहन को स्वार्थ दिखाकर कहा.

कल तो तुमनें मुझसे कहा था कि उस्की विकालत अपनें लिये कुछ उपकारी सक्ती " मदनमोहननें याद दिवाई.

ह बात सुन्कर चुन्नीलाल एक बार ठिटका परंतु फिर तत्काल सम्हल कर बोला समय और था यह समय और है. मामूली मुकद्दमों का काम हम हरेक वकील क्ते थे परन्तु इस्समय तो ब्रजकिशोर के सिवाय हम किसी को अपना विश्वासी ना सक्ते "

यह तुम्हारी लायकी है परन्तु ब्रजकिशोर का दाव लगे तो वह तुमको घड़ी ता न रहनें दे " मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

में अपनें निज के सम्बन्ध का बिचार करके लाला साहब को कची सलाह सक्ता " चुन्नीलाल खरे बनें.

" अच्छा तो अब क्या करें? ब्रजकिशोर को दूसरी चिट्ठी लिख भेजें या यहां र उस्की ख़ातिर करदें?" निदान लाला मदनमोहननें चुन्नीलाल की राह मिलाकर कहा.

मेरे निकट तो आपको उस्के मकान पर चलना चाहिये और कोई कीमती चीज़ में देकर ऐसी प्रीति बढ़ानी चाहिये जिस्से उस्के मनमें पहली गांठ बिल्कुल न ौर आपके मुकद्दमों में रुचे मनसे पैरवी करें ऐसे अवसर पर उदारता से बड़ा निकलता है. सादीनें कहाहै "द्रब्य दीजिये बीर कों तासों दे वह सीस॥ प्राण गो सदा बिनपाये बखशीस॥" + मुनशी चुन्नीलाल नें कहा.

' लाला साहब को ऐसी क्या गरज पड़ी है जो ब्रजकिशोर के घर जायं और कल बेइज्जत करके निकाल दिया था आज उस्की खुशामद करते फिरें?" मास्टर याल बोले.

"असलमें अपनी भूलहै और अपनी भूलपर दूसरे को सताना बहुत अनुचित है" चुन्नीलाल संकेतसे शिंभूदयाल को धमकाकर कहने लगा "बैठनें उठनें, और जानें की साधारण बातोंपर अपनी प्रतिष्ठा, अप्रतिष्ठाका आधार समझना, संसारमें

+ ज़रबिदह मर्द सिपाहीरा तासर बिदिहद। वगरश जर नदिही सर ननिहद दरआलम॥

अपनी बराबर किसीको न गिन्ना, एक तरह का जंगली विचार है. इस्की निसबत सा दगी और मिलनसारी मे रहने को लोग अधिक पसंद करते हैं. लाला ब्रजकिशोर क छ ऐसे अप्रतिष्ठित नहीं हैं कि उन्के हां जानें से लाला साहब की स्वरूप हानि हो

"यह तो सचहै परंतु मैंनें उन्का दुष्ट स्वभाव समझकर इतनी बात कही थी" मा स्टर शिंभूदयाल चुन्नीलाल का संकेत समझकर बोले.

"ब्रजकिशोरके मकानपर जानेंमें मेरी कुछ हानि नहीं है परंतु इतनाही विचार है कि मेल्के बदले कहीं अधिक बिगाड़ नहोजाय " लाला मदनमोहननें कहा.

"जी नहीं, लाला ब्रजकिशोर ऐसे अनसमझ नहीं हैं मैं जानताहूं कि वह क्रोधसे आग होरहे होंगे तोभी आपके पहुचते ही पानी होजायेंगे क्योंकि गरमीमें धूपके सताए मनुष्य को छाया अधिक प्यारी होती है " मुनशी चुन्नीलाल नें कहा.

निदान सबकी सलाहसे मदनमोहन का ब्रजकिशोर हां जाना ठैर गया चुन्नीलालनें पहलेंसे खबर भेजदी. ब्रजकिशोर वह खबर सुन्कर आप आनें को तैयार होतेथे इतनें में चुन्नीलाल के साथ लाला मदनमोहन वहां जा पहुंचे ब्रजकिशोर नें बड़ी उमगसे इन्की आदर सत्कार किया.

इस छोटीसी बातसे मालूम होसक्ताहै कि लाला मदनमोहनकी तबियत पर चुन्नीलाल का कितना अधिकार था.

"आपनें क्यों तकलीफ की ? मैंतो आप आनेंको था "लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"हरकिशोरके धोकेमें आज आपके नाम एक चिट्ठी भूलसै भेजदी गईथी इसलीये लाला साहब चलाकर यह बात कहनें आएहै कि आप उस्का कुछ खयाल न करें " मुनशीचुन्नीलाल नें कहा.

"जो बात भूलसे होओर वह भूल अंगीकार करलीजाय तो फिर उसमें खयाल करनें की क्या बात है ? और इस छोटेसे कामके वास्ते लाला साहबको परिश्रम उठा कर यहां आनें की क्या जरुरत थी ? " लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"केवल इतनाही काम नथा मुझसे कलभी कुछ भूल होगई थी और मैं उस्का भी एवज दिया चाहता था" यह कहकर लाला मदनमोहननें एक बहुमूल्य वाचटचेन (जो थोड़े दिन पहले हमल्टन कंपनी के हांसे फर्मायशी बनकर आईथी) अपनें हाथसे ब्रज किशोरकी घड़ीमे लगादी.

"जो ! यहतो आप मुझको लज्जित करते हैं मेरा एवज तो मुझको आपके मुखसे यह बात सुनतेही मिलचुका. मुझको आपके कहनें का कभी कुछ रंजनहीं होता इसके सिवाय मुझे इस अवसर पर आपकी कुछ सेवा करनी चाहियेथी सो मैं उल्टा से कैसे लू ? जिस मामले मैं आप अपनी भूल बतातेहैं केवल आपहीकी भूल से बढ़कर मेरी भूल है और मैं उसके लिये ...

शोर कहनें लगे "मैं हरबातमें आपसें अपनी मर्जी मूजिब काम करानेके लिये आ- ह करताथा परंतु वह मेरी बड़ी भूल थी. वृन्दनें सच कहा है "सब को रसमें राखिये त लीजिये नाहिं ॥ विष निकस्यो अति मथनतें रत्नाकरहू मांहि ॥" मुझको विका- तके कारण बढ़ाकर बात करनेंकी आदत पड़गईहै और मैं कभी, कभी अपना मतलब झानेंके लिये हरेक बात इतनी बढ़ाकर कहता चला जाताहूं कि सुन्नें वाले उखता तेहैं. मुझको उस अवसरपर जितनी बातें याद आती हैं मैं सब कह डालताहूं परंतु न्ताहूं कि यह रीति बात चीतके नियमों सें विपरीतिहै और इन्का छोड़ना मुझप हैं बल्कि इन्हें छोड़नेंके लिये मैं कुछ, कुछ उद्योग भी कररहाहुं"

"क्या बातचीतके भी कुछ नियमहैं ?" लाला मदमोहननें आश्चर्य से पूछा-

"हां ! इस्को बुद्धीमानोंनें बहुत अच्छी तरह बरणन कियाहै" लाला ब्रजकिशो नें लगे "सुलभा नाम तपस्विनीनें राजा जनकसे वचनके यह लक्षण कहेहैं अ हत, संशयरहित, पूर्वापर अविरोध॥उचित, सरल, संक्षिप्त पुनि कहौंवचन परिशोध॥१॥ कठिन अक्षर रहित, घृणा, अमगल हीन ॥ सत्य, काम, धर्मार्थयुत शुद्धनियम ाधीन ॥ २ ॥ संभव कूट न अरुचिकर, सरस, युक्ति दरसाय ॥ निष्कारण अक्षर रहित तहू न लखाय ॥ ३ ॥ * "संसार मे देखाजाता है कि कितनेंही मनुष्यों को थोडीसी ली बातें याद होती हैं जिन्हें वह अदल बदलकर सदा सुनाया करते हैं. जिससे नेवाला थोडी देरमें उखता जाताहै बातचीत करनें की उत्तम रीति यह है कि मनुष्य नी बातको मौकेसे पूरी करके उस्पर अपना अपना, विचार प्रगट करनेंके लिये रोंको अवकाश दे और पीछेसे कोई नई चर्चा छेड़े. और किसी विषयमें अपना ार प्रगट करे तो उस्का कारण भी साथही समझाता जाय, कोई बात सुनी सुनाई ो वहभी स्पष्ट कहदे हँसीकी बातों में भी सचाई और गंभीरता को न छोड़े, कोई इतनी दूरतक खेंचकर न लेजाय जिस्सें सुन्नें वालों को थकान मालूम हो धर्म, , और प्रबंधकी बातोंमें दिल्लगी न करे. दूसरेके मर्मकी बातोंको दिल्लगीमें ज़बान न लाय. उचित अवसर पर वाजबी राहसै पूछ पूछकर साधारण बातों का जान कुछ दूषित नहीं है परन्तु टेढ़े और निरर्थक प्रश्न करके लोगोंको तंग करना वा बकवाद करके औरोंके प्राण खाजाना, बहुत बुरी आदतहै. बातचीत करनेंकी फ़ यह है कि सबका स्वभाव पहिचानकर इस ढबसे बात कहै जिस्में सब सुनें प्रसन्न रहैं. जची हुई बात कहना मधुर भाषणसे बहुत बढ़करहै खासकर जहां

उपेतार्थ मभिन्नार्थं न्यायवृत्तं न चाधिकं ॥ नाश्लक्ष्णं नचसंदिग्धं वक्ष्यामि परमंततः १ ॥ र्दक्षर संयुक्तं पराङ्मुख सुखंनच ॥ नानृतं नत्रिवर्गेण विरुद्धं नाप्यसंस्कृतम् २ ॥ ; कष्टशब्दंवा विक्रमाभिहितंनच ॥ नशेषमनुकल्पेन निष्कारणमहेतुकम् ३ ॥

मामलेकी बात करनी हो. शब्द विन्यासके बदले सोच बिचार कर बातचीत करना सदैव अच्छा समझा जाताहै और सवाल जवाब बिना मेरी तरह लगातार बात कहते चलेजाना कहनें वाले की सुस्ती और अयोग्यता प्रगट करताहै. इसी तरह असल मतलब पर आनेंके लिये बहुतसी भूमिकाओंसे सुन्नें वालेका जी घबरा जाता है परंतु थोड़ी सी भूमिका बिना भी बातका रंग नहीं जमता इसलिये अब मैं बहुतसी भूमिकाओंके बदले आपसे प्रयोजन मात्र कहताहूं कि आप गई बीती बातोंका कुछ ख़याल न करें?"

"जो कुछभी ख़याल होता तो लाला साहब इसतरह उठकर क्या चले आते? अब तो सबका आधार आपकी कारगुज़ारी (अर्थात्‌कार्य कुशलता) परहै" मुन्शीचुन्नीलाल नें कहा.

"मेरे ऐसे भाग्य कहां?" लाला ब्रजकिशोर प्रेमबिबस होकर बोले.

"देखो हरकिशोरनें कैसा नीचपन कियाहै!" लाला मदनमोहननें आंसूभरकर कहा.

"इस्से बढ़कर और क्या नीचपन होगा?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैनें कल उस्के लिये आपको समझायाथा इस्से मैं बहुत लज्जित हूं मुझको उससमय तक उस्के यह गुन मालूम नथे अब ये अफ़वा किसी तरह झूंट होजाय तो मैं उसे मज़ा दिखाऊं"

"निरसंदेह आपकी तरफ़से ऐसीही उम्मेदहै ऐसे समयमें आप साथ नदोगे तो और कौन देगा?" लाला मदनमोहन नें करुणासे कहा

"इससमय सबसे पहले अदालत की जवाब दिहीका बंदोबस्त होना चाहिये क्योंकि मुकद्दमों की तारीखें बहुत पास, पास लगी हैं" मुनशीचुन्नीलालनें कहा.

"अच्छा! आप अपना कागज़ तैयार करानेंके वास्ते तीन चार गुमाश्ते तत्काल बढ़ादें और अदालत की काररवाईके वास्ते मेरे नाम एक मुख्त्यार नामा लिखते जायँ बस फिरमें समझ लूंगा" लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

निदान लाला मदनमोहन ब्रजकिशोरके नाम मुख्त्यार नामा लिखकर अपनें मकान को रवानें हुए.

प्रकरण ३०.

नैराश्य (नाउम्मेदी).

फलहीन महीरुह कों खगवृन्द तजैं बन कों मृग भस्म भए।
मकरन्द पिए अरविन्द मिलिन्द तजैं सर सारस सूख गए॥
धनहीन मनुष्य तजैं गणिका नृपकों सठ सेवक राज हए।

ार वास्ते लाला मालूम में हमारी तकरार होगई उन्होंनें हमारा कहा नहं
अब तुम भी कहीं हमको धोका न देना" मुनशी चुन्नीलाल नें कहा.
जतो दोनोंमें बड़ी घुट, घुट कर बातें होरही है" लाला मदनमोहन नें आतेही कह
री सलाह कभी पूरी नहीं होती नजानें कौनसे किले लेनेका विचार कियाकरते हो!
ी हुजूर ! कुछ नहीं, मिस्टर रसल के मामले की चर्चा थी उस्की जायदाद
लाम की तारीख में केवल दो दिन बाकी हैं परन्तु अब तक रुपे का कुछ बं-
नहीं हुआ" मुनशी चुन्नीलाल नें तत्काल बात पलट कर कहा.
"इस बिना विचारी आफत का हाल किसको मालूम था ? तुम उन्हें लिख दो कि
तरह होसके थोड़े दिन की मुहलत लेलें. हम उसके भीतर, भीतर रुपे का प्रबन्ध
कर देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा.
मुहलत पहले कई बार लेचुके हैं इसी अब मिलनी कठिन है परन्तु इससमय कुछ
गिरवी रख कर रुपे का प्रबन्ध कर दिया जाय तो उस्कीजायदाद बची रहै
धीरे, धीरे रुपया चुका कर गहना भी छुड़ा लिया जाय" मास्टर शिंभूदयाल
ते जाते सिप्पा लगानें की युक्ति की. उस्का मनोर्थ था कि यह रकम हाथ
ाय तो किसी लेनदार को देकर भली भांति लाभ उठायें. अथवा मदनमोहन
योग्य न रहे तो सबकी सब रकम आप ही मंसाद कर जायें. अथवा किसी के
गिरवी भी धरें तो लेनदारों को कुर्की करानें के लिए उस्का पता बता कर उनसे
भांति हाथ रंगें. अथवा माल अपनें नीचे दबे पीछे और किसी युक्ति से भर
ायदे की सूरत निकालें. परन्तु मदनमोहन के सौभाग्य से इससमय लाला व्रज-
र आपहुंचे इस लिये उस्की कुछ दाल न गली.

" क्याहै ? किस काम के लिये गहना चाहते हो ?" लाला व्रजकिशोरनें शिंभू-
ल की उड़टतीसी बात सुनीथी इस्पर आतेही पूछा.

" जो कुछ नहीं, यहतो मिस्टर रसलकी चर्चा थी" मुनशीचुन्नीलालनें बात उड़ा
वास्ते गोल कहा.

"उस्का क्या देनलेन है ? उस्का मामला अबतक अदालतमें तो नहीं पहुंचा ?"
व्रजकिशोर पुछनें लगे.

"वह एक नीलका सौदागरहै और उस्पर बीस, पच्चीस हजाररूपे अपनें लेनें हैं
नय उस्की नीलकी कोठी और कुछ बिस्वे बिस्वान्सी दूसरे की डिक्री में नीलामपर
और नीलाम की तारीखमें केवल दो दिन बाकी हैं नीलाम हुए पीछे अपनें रुपे
की कोई सूरत नहीं मालूम होती इसलिये ये लोग कहते थे कि गहना गिरवी
कर उस्का कर्ज चुकादो परंतु इतना बंदोबस्त तो इससमय किसी तरह नहीं हो-
" लाला मदनमोहननें लजाते, लजाते कहा.

"अभी आपको अपनें कर्जका प्रबंध करनाहै और यह मामला केवल मुहलत लेनें से कुछ दिन टल सक्ता है " लाला ब्रजकिशोरनें अपनें मनका संदेह छिपाकर कहा.

"मैं जान्ताहूं कि मेरा कर्ज चुकानेंके लिये तो मेरे मित्रों की तरफसे आजकलमें बहुत रुपया आ पहुंचेगा" लाला मदनमोहननें अपनी समझ मूजिब जवाब दिया.

"और मुहलत कईबार लेलीगई है इस्सें अब मिलनी कठिनहै " मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"मैं खयालकरताहूं कि अदालत के बिश्वास योग्य कारण बता दिया जायगा तो मुहलत अवश्य मिलजायगी " लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"और जो न मिली ? " शिंभूदयाल हुज्जत करनें लगा.

"तो मैं अपनी जामिनी देकर जायदाद नीलाम नहोनें दूंगा" ब्रजकिशोरनें जवाब दिया. और अब शिंभूदयाल को बोलनें की कोई जगह नरही.

"कल कई मुकद्दमोंकी तारीखें लगरही हैं और अबतक मैं उन्के हालसे कुछ भेदी नहीं हूं तुमको अवकाशहो तो लाला साहबसे आज्ञा लेकर थोडी देरके लिये मेरे साथ चलो " लाला ब्रजकिशोरनें मुन्शीचुन्नीलालसे कहा.

"हां, हां, तुम साथ जाकर सब बातें अच्छी तरह समझ आओ " लाला मदनमोहननें मुन्शीचुन्नीलाल को हुक्म दिया.

" आप इस्समय किसी काम के लिये किसीको अपना गहना नदें ऐसे अवसरपर ऐसी बातों में तरह, तरह का डर रहता है " लाला ब्रजकिशोरनें जाती बार मदनमोहनसे सकेत में कहा और मुन्शीचुन्नीलाल को साथ लेकर रुखसत हुए.

आज लाला मदनमोहन की सभामें वह शोभा नथी केवल चुन्नीलाल शिंभूदयाल आदि दो चार आदमी दृष्टि आते थे परंतु उन्के मनभी बुझे हुएथे. हँसी चुहलकी बातें किसीके मुखसे नहीं सुनाई देतीथीं खासकर ब्रजकिशोर और चुन्नीलालके गए पीछे तो और भी सुस्ती छागई मकान सुन्सान मालूम होनें लगा. शिंभूदयाल ऊपरके मनसे हँसी चुहलकी कुछ, कुछ बातें बनाताथा परंतु उन्में मोमके फूलकी तरह कुछ रस नथा. निदान थोड़ीदेर इधर उधर की बातें बनाकर सब अपनें, अपनें रस्ते लगे और लाला मदनमोहन भी मुर्झाए चित्तसे पलंगपर जालेटे.

प्रकरण ३१

चालाक की चूक

शत्रुदिखाय दुख दीजिये शत्रुसौं परिपेकाहि
जो गुर दीयेही मरै क्यों विषदीजे ताहि।

वृन्द

"लाला मदनमोहन का लेनदेन किस्तरहपर है ?" ब्रजकिशोरनें मकान पर पहुंच‌ते ही चुन्नीलालसे पूछा.

"मिगवार हाल तो कागज़ तैयार होनें पर मालूम होगा परंतु अंदाज़ यहहै कि पचास हजारके लगभगतो मिस्टर ब्राइटके देनें होंगे, पंदरह वीस हजार आगाहसनजान महम्मदजान वगैरे खेरीज सौदागरोंके देनें होंगे, दस बारह हजार कलकत्ते, मुंबई के सौदागरोंके देनें होंगे, पचास हजारमैं निहालचंद, हरकिशोर वगैरे बाज़ारके दुकानदार और दिसावरोंके आढ़तिये आगए मुनशीचुन्नीलालनें जवाब दिया.

"और लेनें किस, किस पर हैं ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"बीस पचीस हजार तो मिस्टर रसलकी तरफ़ बाकी होंगे, दस बारह हजार आगरे के एक जौहरीमें जवाहरातकी बिक्रीके लेनेंहैं, दस पंदरह हजार यहांके बाज़ार वालों में और दिसावरों के आढतियोंमें लेनें होंगे पांच, सात हजार खेरीज लोगोंमें और नौकरोंमें बाकी होंगे आठ दस हजार का व्यापार सीगेका माल मौजूदहै, पांच हजार रुपे अलीपुर रोडके ठेके बाबत सरकारसे मिलनें वाले हैं और रहनेंका मकान, बाग, सवारी, सरसामान वगैरे सब इन्से अलग है" मुनशीचुन्नीलालनें जवाब दिया.

"इसतरह अटकल पच्चु हिसाब बतानेंसे कुछ काम नहीं चलता जबतक लेनें देनें का ठीक हाल मालूम नहो फैस्ला किसतरह कियाजाय ? तुम सेवेरे लाला जवारलाल को मेरे पास भेजदेनो मैं उस्सै सब हाल पूछ लूंगा. ऐसे अवसरपर असावधानी रखनें से देना सिरपर बना रहताहै और लेना मिट्टी होजाताहै." ब्रजकिशोरनें कहा.

"कागज़ बहुत दिनोका चढरहाहै और बहुतसे जमा खर्च होनें बाकी हैं इसलिये कागज़से कुछ नहीं मालूम होसक्ता" मुनशीचुन्नीलालनें बात उडानेंकी तजवीज़ की.

"कुछ हर्ज नहीं, मैं लोगोंसैं जिरहके सवाल करके अपना मतलब निकाल लूंगा मुझको अदालतमैं हरतरहके मनुष्यों से नित्य काम पड़ताहै" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुमनें आज सवेरे मुझसै सफ़ाई करनेंकी बात कीथी परंतु अभी सै उस्मै अंतर आनें लगा मैं वहां पहूंचा उस्समय तुम लोग लाला साहबसै गहना लेनें की तजवीज कर रहेथे परंतु मेरे पहुंचतेही वह बात उड़ानें लगे मुझको कुछका कुछ समझानें लगे सो मै ऐसा अनसमझ नहीं हूं यदि मेरा रहना तुमको असह्य है

मैं फ़र्क आताहै, मेरे मेलकरानें का तुमको पछतावा होताहै तोमैं तुह्मारी मारफत मेल करके तुह्मारा नुक्सान हरगिज़ नहीं किया चाहता, लाला साहबसे मेल नहीं रखना चाहता तुम अपना बंदोबस्त आप करलेना ''

"आप वृथा खेद करते हैं. मैंनें आपसे छिपकर कोनसा काम किया? आपके मेल से मेरी अप्रसन्नता कैसे मालूम हुई? आप पहुंचे जब निस्संदेह शिभूदयालनें मिस्टर रसल के लिये गहनेंकी चर्चा छेड़ीथी परतु वह कुछ पक्की बात नथी और आपकी सलाह बिना किसी तरह पूरी नहीं पड़सक्तीथी आपसे पहले बात करनेंका समय नहीं मिला था इसी लिये आपके साम्नें बात करनें में इतना संकोच हुआथा परंतु आपको हमारी तरफ़से अबतक इतना संदेह बनरहाहै तो आप लाला साहबके छोड़नेंका बिचार क्यों करते हैं आपके लिये हमही अपनी आवाजाई बंद करदेंगे '' मुनूशीचुन्नीलालनें कहा.

सादी नें सच कहाहै "वृद्धा बेश्या तपस्विनी नहोय तो और क्या करे? उतरा सेनक किसीका क्या बिगाडकर सक्ताहै कि साधु नबनें!''* लाला ब्रजकिशोर मुस्कराकर कहनें लगे "मैं किसी काममें किसीका उपकार नहीं सहा चाहता यदि कोई मुझपर थोड़ासा उपकार करे तो मैं उससे अधिक करनेंकी इच्छा रखताहूं फिर मुझको इस थोथे काम में किसीका उपकार उठानें की क्या ज़रूरतहै? जो तुम महरबानी करके मेरा पूरा महन्ताना मुझको दिवादोगे तो मैं इसी में तुह्मारी बड़ी सहायता समझूंगा और प्रसन्नतासे तुह्मारा कमीशन तुह्मारो नज़र करूंगा'' लाला ब्रजकिशोर इस बातचीतमें बैठेहै अपनी सच्चा सावधानी के साथ एक दाव खेलरहेथे उन्नें इस युक्तिसे बात चीत की थी जिस्से उन्का कुछ स्वार्थ न मालूम पड़े और चुन्नीलाल आपसे आप मदनमोहन को छोड़ जानेंके लिये तैयार होजाय, पास रहनेंमें अपनी हानि, और छोड़ जानेंमें अपना फ़ायदा समझे बल्कि जाते, जाते अपनें फ़ायदेके लालचसे ब्रजकिशोर का महन्तानाभी दिवाता जाय.

"आप अपना महन्ताना भलें औरलाला मदनमोहन केहांका कुल अख़्त्यार भलें हमको तो हरभांति आपकी प्रसन्नता करनीहै हमनें तो आपकी शरण लीहै हमारा तो यही निवेदन है कि इससमय आप हमारी इज्जत बचालें '' मुनूशीचुन्नीलालनें हार मानकर कहा. वह भीतरसे चाहे जैसा पापीथा परंतु प्रगट में अपनी इज्जत खोनें में बहुत डरताथा संसारमें बड़ा भला मानस बना फिरताथा और इसी भलमनसात के नीचे उसनें अपनें सब पाप छिपा रक्खेथे.

"इन बातोंसे इज्जतका क्या संबंधहै! मुझसे होसकेगा जहांतक मैं तुह्मारी

* क़हबएपीर अज़ नाबकारी चे कुनद कि तोबा नकुद? व शहनएमाज़ूल अज़ मर्दम-आज़ारी

तपर धब्बा न आनें दूंगा परंतु इस कठिन समयमें तुम मदनमोहनके छोडनें का
ार करते हो इस्में मुझको तुम्हारी भूल मालूम होती है ऐसा नहोकि पीछे मै
हें पछताना पडे. चारों तरफ दृष्टि रखकर बुद्धिमान मनुष्य काम किया करते हैं"
ा ब्रज किशोर नें युक्तिसे कहा

"तो क्या इससमय आपकी रायमें लाला मदनमोहनके पाससे हमारा अलग होना
ुचितहै ?" मुनूशीचुन्नीलालनें ब्रजकिशोर पर बोझ डालकर पूछा

"मैं साफ कुछ नहीं कह सक्ता क्योंकि औरोंकी निस्बत वह अपना हानि लाभ
प अधिक समझ सक्ते हैं" लाला ब्रजकिशोरनें भरम में कहा.

"तो खैर ! मेरी तुच्छ बुद्धि में इससमय हमारी निस्बत आप लाला मदनमोहन की
धिक सहायता करसक्तेहैं और इसी में हमारी भी भलाई है" मुनूशीचुनीलाल बोले.

"तुमनें इनदिनों में नवल और जुगल (ब्रजकिशोरके छोटे भाई) कीभी परीक्षा
या नहीं ! तुम गए तब वह बहुत छोटे थे परंतु अब कुछ, कुछ होशियार होते
े हैं" लाला ब्रजकिशोरनें पहली बात बदलकर घरबिधकी चर्चा छेडी.

"मेंनें आज उन्को नहीं देखा परंतु मुझको उन्की तरफसे भली भांत बिश्वासहै
ा आपकी शिक्षा पाए पीछे किसी तरह की कसर रहसक्तीहै !" मुनूशीचुन्नीला-
ं कहा.

"भाई ! तुमतो फिर खुशामदकी बातें करनें लगे यह रहनेंदो घरमें खुशामदकी क्या
हरतहै ?" लाला ब्रजकिशोरनें नरमओलंभादिया और चुन्नीलाल उनसेरुखसतहो
र अपनें घरगया

प्रकरण ३२.

अदालत

काम परेही जानिये जो नर जैसो होय ॥
बिन ताये खोटो खरो गहनों लखे न कोय ॥

बृन्द

अदालतमें हाकिम कुर्सीपर बैठे इजलास कर रहेहैं. सब अहलकार अपनी, अपनी
गह बैठे हैं निहालचंदमोदी का मुकद्दमा होरहा है उस्की तरफ़से लतीफ़हुसेन वकील.
. मदनमोहन की तरफसे लाला ब्रजकिशोर जवाब दिही करते हैं. ब्रजकिशोरनें
चपनमें मदनमोहनकहां बैठकर हिंदी पढ़ी थी इसवास्ते वह सराफी कागजको
भांति अच्छी तरह जान्ताथा और उस्में मुकद्दमा छिडनें से पहले मामूली फ़ीस

देकर निहालचंदके बही खाते अच्छी तरह देख लियेथे. इस मुकद्दमें में कानूनी बहस कुछ नथी केवल लेनदेन का मामलाथा.

ब्रजकिशोरनें निहालचंदको गवाह ठैराकर उस्से जिरहके सवाल पूछनें शुरू किये " तुह्मारा लेनदेन रुक्के पर्चोंसे है ? " जबाव " नहीं "

" तो तुम किसतरह लेनदेन रखते हो ? जo " नोकरों की मारफत "

" तुमको कैसे मालूम होताहै कि यह आदमी लाला मदनमोहन की तरफ़से माल लेनें आयाहै और उन्हींके हां लेजायगा ! "

" हम यह नहीं जानसक्ते परंतु लाला साहब का हुक्म है कि वह लोग जो, जो सामान मांगें तत्काल देदिया करो "

" अच्छा ? वह हुक्म दिखाओ ! जo " वह हुक्म लिखकर नहीं दिया था ज़बानी है "

"अच्छा ! वह हुक्म किस्के आगे दियाथा ?"-"किस किसके लिये दियाथा !"-"कितनें दिन हुए ? "-"कौन्सा समय था ? " कौन्सी जगह थी ? "-"क्या कहा था ?"

" बहुत दिनकी बातहै मुझको अच्छी तरह याद नहीं "

" अच्छा ? जितनी बात यादहो वही बतलाओ ? " जo " मैं इससमय कुछ नहीं कहसक्ता "

तो क्या किसीसे पूछकर कहोगे ? " जo " जी नहीं याद करके कहूंगा "

" अच्छा ! तुह्मारा हिसाब होकर बीचमें बाक़ी निकल चुकी है ? " जo " नहीं "

तो तुमनें साल्की साल बाक़ी निकालकर ब्याजपर ब्याज़ कैसे लगा लिया ? "

" साहूकारेका दस्तूर यही है,"

" साहूकारेमें तो साल्की साल हिसाब होकर ब्याज लगाया जाताहै फिर तुमनें हिसाब क्यों नहीं किया ? " जo " अवकाश नहीं मिला "

" तुह्मारी बहियोंमें उदरत खातेसै क्या मतलब है !"

" लाला मदनमोहनके लेनदेन सिवाय आप और किसी खातेका सवाल न करें " निहालचंदके वकीलनें कहा.

" मुझको इस खातेसै लाला मदनमोहन के लेनदेनका विशेष संबंध मालूम होता है इसी से मैंनें यह सवाल कियाहै " लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया. और परिणाम में हाकिम के हुक्म से यह सवाल पूछा गया.

" जो रक़में बही खाते में हिसाब पक्का करके लिखी जानेंके लायक होती है और तत्काल उन्का हिसाब पक्का नहीं होसक्ता वह रक़में हिस्सेवार्से सफ़ाई होनें तक इस खाते में रहतीहै और सफ़ाई होनें पर जहांकी तहां चली जातीहैं " निहालचंदनें जाब दिया.

" अच्छा ! तुह्मारे हां जिन मितियोंमें बहुत करके लाला मदनमोहनके नाम बड़ी, बड़ी रकमें लिखी गई हैं उनहीं मितियों में उदरत खाते कुछ, कुछ रकम जमा की गईहै और फिर कुछ दिन पीछे उदरत खाते नाम लिखकर वह रकमें लोगोंको हाथों हाथ देदी गई हैं या उन्के खाते में जमा करदी गई हैं इस्का क्या सबबहै ? " लाला ब्रजकिशोरनें पूछा.

" मैं पहले कह चुकाहूं कि जिन् लोगों की रकमें अलल हिसाब आती जाती हैं या जिन्का लेनदेन थोड़े दिनके वास्ते हुआ करताहै उन्की रकम कुछ दिनके लिये इस तरह पर उदरत खाते में रहती है परंतु मैं किसीखास रकमका हाल बही देखे बिना नहीं बता सक्ता " निहालचंदनें जवाब दिया.

" और यह भी जरूरहै कि जिस दिन लाला मदनमोहन का काम पड़े उसदिनकी यह कारखाई अयोग्य समझी जाय ? " निहालचंदके वकीलनें कहा.

" तो ये क्या जरूरहै कि जिस मितीमें लाला मदनमोहन के नाम बड़ी रकम लिख जाय उसीमितीमें कुछ रकम उदरत खाते जमा हो और थोड़े दिन पीछे वह रक जैसीकी तैसी लोगों को बांट दीजाय ? " लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

" देखोजी ! इस मुकद्दमेमें किसी तरह का फरेब साबित होगा तो हम उसे तत्का ल फौजदारी सुपुर्द करदेंगे " हाकिमनें संदेह करके कहा.

" हजूर ! हमको एक दिनकी मुहलत मिलजाय हम इन् सब बातोंके लिये लाल ब्रजकिशोर साहबकी दिलजमई अच्छी तरह करदेंगे " निहालचंदके वकीलनें हाकिम से अर्जकी और ब्रजकिशोरनें इस बातको खुशीसे मंजूर किया.

उदरत खाते से लाला मदनमोहनके नोकरों की कमीशन वगैरे का हाल खुलताथा जहां रकम जमाथी किस्से आई ? किस बाबत आई इस्का कुछ पता नथा परंतु जहां रकम दीगई मदनमोहनके नोकरोंका अलग, अलग नाम लिखाथा और हिसाब लगानें से उस्का भेदभाव अच्छी तरह मिलसक्ताथा. जिन नोकरों केखाते थे उन्के खातोंमे यह रकमें जमा हुईथीं और कानूनके अनुसार ऐसे मामलोंमें रिश्वत लेनें, देनें वाले दोनों अपराधीथे परंतु ब्रजकिशोरके मनमें इन्के फंसानें की इच्छा नथी वह केवल नमूना दिखाकर लेनदारों की हिम्मत घटाया चाहताथा. उसनें ऐसी लपेटसे सवाल कियेथे कि हाकिम को भारी नलगें और लेनदारों के चित्तमें गडजांय सो ब्रजकिशोरकी इतनीही पकडसे बहुतसे लेनदारोंके छके छूट गए.

कितनेंही छिपे लुच्चे मदनमोहन की बेखबरी और कागजका अंधेर, लेनदारोंका हुल्लड़, मुकद्दमोंके झटपट होजाने की उम्मेद,मदनमोहनके नोकरोंकी स्वार्थपरता के भ

निकल गई. मिस्टर ब्राइट की कुर्की में सब माल असबाबके कुर्क होजानें से लेनदारोंको अपनी रकमके घटनेका संदेह तो पहलेही होगयाथा. अबकिसी तरह की लपट आजानें पर अपनी इज्जत खो बैठनेका डर मालूम होनें लगा " नमाजको गएथे रोजे गले पड़ें" सिवायमें यह चर्चा सुनाईदी कि मदनमोहन को और, और दिसावरोंका बहुत देनाहै यदि सबमाल जायदाद नीलाम होकर हिस्से रसदी सब लेनदारोंको दिया गया तो भी बहुत थोड़ी रकम पल्ले पड़ेगी ब्रजकिशोरसे लोग इस्का हाल पूछतेथे तब वह अजान बनकर अलग होजाताथा इस्से- लोगोंकी और भी छाती बैठी जातीथी जिस्तरह पलभरमें मदनमोहनके दिवाले की चर्चा चारो तरफ फेलगईथी इसी तरह अब यह सब बातें अफ़वाकी जहरी हवामें मिलकर चारों तरफ उड़नें लगीं.

मोदीके मुकद्दमें सिवाय आज कोईपेचदार मुकद्दमा अदालतमें नहुआ जिन्के मुकद्दमोंमें आजकी तारीख लगीथी उन्नें भी निहालचंदके मुकद्दमें का परिणाम देखनेके लियें अपनें मुकद्दमें एक, एक दो, दो दिन आगे बढ़वा दिये.

जब इस कामसे अवकाश मिला तो लाला ब्रजकिशोरनें अदालतसे अर्ज करके मिस्टर रसलकी जायदाद नीलाम होनेंकी तारीख आगे बढ़वादी परंतु यह बात ऐसी सीधी थी कि इस्के लिये कुछ विशेष परिश्रम न उठाना पड़ा.

लाला ब्रजकिशोर की इस्समय की चाल देखकर बड़ा आश्चर्य होताहै. सब लेनदार चारोंतरफसे निराश होकर उस्के पास आते हैं परंतु वह आप उन्से अधिक निराश मालूम होताहै वह उन्के साथ बड़ी बेपरवाई से बातचीत करताहै उन्को हर तरह के चढ़ाव उतार दिखताहै जब वह लोग अपना पीछा छुटानें के लिये उस्से बहुत आधीनता करते हैं तो वह बड़ी बेपरवाई से उन्के साथ लगाव की बात करताहै परन्तु जब वह किसी बात पर जमते हैं तो वह आप कच्चा पक्का होनें लगताहै उल्टी सीधी बात करके अपनी बातसे निकला चाहताहै और जब कोई बात मंजूर करताहै तो बड़ी आनाकानी से जबान निकलनेंके कारण उस्को यह बोझ उठाना पड़ताहो ऐसा रूप दिखाई देताहै. कचहरी में बीसों बार उस्नें घंटे डेढ़ घंटे मिस्टर ब्राइटसे एकांतमें बातचीत की! अदालतके कामोंमें उस्का वैसाही उद्योग दिखाई देताहै परंतु दरअसल वह किसी अत्यंत कठिन काममें लगरहाहो ऐसा ढंग मालूम होता है उस्के पहले सब काम नियमानुसार दिखाई देतेथे परन्तु इस्समय कुछ क्रम नहीं रहा इस्समय उस्के सब काम परस्पर विपरीतसे दिखाई देते हैं इसलिये उस्का निजभाव पहचानना बहुत कठिन है परंतु हम केवल इतनी बातपर संतोष बांधते हैं कि जब उस्की काररवाईका परिणाम प्रगट होजायगा तो वह अपना भाव सर्व साधारण की दृष्टिसे कैसे छुपा[illegible]

प्रकरण ३३.

मित्र परीक्षा.

धन न भयेहू मित्रकी सज्जन करत सहाय ॥
मित्र भाव जाचे बिना कैसे जान्यो जाय ॥ *

विदुरप्रजागरे

आजतो लाला ब्रजकिशोर की बातोंमें लाला मदनमोहन की बातही भूलगएथे। लाला मदनमोहन के मकानपर वैसीही सुस्ती छारहीहै केवल मास्टर शिभूदयाल और मुनशीचुन्नीलाल आदि तीन, चार, आदमी दिखाई देते हैं परंतु उन्का भी होना न होना एकसाहै वह भी अपनें निकासका रस्ता ढूंढरहेहैं हम अबतक लाला मदनमोहनके बाकी मुसाहबोंकी पहचान करानेंके लिये अवकाश देखरहेथे इतनेमें उन्नें मदनमोहन का साथ छोड़कर अपनी पहिचान आप बतादी. हरगोविंद और पुरुषोत्तमदास ने भी कलसे सूरत नहीं दिखाई थी. बाबू बैजनाथ को बुलानेंके लिये आदमी गया था परंतु उन्हें आनें का अवकाश न मिला- लाला हरदयाल साहबके नाम कुछ दिन के लिये थोडे रुपे हाथउधार देनें को लिखा गयाथा परंतु उन्का भी जवाब नहीं आया लाला मदनमोहन का ध्यान सबसे अधिक डाककी तरफ़ लगरहाथा उन्को बिश्वास था कि मित्रों की तरफ़से अवश्य सहायता मिलेगी बल्कि कोई, कोई तो तारकी मारफ़त रुपे भिजवायगे.

" क्या करें? बुद्धि काम नहीं करती " मास्टर शिभूदयालनें समय देखकर अपनें मतलब की बात छेड़ी " इन्हीं दिनोंमें यहां काम है और इन्हीं दिनों मदरसे में लड़कोंका इमतहान है कल मुझको वहां पहुंचनेंमें पाव घंटेकी देर होगई थी इस्पर हेडमास्टर सिर होगए. वहां न जाय तो रोजगार जाताहै यहां न रहें तो मन नहीं मान्ता (मदनमोहनसे) आप आज्ञादें जैसा किया जाय? "

" खैर? यहांका तो होना होगा सो हो रहैगा तुम आपना रोजगार न खोओ " लाला मदनमोहननें रुखाई से जवाब दिया.

"क्या करूं? लाचारहूं " मास्टर शिभूदयाल बोले "यहां आए बिना तो मन नही मानेंगा परन्तु हां कुछ कम आना होगा आठ पहर की हाजरी न सध सकेगी मेरी देह मदरसेमें रहेगी परंतु मेरा मन यहां लगा रहैगा "

"बस आपकी इतनीही महरबानी बहुत है " लाला मदनमोहननें ज़ोर देकर कहा. निदान मास्टर शिभूदयाल मदरसे जानेंका समय बताकर रुखसत हुए.

* अर्थच्छेदेष मित्राणि सन्निवासतिचा धने ॥ नानर्थ यन् प्रजानाति मित्राणां सारफल्गुता ॥

"आज निहालचंदका मुकद्दमा है देखें ब्रजकिशोर कैसी पैरवी करतेहैं " मुन्शी चुन्नीलालनें कहा " कल आपके पाकटचेन देनेंसे उन्का मन बहुत बढ़गया परंतु वह उसे अपनें महन्तानें मे न समझे- मेरे निकट अब उन्का महन्ताना तत्काल भेज देना चाहिये जिस्से उन्को यह संदेह न रहे और मन लगाकर अपनें मुकद्दमों में अच्छी जवाबदिही करें. मैं इन्के पास रहकर देख चुकाहूं कि यह अपनें मुख से तो कुछ नहीं कहते परन्तु इन्के साथ जो जितना उपकार करताहै यह उस्से बढ़कर उस्का काम कर देतेहैं"

"अच्छा ! तो आज शाम को कोई कीमती चीज़ इन्के महन्तानें मैं देदेंगे और काम अच्छा दिया तो शुक्राना जुदा देंगे " लाला मदनमोहननें कहा.

इतनें मैं डाक आई उसमैं एक रजिस्ट्री चिट्ठी मेरठसे एक मित्रकीआई थी जिस्में दस हज़ार की दर्शनी हूंडी निकली और यह लिखाथा कि "जितनें रुपे चाहियें और मंगा लेना. आपका घर है" लाला मदनमोहन यह चिट्ठी देखतेही उछल पड़े और अपनें मित्रों की बड़ाई करनें लगे. हूंडी तात्काल सकारनें को भेजदी परंतु जिस्के नाम हुंडी थी उस्नें यह कहकर हुंडी सिकार नेंसे इन्कार किया कि जिस साहूकार के हांसे लाला मदनमोहनके पास हुंडी आई है उसीनें तार देकर मुझको हुंडी सिकारनें की मनाई की है इस्से सब भेद खुल गया. असल बात यह थी कि जिससमय मदनमोहन की चिट्ठी उस्के पास पहुंची उस्को मदनमोहनके बिगड़ने का यथार्थ संदेह नथा इसलिये मदनमोहन को चिट्ठी पहुंचतेही उस्नें सच्ची प्रीति दिखानेंके लिये दस हज़ार की हुंडी खामदी परंतु पीछेसे और लोगोंकी जबानी मदनमोहन के बिगड़नें का हाल सुन्कर घबराया और तत्काल तार देकर हुंडी खड़ी रखवादी.

लाला मदनमोहन इस तरह अपनें एक मित्रके छलसे निराश होकर तीसरे पहर अपनें शहरके मित्रोंसे सहायता मांगनेंके लिये आप सवार हुए. पहले रस्ते में जोलोग झुक,झुक कर सलाम करतेथे वही आज इन्हें देखकर मुख फेरनें लगे बल्कि कोई, कोई तो आवाज़े कसनें लगे. मदनमोहन को सबसे अधिक विश्वास लाला हरदयाल का था इसलिये वह पहले उसीके मकानपर पहुंचे-

हरदयाल को मदनमोहनके काम बिगड़नें का हाल पहले मालूम होचुका था और इसी वास्ते उसनें मदनमोहन की चिट्ठी का जवाब नहीं भेजाथा. अब मदनमोहनके आनें का हाल सुन्तेही वह जनानीड्योढ़ीमे मदनमोहन के पास पहुंचा और बड़े मकानमैं मदनमोहन को लिवा लेजा कर अपनी बैठकमैं बिठाया.

लाला मदनमोहननें जब सहायता मांगनेके लिये चिट्ठी भेजीथी उस्से पहले उस्नें इधरकी बात [illegible] और जवाब न भेजनेका संदेहही [illegible] [illegible] मदनमोहननें यह बात सच्ची बनाई और उसके पीछे [illegible]

पर न्योछावर करनेंलगे. लाला हरदयाल की यह बातें केवल कहनेंके लिये नथी वह दौड़कर अपनें गहनें का कलमदान उठा लाए और उस्में से एक, एक रकम निकाल-कर लाला मदनमोहन को देनें लगे इतनेंमें एकाएक दरवाजा खुला हरदयालका पिता भीतर पहुंचा और वह हरदयाल को जवाहरातकी रकमें मदनमोहनके हाथमें देते देखकर क्रोध से लाल होगया.

"अभागे हटधर्मी ! मैंनें तुझको इतनी बार बरजा परंतु तू अपना हट नहीं छोड़ता आजकल के कपूत लड़के इतनी बातको सच्चो स्वतंत्रता समझतेहैं कि जहां तक हो-सके बड़ों का निरादर और अपमान किया जाय, उन्को मूर्ख और अनसमझ बताया जाय, परंतु मैं इन बातों को कभीनहीं सहूंगा मेरे बैठे तुझको घर बरबाद करनें का क्या अधिकारहै ? निकल यहांसे काला मुंहकर तेरीइच्छा होय जहां चलाजा मेरा तेरा कुछ संबंध नहींरहा" यह कहकर एक तमाचा जड़ दिया और गहना सम्हाल, सम्हालकर संदूक में रखनें लगा. थोडी देर पीछे लाला मदनमोहन कीतरफ देखके कहा. "संसारके सब काम रुपे से चल्तेहैं फिर जो लोग अपनी दौलत खोकर बैरागी बन बैठें और औरों को दौलत उड़ाकर उन्को भी अपनीतरह बैरागी बनाना चाहें वह मेरे निकट सर्वथा दया करनेंके योग्य नहीं हैं और जो लोग ऐसे अज्ञानियों की सहा-यता करतेहैं वह मेरे निकट ईश्वर का नियन तोड़तेहैं और संसारी मनुष्यों के लिये बड़ी हानिका काम करतेहैं मेरे निकट ऐसे आदमियों को उन्की मूर्खताका दंड अवश्य होना चाहिये जिस्से और लोगों की आंखें खुलें. क्या मित्रता का यही अर्थ है कि आपतो डूबे सो डूबे अपनें साथ औरों को भी ले डूबे ! नहीं, नहीं आप ऐसे बिचार छोड़ दीजिये और चुपचुपाते अपनें घर की राह लीजिये यह समय अपनें मित्रोंको देनेंकाहै अथवा उल्टा उन्सें लेनेंका है ?"

बेवक्तमें एक मित्रका जी दुखाना, और दयाके समय क्रूरता करनी, किसी की दुखती चोटपर हंसना, एक गरीब को उस्की गरीबीके कारण तुच्छ समझना, अथवा उस्की गरीबी कीयाद दिवाकर उसे सताना, दूसरेका बदला भुगताती बार अपनें मतलब का खयाल करना, कैसा ओछापन और घोर पापहै ! जहां सज्जन धनवानों की खुशा-मद में दूर रहकर गरीबों का साथ देनें और सहायता करनें में सच्ची सज्जनता सम-झतेहैं वहां दुर्जन धनवानों की खुशामद करके गरीबोंका हक खोदेनेंमें अपनी बड़ाई समझतेहैं कठोर बचन दांतरह से कहा जाता है जो लोग अपनायत की रीति से कहते हैं उन्की कहनसे तो अपनें चित्तमें वफ़ादारी और आधीनता बढ़तीहै पर जो अभिमान की राहमें दूसरे को तुच्छ बनाते हैं उन्की कहनसे अपनें चित्तमें क्रोध और धिक्कार [illegible]

का नामर किसी तरह नहीं रुकता. बिदुरजी नें सच कहाहै " नावक सर धनु
कढे कढत शरीरते ॥ कुवचनतीर गभीर कढतन क्योंहूं उरगडे ॥ १ "

निदान लाला मदनमोहन को यह कहन अत्यंत असह्य हुई. वह तत्काल उ
वहांसे चलदिये परंतु बैठकसे बाहर जाते, जाते उन्हें पीछेसे हरदयाल का यह
सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि " चलो यह स्वांग (अभिनय) होचुका अब अ
काम करो "

लाला मदनमोहन वहांसे चलकर एक दूसरे मित्रके मकानपर पहुंचे और
अपनें आनें की खबर कराई वह उससमय कमरे में मोजूद था परंतु उसनें ल
मदनमोहन को थोड़ी देर अपनें दरवाजे पर बाट दिखानें में और अपनें कमरे
मेज कुरसी, किताब, अखबार आदिसे सजाकर मिलनें में अधिक शोभा स
इसलिये कहला भेजा कि " आप ठैरें लाला साहब भोजन करनें गए हें अभी आ
आपसे मिलेंगे " देखिये आजकलके सुधरे बिचारोंका नमूना यहहै। थोड़ी देर
वह लाला मदनमोहन को लिवानें आया और बड़े शिष्टाचारसे लिवा लेजाकर
तकिये के सहारे बिठाया. लाला मदनमोहन को थोड़ी देर उस्की बाट देखनी पड़
इस्की क्षमा चाही और इधर उधर की दो चार बातें करके मानों कुछ चिट्ठियां अ
आवश्यकीय लिखनी बाकीरहगई हों इसतरह चिट्ठी लिखनें लगा परंतु दो चार पल
फिर कलम रोककर बोला " हां यह तो कहिये आपनें इससमय किसतरह परि
किया । "

" क्यों भाई ! आनें जानें का कुछ डरहै ? क्या मैं पहले कभी तुम्हारे यहां
आया ? या तुम मेरे यहां नहीं गए ? " लाला मदनमोहन नें कहा.

" आपनें यह तो बड़ी कृपा की परन्तु मेरे पूछनें का मतलब यह था कि
[illegible] बता कर मुझे अधिक अनुग्रहीत कीजिये " उस मनुष्य नें [illegible]
से कहा.

" हां कुछ काम भी है मुझको इससमय कुछ रुपे की जरूरत है मेरे पास बहु
कुछ माल असबाब मौजूद है परन्तु लोगोंनें वृथा तकाजा करके मुझको घबरा दिया"
लाला मदनमोहन भोले भावसे बोले.

" मुझको बड़ा खेद है कि मैंनें अपना रुपया अभी एक और काम में [illegible]
[illegible] मुझको पहले से कुछ सूचना होती तो मैं [illegible] यह काम न करता "
[illegible]

" इस्मे हमारी त्तरूपहानि है हम जामनी करें तो हमको रुपया उसी समय देन चाहिये" उसपुरुपनें जवाब दिया और लाला मदनमोहनवहांसे भा निराश होकर रवानें हुए.

रस्ते में एक और मित्र मिले वह दूरही से अजान की तरह दृष्टि बचा कर गली में जानें लगे परन्तु लाला मदनमोहन नें आवाज देकर उन्हें ठैराया और अपनी बग्गी ख डी की इस्से लाचार होकर उन्हें ठैरना पडा परन्तु उन्के मनमें पहलीसी उमंग ना न थी.

" आप प्रसन्न है ? मुझको इस्समय एक बडा जरूरी कामथा इस्से में लपका जाता था मुझको आपकी बग्गी दृष्टि न आई, माफ करें में किसी समय आपके हाजिर होऊंगा" यह कह कर वह मनुष्य जानें लगा परन्तु मदनमोहन नें उसे फि का और कहा " हां भाई ? अब तुमको अपनें जरूरी कामों के आगे मुझसे मिलनें अवकाश क्यों मिलनें लगा था ? अच्छा ? जाओ हमारा भी परमेश्वर रक्षक है"

इस तानें से लाचार होकर उसे ठैरना पडा और उस्के ठैरनें पर लाला मदनम नें अपना वृत्तान्त कहा.

" यह हाल सुन्कर मुझको अत्यन्त खेद हुआ परमेश्वर आप पर कृपा करे सर्वशक्तिमान दीनदयाल सर्व का दुःख दूर करता है उसपर बिश्वास रखनें से आप सब दुःख दूर होजायंगे आप धैर्य रक्खें. मुझको इस्समय सच मुच बहुत जरूरी क है इसलिये म अधिक नहीं ठैर सक्ता परन्तु मैं आज कल में आप के पास हजिर ऊंगा और सलाह करके जो बात मुनासिब मालूम होगी उस्के अनुसार बरताव कि जायगा" यह कह कर वह मनुष्य तत्काल वहा से चलदिया.

लाला मदनमोहन और एक मित्र के मकान पर पहुंचे. बाहर खबर मिली कि " ह मकान के भीतर हैं " भोतर से जवाब आया कि " बाहर गए " लाचार मदनमो को वहांसे भी खाली हाथ फिरना पडा. और अब और मित्रोंके हां जानें का स नहीं रहा था इसलिये निराश होकर सीधे अपनें मकान को चले गए.

प्रकरण ३४.

हीनप्रभा (बदरोबी).

नीचन के मन नीति न आवे । प्रीति प्रयोजन हेतु लखावे ॥
कारज सिद्धभयो जब जानें । रंचकहू उर प्रीति न मानें ॥
प्रीति गए फलहू बिनसावे । प्रीति बिषे सुख नेंक न पावे ॥

बतक रुपे का कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ अपनें दो सौ के नोट दिये थे वह जाते ही टनी होगए. इस्समय एक हजार रुपे का भी बन्दोबस्त होजाय तो खैर कुछ दिन म चल सक्ता है नहीं तो काम नहीं चल्ता"

" तुम जान्ते हो कि मेरे पास इस्समय नकद कुछ नहीं है और गहना भी बहु- सा काम में आचुका है" लाला मदनमोहन बोले " हां मुझको अपनें मित्रों की तरफ सहायता मिल्नें का पूरा भरोसा है और जो उन्की तरफ से कुछ भी सहायता मिले मैं मथम तुह्मारी लडकी के ब्याह का बन्दोबस्त अच्छी तरह कर दूंगा.

" और जो मित्रों से सहायता न मिली तो मेरा क्या हालहोगा? " मुनशी चुन्नी- ालनें कहा " ब्याह का काम किसी तरह नहीं रुक सक्ता और बडे आदमियों की कर इसी वास्ते तन तोड़ कर की जाती है कि ब्याह शादी में सहायता मिले, बरा- रवालों में प्रतिष्ठा हो परन्तु मेरे मन्द भाग्य से यहां इस्समय ऐसा मौका नहीं रहा ... मैं आपको अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता. अब मेरी इतनी ही अर्ज है . आप मुझको कुछ दिनकी रुख़सत देदें जिस्से मैं इधर उधर जाकर अपना कुछ झता करूं"

"तुमको इस्समय रुखसत का सवाल नहीं करना चाहिये मेरे सब कामों का आ- र तुम पर है फिर तुम इस्समय धोका दे कर चले जाओगे तो काम कैसे चलेगा?" ाला मदनमोहन नें कहा.

" वाह ! महाराज वाह ! आपनें हमारी अच्छी कदर की ! " मुनशी चुन्नीलाल ज हो कर कहनें लगा " धोका आप देते हैं या हम देते हैं ? हम लोग दिन रात आप- ी सेवा में रहे तो ब्याह शादी का खर्च लेनें कहां जाय ? आपनें अपनें मुख से इस याह में भली भांति सहायता करनें के लिये कितनी ही बार आज्ञा की थी परन्तु आ- वह सब आस टूट गई तोभी हमनें आपको कुछ ओलंभा नहीं दिया आप पर कुछ झ नहीं डाला केवल अपनें कार्य निर्वाह के लिये कुछ दिन की रुख़सत चाही तो आ- के निकट बडा अधर्म हुआ, बडा धोका हुआ. खैर ! जब आपके निकट हम धोके- ाज ही ठरे तो अब हमारे यहां रहनें से क्या फायदा है ? यह आप अपनी तालियां और अपना असबाब सह्माल लें पीछे घट बढेगा तो मेरा जिम्मा नहीं है. मैं जाता- ." यह कह कर तालियों का झूमका लाला मदनमोहन के आगे फेंक दिया और दनमोहन के ठंडा करते करते क्रोध की सूरत बना कर तत्काल वहां से चल खडा हुआ.

सच है नीच मनुष्य के जन्म भर पालन पोषण करनें पर भी एक बार थोडी कमी हजानें से जन्म भर का किया कराया मट्टी में मिल जाताहै. लोग कहते हैं कि अपनें

ःमियोंको कामकी वात करनें का समय नहीं मिलता था, " जिस्की लाठी उस्की भैं
त " हेरहोशी जो चीज जिस्के हाथ लगती थी वह उस्को खुर्दबुर्द कर जाताथा भाडे
और उघाई आदिकी भूली भलाई रकमों को लोग ऊपर का ऊपर चट करजाते थे आध
रदे पर कर्ज दारोंको उनकी दस्तावेज़ फेरदी जाती थी देशकालके अनुसार उचित प्रबन्ध
करनेंमें लोक निंदाका भय था ! जो मनुष्य कृपा पात्रथे उनका तनतना तो बहुतही
ढ रहाथा उन्के सब अपराधोंसे जान बूझकर दृष्टि बचाई जातीथी. वह लोग सब का
मोंमें अपना पांव अडाते थे और उन्के हुक्मकी तामील सबको करनी पडती थी यदि
कोई अनुचित समझकर किसी काम में उज्र करता तो उस्पर लाला साहब का को
होताथा और इस दुफ़सली काररवाईके कारण सब प्रबन्धबिगड रहाथा (बिहारी) " दुसह
दुराज प्रजानको क्यों न बढे दुख दुंद ॥ अधिक अंधेरो जग करै मिल मावस रविचं
॥ " ऐसी दशामें मदनमोहन की स्त्रीके पीछे चुन्नीलाल और शिभूदयालके छोड जा
.ः सब माल मतेकी लूट होनें लगे जो पदार्थ जिस्के पास हो वह उसका मालिक ब
न बैठे इस्में कौन आश्चर्य है ?

प्रकरण ३५.

स्तुति निन्दा का भेद

बिनसत बार न लागही ओछे जनकी प्रीति ॥
अंबर डंबर सांझके अरु बारूकी भींति ॥

सभाविलास

दूसरे दिन सवेरे लाला मदनमोहन नित्य कृत्यसे निबटकर अपनें कमरेमें इकले
ठेथे, मन मुर्झा रहाथा किसी काम मे जो नहीं लगताथा एक, एक घड़ी एक, एक
रस के बराबर बीतती थी इतनेंमें अचानक घडी देखनें के लिये मेज़पर दृष्टि गई तो
घड़ी का पता न पाया. हें ! यह क्या हुआ ! रातको सोती बार जेबसे निकालकर
घड़ी रक्खी थी फिर इतनी देरमें कहां चली गई ! नोकरों से बुलाकर पूछा तो उन्होंनें
साफ़ जवाब दिया कि " हम क्या जानें आपनें कहां रक्खी थी ? जो मोकूफ़ करना
हो तो यों ही करदें वृथा चोरी क्यों लगाते हैं " लाचार मदनमोहन को चुप होना
पड़ा क्यों कि आपतो किसी जगह आनें जानें लायक ही नथे सहायता को कोई
आदमी पास न रहा लाला जवहारलाल कीतलाश कराई तो वह भी घरसे अभी नहीं
आएथे लाला मदनमोहन को अपाहजों की तरह अपनी पराधीन दशा देखकर अत्यंत
दुःख हुआ परंतु क्या कर सक्तेथे ? उन्के भाग्यसे उन्का दुःख बटानें केलिये इससमय

लाला मदनमोहन नें आंखों से आंसू बहाकर उन्से अपना सब दुःख कहा और अंतमें अपनी घड़ीजानेंका हाल कहकर इस काममें सहायता चाही.

"आपका हाल सुन्कर मुझको बहुत खेद होताहै मुझे चुन्नीलाल आदिकी तरफसे सर्वथा ऐसा भरोसा नथा इसी तरह आप अपनें काम काजसे इतनें बेखबर होंगे यह भी उम्मेद नथी" बाबू बैजनाथनें काम बिगड़े पीछे अपनी आदत मूजिब सबको भूल निकालकर कहा "मैंनें तो अखबारोंमें आपके नामकी धूम मचादीथी परंतु आप अपनें कामही की सम्हाल न रक्खें तो मैं क्या करूं? महाजनी काम मुझको नहीं आता और इतना अवकाश भी नहीं मिल्ता. मैं घड़ी का पता लगानें के लिये उपाय करता परंतु आज कल रेल पर काम बहुत है इससे मैं लाचारहूं. मेरे निकट इस्समय आपके लिये यही मुनासिबहै कि आप इन्साल्वन्ट होनें की दरखास्त देदें."

"अच्छा! बाबू साहब! आपसे और कुछ नहीं होसक्ता तो आप केवल इतनीही कृपा करें कि मेरी घड़ी जानेंकी रपट कोतवालीमें लिखाते जायं" लाला मदनमोहननें गिड़गिड़ा कर कहा.

"मैं रेल्वे कंपनी का नौकर हूं इसवास्ते कोतवाली में रिपोर्ट नहीं लिखासक्ता बल्कि प्रगट होकर किसी काम में आपको कुछ सहायता नहीं देसक्ता मुझसे निजमें आपको कुछ सहायता होसकेगी तो मैं बाहर नहीं हूं परंतु आप मुझसे किसी जाहरी कामके वास्ते कहकर मुझे अधिक लज्जित न करें और अंतमें मैं आपको इतनी सलाह देताहूं कि "आप लाला ब्रजकिशोर पर विश्वास रखकर उस्के बसमें नहो. रहे बल्कि उस्को अपनें बसमें रखकर अपना काम आप करते रहें"

"सचहै यह समय किसीपर विश्वास रखनें का नहीं है जो लोग अपनें मतलब के वास्ते मित्र बनकर मेरे पसीनेंकी जगह खून डालनें को तैयार रहते थे मतलब निकल जानें से आज उन्की छाया भी नहीं दिखाई देती. सत्सम्मति देना तो अलग रहा मेरे पास खड़े रहनें तक के साथी नहीं होते. जो लोग किसी समय मेरी मुलाकात के लिये तरसतेथे वह अब तीन, तीन बार बुलानेंसे नहीं आते मेरे पास आनें जानें में जिन लोगों की इज्जत बढ़ती थी वह आज मुझसेकिसी तरह का संबंध रखनेंमें लजाते हैं" लाला मदनमोहननें भरभरा भरभरा इतनी बात कहकरअपनी छाती का बोझ हलका किया.

"यह लोगबाग है जिस्का प्रयोजन होताहै उसी उचित अनुचित बातों का कुछ विचार नहीं रहता" बाबू बैजनाथनें ऊंच नीचा जवाब दिया और [illegible]
[illegible]

डाक का समय हुआ डाक आई. उस्में दो तीन चिट्ठी और कई अख़
एक चिट्ठी आगरे के एक जौहरी की आई थी जिस्में जवाहरात की बि
साहब के रुपे लेनें थे और वह यों भी लाला साहब से बडी मित्रता
उसनें लाला साहब की चिट्ठी के जवाब में लिखा था कि "आप की
मालूम हुआ मैं बड़ी उमंग से रुपे भेज कर इससमय आपकी सहायता
मुझको बडा खेद है कि इन दिनों मेरा बहुत रुपया जवाहरात पर लग र
मैं इससमय कुछ नहीं भेजसक्ता आपनें मुझको पहले से क्यों न लिखा
मेरे पास रुपया आवेगा मैं प्रथम आपकी सेवा में जरूर भेजूंगा मे
भलीभांति विश्वास रखना और अपनें चित्त को सर्बथा अधैर्य न होनें
सब कुशल करेगा" यह चिट्ठी उस कपटी नें ऐसी लपेट से लिखी थी
को इस्के पढ़नें से लाला मदनमोहन के रुपे लेने का हाल सर्बथा न
का था वह अच्छी तरह जान्ता था कि लाला मदनमोहन का काम
मुझसे रुपे मांगनेंवाला कोई न रहेगा इसवास्तै उसनें केवल इतनी
न किया बल्कि वह गुप्त रीति से मदनमोहन के बिगड़नें की चर्चा फै
बड़े, बड़े लेनदारों को भड़कानें का उपाय करनें लगा. हाय! हाय! इस
कुछ दिन की अनिश्चित आयु के लिये निर्भय होकर लोग कैसे घोर
!!!

दूसरी चिट्ठी मदनमोहन के और एक मित्र (!) की थी वह हर साल आ
दिन मदनमोहन के पास रहते थे इसलिये तरह, तरह की सोगात के सि
दारी में मदनमोहन के पांच सात सौ रुपे सदैव खर्च होजाया कर
था कि " मैनें बहुत सस्ता समझ कर इससमय एक गांव साठ हजार
लियाहै और उस्की कीमत चुकानें के लिये मेरे पास इससमय पचास हज़
ज़रूर है इसलिये मुझको महीनें डेढ़ महीनें के वास्ते दस हज़ार रुपे की ज़
कृपा करके यह रुपया मुझको साहूकारी ब्याज़ पर देदेंगे तो मैं आ
मानूंगा" यह चिट्ठी लाला मदनमोहन की चिट्ठी पहुंचने ही उस्नें अगम
थी और मिती एक दिन पहलेकी डालदी थी कि जिस्से भेद न खुलने

का वेर लेने के लिये तैयार होजाते हैं सादी नें कहा है "करत खुशामद जो मनु
में कछु दे बहु लेत। एक दिवस पावै न तो दोसै दूषण देत ॥+" इस अखबार क
एडीटर विद्वान था और विद्या निस्सन्देह मनुष्य की बुद्धि को तीक्ष्ण करती है परन्
स्वभाव नहीं बदलसक्ती. जिस मनुष्य को विद्या होती है पर वह उस्पर बरताव नहीं
करता वह बिना फल के वृक्ष की तरह निकम्मा है.

लाला मदनमोहन इन लिखावटों को देख कर बड़ा आश्चर्य करते थे परन्तु इस
से अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि बहुत लोगों नें कुछ भी जवाब नहीं
दिया उनमें कोई, कोई तो ऐसे थे:कि बड़ों की लकीर पर फकीर बनें बैठे थे य
पि उन्के पास कुछ पूंजी नहीं रही थी उन्का कार व्योहार थक गया था उ
का हाल सब लोग जान्ते थे इस्से आगे को भी कोई बूंद हाथ लगने की आश
न थी. परन्तु फिर भी वह खर्च घटानें मैं बेइज्जती समझते थे. सन्तान को पढ़ा
ने लिखानें की कुछ चिन्ता न थी परन्तु ब्याह शादियों मैं अब तक उधार लेक
द्रव्य लुटाते थे उन्सै इस अवसर पर सहायता कीक्या आशा थी? कितनें ही ऐसे
थे जिन्हों नें केवल अपनें फायदे के लिये धनवानों कासा ठाठ बना रक्खा थ
इसवास्ते वह मदनमोहन के मित्र न थे उसके द्रव्य के मित्र थे वह मदनमोहन प
किसी न किसी तरह का छप्पर रखनें के लिये उसका आदर सत्कार करते थे
इसलिये इस अवसर पर वह अपना पर्दा ढकनें के हेतु मदनमोहन के बिगाड़नें
अधिक उद्योग न करें इसी मैं उन्का विशेष अनुग्रह था इस्सै अधिक सहायता
मिलनें की उन्सै क्या आशा होसक्ती थी? कोई, कोई धनवान ऐसे थे जो केवल ह
किमों की प्रसन्नता के लिये उन्की पसन्द के कामों मैं अपनी अरुचि होनें पर भ
ी धोंस कर रुपया देदेते थे परन्तु सच्ची देशोन्नति और उदारता के नाम फू
टी कौड़ी नहीं खर्ची जाती थी वह केवल हाकमों से मेल रखनें मैं अपनी प्रतिष्ठा सम
झते थे परन्तु स्वदेशियों के हानि लाभ का उन्हें कुछ विचार न था. वह केवल ह
ाकमों मैं आनें जानें वाले रईसों से मेल रखते थे और हाकमों की हां मैं हां मि
लाया करते थे इसवास्ते साधारण लोगों की दृष्टि मैं उन्का कुछ महत्व न थ
ा हाकमों मैं आनें जानें के हेतु मदनमोहन की उन्सै जान पहचान होगई थी प
रन्तु वह मदनमोहन का काम बिगड़नें से प्रसन्न थे क्यों कि वह मदनमोहन क
ी तरह कमेटी इत्यादि मैं अपना नाम लिखाया चाहते थे इसवास्ते वह इस अवस
र पर हाकमों से मदनमोहन के हक़ मैं कुछ उलट पुलट नजड़ते यही उन्को बड़ा

तो चुप होरहेंगे अर्थात् उस्को रुपे की ज़रूरत होगी तो कुछ नदेंगे और ज़रूरत नहोगी तो ज़बरदस्ती गले पडेंगे!

इन्के पीछे लाला मदनमोहन एक अख़बार खोलकर देखनें लगे तो उसमें एक यह लेख दृष्टि आया:—

"सुसभ्यता का फल"

"हमारे शहरके एक जवान सुशिक्षित रईसकी पहली उठान देखकर हमको यह
"आशा होतीथी बल्कि हमनें अपनी यह आशा प्रगट भी करदी थी कि कुछ दिनमें
"उस्के कामोंसे कोई देशोपकारी बात अवश्य दिखाई देगी परंतु खेदहै कि हमारी वह
"आशा बिल्कुल नष्ट होगई बल्कि उस्के विपरीत भाव प्रतीत होनेंलगा गिन्ती के
"दिनोंमें तीन चार लाख पर पानी फिरगया. वलायत में डरमोडी नामी एक लड़का
"ऐसा तीक्षण बुद्धि हुआथा कि वह नो वर्ष की अवस्थामें और विद्यार्थियों को ग्रीक
और लाटिन भाषाके पाठ पढ़ाताथा परंतु आगे चलकर उस्का चाल चलन अच्छा
नहीं रहा इसी तरहीं यहां प्रारंभ से परिणाम विपरीत हुआ. हिन्दुस्थानियों का सुधरना
"केवल दिखानें के लिये है वह अपनी रीति भांति बदलनें में सब सुसभ्यता समझते हैं पर-
"न्तु असल में अपनें स्वभाव और बिचारों के सुधारनें का कुछ उद्योग नहीं करते बच-
"पन में उन्की तबियत का कुछ, कुछ लगाव इसतरफ को मालूम होता भी है तो मद-
"रसा छोड़े पीछे नाम को नहीं दिखाई देता. दरिद्रियों को भोजन बस्त्र की फ़िक्र प
"है और धनवानों को भोग बिलास से अवकाश नहीं मिल्ता फिर देशोन्नति का
"चार कौन करे? बिद्या और कला की चर्चा कौन फैलाय? हमको अपनें देश की
"दशा पर दृष्टि करके किसी धनवान का काम बिगड़ता देख कर बड़ा खेद होत
"परन्तु देश के हित के लिये तो हम यही चाहतेहैं कि इसतरह पर प्रगट में नए
"धारे की झलक दिखा कर भीतर से दीये तले अंधेरा रखनेंवालों का भंडा जल्दी
"जाय जिस्से और लोगों की आंखें खुलें और लोग सिंह का चमड़ा ओढ़नेंव
भेड़िये "को सिंह न समझें" इस अख़बार के ऐडीटर को पहले लाला मदनमोहन
अच्छा फ़ायदा होचुका था परन्तु बहुत दिन बीत जानें से मानों उस्का कुछ अ
नहीं रहा जिसतरह हरेक चीज़ के पुरानें पड़नें से उस्के बन्धन ढीले पड़ते जाते
इसीतरह ऐसे स्वार्थपर मनुष्यों के चित्त में किसी के उपकार पर, लेन देन पर,
ति व्यवहार पर, बहुत काल बीत जानें से मानों उस्का असर कुछ नहीं रहता
उन्के प्रयोजन का समय निकल जाताहै तब उन्की आंखें सहसा बदल जाती हैं
वह किसी लायक होते हैं तब उन्के हृदय पर स्वेच्छाचार छा जाता है जब उ
स्वार्थ में कुछ हानि होती है तब वह पहले के बड़े से बड़े उपकारों को ताक़ पर र

थी इस्से बढ़ कर उन्की तरफ़ सै और क्या सहायता होसक्ती थी? कोई, कोई मनुष्य ऐसेभी थे जो उन्की रक़म में कुछ जोखों न हो तो वह मदनमोहन को सहारा देनेंके लिये तैयार थे परन्तु अपनें ऊपर जोखों उठा कर इस डूबता नाव का सहारा लगानेंवाला कोई न था. विष्णुपुराण के इस वाक्य से उन्के सब लक्षण मिल्ते थे "जाचत हू निज मित्र हित करैं न स्वारथ हानि । दस कौड़ी हू की कसर खायँ न दुखिया जानि ॥ +"

निदान लाला मदनमोहन आज की डाक देखे पीछे बाहर के मित्रों की सहायता सै कुछ, कुछ निराश होकर शहर के बाक़ी मित्रों का माजना देखनें के लिये सवार हुए.

प्रकरण ३७

बिपत्तमें धैर्य

> प्रिय बियोग को मूढजन गिनत गड़ी हिय भालि ॥
> ताही कों निकरी गिनत धीरपुरुष गुणशालि ॥*
>
> रघुबन्शे.

लाला ब्रजकिशोरनें अदालतमें पहुंचकर हरकिशोरके मुकद्दमेमें बहुत अच्छी तरह बिवाद किया. निहालचंद आदिके कई छोटे, छोटे मामलों में राजीनामा होगया जब ब्रजकिशोर को अदालत के कामसै अवकाश मिला तो वह वहांसै सीधे मिस्टर ब्राइटके पास चले गए.

हरकिशोरनें इस अवकाश को बहुत अच्छा समझा तत्काल अदालत में दरख्वास्तकी कि "लाला मदनमोहन अपनें बालबच्चों को पहलै मेरठ भेज चुके हैं उन्के सब माल अस्बाब पर मिस्टर ब्राइट की कुर्की होरही है और अब वह आप भी रुपोश (अतंर्धान) हुआ चाहते हैं मैं चाहताहूं कि उन्के नाम गिरफ्तारी का वारन्ट जारी हो." इस बात पर अदालत में बड़ा बिवाद हुआ जवाब दिहीके वास्ते लाला ब्रजकिशोर बुलाए गए परंतु उन्का कहीं पता न लगा- हरकिशोरके वकीलनें कहा कि लालाब्रजकिशोर ढूंढ बोलनेंके भयसै जान बूझकर टलगए हैं. निदान हरकिशोरके हल्फ़ी इजहार (अर्थात शपथ पूर्वक वर्णन करनें) पर हाकम को बिबस होकर वा-

---

+अभ्यर्थितोपि सुहृदा स्वार्थहानिं न मानवः । पणार्धार्धार्धमात्रेण करिष्यति नराधिप ॥

* अवगच्छति मूढचेतनः प्रियनाशं हृदिशल्य मर्पितम् ॥
स्थिरधी स्तुतदेव मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम् ॥

।]

री म देना पड़ा हरकिशोरनें अपनी युक्तिसे तत्काल वारन्ट जारी
या और आप उस्की तामील करनें के लिये उस्के साथ गया. मदनमोहन से
गों का मेलया उन्में से कोई, कोई मदनमोहन को ख़बर करनें के लिये दौड़े
र भाग्य से मदनमोहन घर नमिले.

मदनमोहनकी स्री अभी मेरठसे आईथी वह यह ख़बर सुन्कर घबरागई उसे
रफ़ को आदमी दौड़ा दिये. मेरठ में मदनमोहनके बिगड़नें की ख़बर कलसे
थी परंतु उस्के दुःख का विचार करके उस्के आगे यह बात कहनें का किसी
स न हुआ आज सवेरे अनायास यह बात उस्के कान पड़गई बस इसबात
तेहीं वह मच्छी की तरह तड़पनें लगी, रेलके समय में दो घंटे की देरथी वह
युगसे अधिक बीते उस्के घरके बहुत कुछ धैर्य देतेथे परंतु उसे किसी
ल नहीं पड़ती थी. जब वह दिल्ली पहुंची तो उसें अपनें घरका और ही रंग
लोगों की भीड़, न हँसी दिल्लगी की बातें, सब मकान सूना पड़ाथा और
ांव रखतेही डर लगताथा जिस्पर विशेष यह हुआ कि आतेही यह भयंकर
उनी जबसे उसें यह ख़बर सुनी उस्के आंसू पलभर नहीं बंद हुए वह अपनें
लिये प्रसन्नतासे अपना प्राण देनें को तैयार थी.

पर लाला मदनमोहन अपनें स्वार्थपर मित्रोंसे नए, नए बहानों की बातें सुन्ते
थे इतनें में एका एक केन्सटेबल नें कोचमैन को पुकार कर बग्गी खड़ी कराई
नाज़िर नें पास पहुंचतेही सलाम करके वारन्ट दिखाया, लाला मदनमोहन उस्को
 सफ़ेद होगए, सिर झुका लिया, चहरेपर हवाइयां उड़नें लगीं, मुखसे एक
 निकला. हरकिशोरनें एक खखार मारी परंतु मदनमोहनकी आंख उस्के साम-
ई निदान मदनमोहननें नाज़िर को संकेतमें अपनी पराधीनता दिखाई इसपर सब-
 कचहरी को चले.

मदनमोहन अदालत में हाकमके सामनें खड़े हुए उससमय लाजसे उन्की आंख
 नहीं होती थी. हाकम को भी इसबात का अत्यंत खेदथा परंतु वह कानूनसे
 थे,

"हमको आपकी दशा देखकर अत्यंत खेद है और इस हुक्म के जारी करनें का
 हमारे सिर आपड़ा इससे हमको और भी दुःख होता है परंतु हमारे आपके निज-
 व को हम अदालतके काम में शामिल नहीं कर सक्ते लाजको बचाओगे.

। जो सुख सुर पुर नरक गेह बन आवत बिनहिं बुलाये। तिह सुख कहुं बहु यत्न करत
न समुझन नहीं समुझाये । परदारा पर द्रोह मोहबस किये मूढ मन भाये। गर्भ
स दुखरासि जातना तीव्र बिपति बिसराये। भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान
ग जाये। सुरदुर्लभ तन धरिन भजे हरि मद अभिमान गंवाये। गईन निजपर बुद्धि
द्ध ह्वैरहे राम लयलाये। तुलसिदास यह अवसर बीते कापुनके पछताये ॥१" धर्म
ा आधार केवल द्रव्य पर नहीं है हरेक अवस्था में मनुष्य धर्म कर सक्ता है अलबत्ता
हले उस्को अपना स्वरूप यथार्थ जान्ना चाहिये यदि अपनें स्वरूप जान्नें में भूल रह
ायगी तो धर्म अधर्म होजायगा और व्यर्थ दुःख उठाना पडेगा. बिपत्ति के समय घबरा-
ट की बराबर कोई वस्तु हानिकारक नहीं होती बिपत्ति भँवर के समान है जो, जो मनु-
य बल करके उस्से निकला चाहता है अधिक फँसता है और थक कर बिबस होता
ाता है परंतु धैर्य से पानी के बहावके साथ सहजमें बाहर निकल सक्ता है.ऐसे अवसर
र मनुष्य को धैर्यसे उपाय सोचना चाहिये और परमदयालु भगवान की कृपा दृष्टि
र पूर्ण बिश्वास रखना चाहिये उस्को सब सामर्थ है"

सच सच है परन्तु बिपत्ति के समय धैर्य नहीं रहता" लाला मदनमोहन नें
कहा.

"बिपत्ति मनुष्य की कसोटी है नीति शास्त्र में कहा है "दूरहि सों डरपत रहैं निकट
एतें शूर। बिपत पड़े धीरज गहैं सज्जन सब गुण पूर ॥*" लाला ब्रजकिशोर कह-
लगे "महाभारत में लिखा है कि राजा बलिदेवताओं से हार कर एक पहाड़
ी कन्दरा में जाछिपे तब इन्द्र नें वहां जाकर अभिमान से उन्को लज्जित करनें का बिचार
ृपा इस्पर बलि शान्तिपूर्वक बोले "तुम इससमय अपना बैभव दिखाकर हमारा अ-
मान करते हो परन्तु इसमें तुह्मारी कुछ भी बड़ाई नहीं है हारेहुए के आगे अपनी ढसक
िखानें से पहली निर्बलता मालूम होती है जो लोग शत्रु को जीत कर उसपर दया
रते हैं वही सच्चे बीर समझे जाते हैं. जीत और हार किसी के हाथ नहीं है यह दोनों
मयाधीन हैं प्रथम हमारा राजथा अब तुह्मारा हुआ आगे किसी और का होजायगा.
ाल सुख सदा अदलते बदलते रहते हैं होनहार को कोई नहीं मेट सक्ता तुम भूल से
स बैभव को अपना समझते हो यह किसी का नहीं है. पृथु, ऐल, मय, और भीम आदि
हुत से मनास्वी राजा पृथ्वी पर होगए हैं परन्तु कालने किसी को न छोड़ा इसी तरह
ब्राग समय आवेगा तब तुम भी न रहोगे इसलिये मिथ्याभिमान न करो. सज्जन दुख
ुख में कभी हर्ष विषाद नहीं करते वह सब अवस्थाओं में परमेश्वर का उपकार मान
र सन्तोषी रहते हैं ++ और सब मनुष्यों को अपना समय देख कर उपाय करना

[illegible]

क्यों रोरही है और विन्नें आज कुछ भोजन भी नहीं किया " एक लड़का बोला.

"लालाजी ! तुम बोल्ते क्यों नहीं ? गुछा (गुस्सा) हो ? चलो, घर चलो हम मेंद छे (से) खिलौनें लाए हैं छो (सो) तुम्हें दिखावेंगे " दूसरा ठोडी पकड़कर कहनें लगा.

"तुमतो दंगा करते हो चलो हमारे साथ चलो हम तुमको बरफ़ी मंगादेंगे यहां लालाजी को कुछ काम है " ब्रजकिशोरनें कहा.

"आं आं हमतो लालाजी के छंग (संग) छैल को जायेंगे बागमे मच्छियों का तमाछा देखेंगे हमको बर्फी (बरफ़ी) नहीं चाहिये हम तुम्हारे छंग नहीं चल्ते " दोनों लड़के मचल गए.

"चलो हम तुम्हें पीतल की एक, एक ऐसी मछली खरीद देंगे जो लोहेको सामने दिखातेही तुम्हारे पास दौड़ आया करेगी " लाला ब्रजकिशोरनें कहा

"हम यों नहीं चल्ते हमतो लालाजीके छंग चलेंगे. "

"और जबतक लालाजी घर नहीं जायेंगे हम भी नहीं जायेंगे " यह कहकर दोनों लड़के मदनमोहन के गलेसे लिपट गए और रोनें लगे उससमय मदनमोहन की आंखों से आंसू टपक पड़े और ब्रजकिशोर का जी भर आया.

"अच्छा ! तो तुम लालाजीके पास खेल्ते रहोगे ? मैं जाउं ? " लाला ब्रजकिशोरनें पूछा

"हां हां तुम भलेई जाओ, हम आपनें लालाजी के पाछ (पास) खेलाकरेंगे" लड़केनें कहा.

"और भूक लगी तो ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"यह हमें बर्फी मंगा देंगे " छोटे लड़का अंगुली से मदनमोहन को दिखाकर बता दिया.

"महाकवि कालिदासनें सच कहा है वे मनुष्य धन्य हैं जो अपनें पुत्रों को गोदमें लेकर उनके शरीर की धूलसे अपनी गोद मैली करतेहैं और जब पुत्र के मुख अनायास हंसी से खुलजाते हैं तो उनके उज्वल दांतोंकी शोभा देखकर आनंद अनुभव करते हैं " लाला ब्रजकिशोर बोले और उन लड़कोंके गाल उनके गलेसे अलग करके आप अपनें काम को चले गए.

खासकर अपनें कैद करनें वाले मासकोहन को बड़ी प्रतिष्ठा करके उस्से क
" जिस्तरह तुमनें मुझको स्वतन्त्रता से कैद कियाथा इसी तरह सदा स्वतन्
इन्साफ करते रहना "

" मेरे चित्तपर आपके कहनें का इस्समय बड़ा असर होताहै और मैं
अपराधोंके लिये ईश्वर से क्षमा चाहताहूं मुझको उस अमीरी के बदले इस
अपनी भूलका फल पानें से अधिक संतोष मिल्ताहै मैं अपनें स्वेच्छाचार का
देखचुका अब मेरा इतनाही निवेदन है कि आप प्रेमविवस होकर मेरे लिये
तरह का दुःख न उठायें और अपना नीति मार्ग न छोड़ें " लाला मदनमोहन
तासे कहा.

" अब आपके विचार सुधरगए इसलिये आपके कृतकार्य (कामयाब) ह
मुझको कुछबी संदेह नहीं रहा ईश्वर आपका अवश्य मंगल करेगा " यह क
लाला ब्रजकिशोरनें मदनमोहन को छाती से लगा लिया.

प्रकरण ४१.

सुखकी परमावधि

जबलग मनकेबीच कछु स्वारथको रसहोय ॥
सुद्धसुधा कैसे पिये ? परे बीचमें तोय ॥

सभाविलास

" मैनें सुनाहै कि लाला जगजीवनदास यहां आए हैं ?" लाला मदनमोह
पूछा.

" नहीं इस्समय तो नहीं आए आपको कुछ संदेह हुआ होगा " लाला ब्र
किशोरनें जवाब दिया.

"आपके आनेंसै पहलै मुझको ऐसा आश्चर्य मालूम हुआ कि जानें मेरी
यहां आईथी परंतु यह संभव नहीं कदाचित् स्वप्न होगा " लाला मदनमोहननें आ
र्यसे कहा.

" क्या केवल इतनीही बातका आपको आश्चर्य है ? देखिये चुन्नीलाल औ
शिभुदयाल पहलै बराबर मेरी निंदा करके आपका मन, मेरीतरफसै बिगाडते रह
थे बल्कि आपके लेनदारों को बहकाकर आपके काम बिगाड़नें तकका दोषारो
[illegible]

ते जगजीवनदास आकर आपके घरकोंको लिवा लेगया ! मैंनें जन्मभर का लालच नहीं कियाथा सो तीन दिनमें ऐसे कठिन अवसर पर ठगोंको नेन, हीरेकी अंगूठी और बाली लेली ! एक छोटेसे लेनदारकी डिक्रीमें नी देर यहां रहना पडा क्या इन बातोंसे आपको कुछ आश्चर्य नहीं कोई बात भेद की नहीं मालूम होती ? " लाला ब्रजकिशोरनें पूछा.

के कहनें से इस मामले में इससमय निस्सदेह बहुतसी बातें आश्चर्य नी हैं और किसी, किसी बात का कुछ, कुछ मतलब भी समझमें आताहै ांके जोड़ तोड़ पूरे नहीं मिल्ते और मनभरनें के लायक कोई कारण आता यदि आप कृपा करके इनबातों का भेद समझादेंगे तो मैं आपका डा उपकार मानूंगा " लाला मदनमोहननें कहा.

" उपकार मान्नेंके लायक मुझसे आपकी कौन्सी सेवा बन पडी है ? " लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया और अपनी बगलसै बहुत से काग़ज़ और एक पोटली निकालकर लाला मदनमोहन के आगे रखदी. इन कागजोंमें मदनमोहनके लेनदारों की तरफ से अन्दाज़न पचास हजार रुपे के राजी नामे फारखती, और रसीद वगैरे और मिस्टर ब्राइट का फैसलनामा था जिस्मे पैंतीस हजार पर उस्से फैसला हुआ था र मिस्टर रसल की रकम उस्के देनेंमें लगादी थी, और मिस्टर ब्राइट की बेची हुई ओंमें से जो चीज फेरनी चाहैं बराबर दामोंमे फेर देनें की शर्त ठैर गईथी. पोटलीमे पन्दरह बीस हजार का गहना था।

लाला मदनमोहन यह देखकर आश्चर्य से थोडी देर कुछ न बोलसके फिर बडी नाई से केवल इतना कहा कि " मुझको अबतक जितनी आश्चर्य की बातें मालूम थी उन सबमें यह बढ़करहै ! "

" जितना असर आपके चित्तपर होना चाहिये था परमेश्वर की कृपासे हो चुका ये अब छिपानें को कुछ जरूरत नहीं मालूम होती " लाला ब्रजकिशोर कहने " आप किसी तरह का आश्चर्य न करें. इन सब बातों का भेद यह है कि मैं [illegible] के पिताके उपकारमें बंधरहा हूं जब मैंने आपको [illegible] आपको सुधारनें का उपाय किया परंतु वह सब वृथा गया. जब [illegible] का हाल आपके मुखसे सुना तो मुझको प्रतीत हुआ कि अब [illegible] लोगों का [illegible] रहता आता है और [illegible] के भी [illegible] करनें को

बचाव करनें से कुछ फायदा नहीं मालूम होता मैं चाहताहूं कि स
निमित्त इन दिनोंका सब वृतान्त छपवाकर प्रसिद्ध कर दिया जाय
मोहननें कहा.

" इस्की क्या जरूरतहै ? संसार मैं सीखनें वालों के लिये बहुत
पडे हैं " लाला ब्रजकिशोरनें अपना संबंध विचार कर कहा.

" नहीं सच्ची बातों मैं लजानें का क्या कामहै ? मेरी भूल प्रगट
सै चाहताहूं कि मेरा परिणाम देखकर और लोगों की आंखें खुलैं
जिन, जिन लोगों से मेरी जो, जो बातचीत हुई है वह भी मैं उसमें
बतादूंगा " लाला मदनमोहननें उमंगसै कहा.

" धन्य ! लालासाहब ! धन्य ! अबतो आपके सुधरे हुए विचार
पहुंचगए " लाला ब्रजकिशोरनें गद्‌गद वाणी सैं कहा " औरोंके
बहुत मिल्ते हैं परन्तु जो अपनें दोषों को यथार्थ जान्ता हो और जान
झूंटा पक्ष न करता हो बल्कि यथाशक्ति उन्के छोडनें का उपाय करत
सज्जन है "

" सिलसिलेवन्द सीधा, सीधा मामूली काम तो एक बालक भी क
ऐसे कठिन समय मैं मनुष्य की सच्ची योग्यता मालूम होती है आपनें
थाह समुद्र मैं डूबने सै बचाया है इस्का बदला तो आपको ईश्वर के
मैं सौ जन्मतक लगातार आपकी सेवा करूं तो भी आपका कुछ प्रत्युप
सक्ता परंतु जिस्तरह महाराज रामचन्द्रजीनें भिलनी के बेर खाकर उसै
था इसी तरह आपभी अपनी रुचिके विपरीति मेरा मन रखनें के लिये मेर
अंगीकार करैं " लाला मदनमोहन ब्रजकिशोर को आठ, दस हजार का ग

" क्या आप अपनें मनमैं यह समझते हैंकि मैंनें किसी तरहके
काम किया है ? " लाला ब्रजकिशोर रुखाई से बोले " आगेको अ
करके मेरा जी वृथा न दुखावै. क्या मैं गरीबहूं इसी सें आप ऐसा
मुझको लज्जित करते हैं ? मेरे चित्तका संतोषहीइस्का उचित बदलाहै. ज
तरह के स्वार्थ बिना उचित रीति से परोपकार करनें मैं मिल्ताहै वह
तरह नहीं मिल सक्ता. वह सुख, सुख की परमावधि है इसलिये मैं फिर

ताहूं और आपको देनेही का आग्रह हो तो मैं यह मांगता हूं कि आप अ
चरण ठीक रखनें के लिये इस्समय जैसे मजबूत हैं वैसे ही सदा बनें रहें और
ना मेरी तरफसे मेरी पतिव्रता बहन और उस्के गुलाब जैसे छोटे, छोटे बा
पहनावें जिन्के देखनें से मेरा जी हरा हो " लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"परमेश्वर चाहेंगे तो आगे को आपकी कृपा से कोई बात अनुचित न हो
ला मदनमोहननें जवाब दिया.

"ईश्वर आपको सदा भले कामों की सामर्थ्य दे और सब का मंगल क
ला ब्रजकिशोर सच्चे सुख में निमग्न होकर बोले.

निदान सब लोग बड़े आनन्द से हिल मिलकर मदनमोहन को घर लिवा ले
र चारों तरफ से "बधाई" "बधाई" होनें लगी.

जो सच्चा सुख, सुख मिलनें की मृगतृष्णा से मदनमोहन को अबतक स्व
नहीं मिलाथा वही सच्चा सुख इस्समय ब्रजकिशोर की बुद्धिमानी से परीक्षागुरु
रण प्रामाणिक भाव से रहनें मे मदनमोहन को घर बैठे मिलगया !!!

॥ समाप्तम् ॥